 ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ 

गुर गिआन अंजन सचु नेत्री पाइआ ॥
अंतरि चानणु अगिआनु अंधेरु गवाइआ ॥

मासिक

गुरमति ज्ञान

सावन-भादों, संवत् नानकशाही ५४६
वर्ष ७ अंक १२ अगस्त 2014

संपादक : सिमरजीत सिंघ *एम. ए, एम. एम. सी.*
सहायक संपादक : जगजीत सिंघ *एम. ए, एम. एम. सी.*

चंदा

सालाना (देश)	१० रुपये
आजीवन (देश)	१०० रुपये
सालाना (विदेश)	२५० रुपये
प्रति कापी	३ रुपये

चंदा भेजने का पता

सचिव, धर्म प्रचार कमेटी
(शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी)
श्री अमृतसर-१४३००६
फोन: 0183-2553956-60
एक्सटेंशन नंबर
वितरण विभाग **303** संपादकीय विभाग **304**



फैक्स: 0183-2553919
e-mail : gyan_gurmat@yahoo.com
website : www.sgpc.net

विषय-सूची

गुरबाणी विचार

अलख अपार अगंम अगोचर ना तिसु कालु न करमा ॥
जाति अजाति अजोनी संभउ ना तिसु भाउ न भरमा ॥१॥
साचे सचिआर विटहु कुरबाणु ॥
ना तिसु रूप वरनु नही रेखिआ साचै सबदि नीसाणु ॥रहाउ॥
ना तिसु मात पिता सुत बंधप ना तिसु कामु न नारी ॥
अकुल निरंजन अपर परंपरु सगली जोति तुमारी ॥२॥
घट घट अंतरि ब्रहमु लुकाइआ घटि घटि जोति सबाई ॥
बजर कपाट मुकते गुरमती निरभै ताड़ी लाई ॥३॥
जंत उपाइ कालु सिरि जंता वसगति जुगति सबाई ॥
सतिगुरु सेवि पदारथु पावहि छूटहि सबदु कमाई ॥४॥
सूचै भाडै साचु समावै विरले सूचाचारी ॥
तंतै कउ परम तंतु मिलाइआ नानक सरणि तुमारी ॥५॥ *(पन्ना ५९७)*

श्री गुरु नानक देव जी सोरठि राग में उच्चारण किए गए उपरोक्त शबद में परमात्मा की महिमा का गुणगान करते हुए फरमान कर रहे हैं कि परमात्मा अदृश्य है, बेअंत है, पहुंच से परे है। मनुष्य की ज्ञान-इंद्रियां उसे समझ नहीं सकती, काल उसे छू नहीं सकता तथा कर्मों का उस पर कोई प्रभाव नहीं है। परमात्मा की कोई जाति नहीं है। वो जन्म नहीं लेता। वो स्वयं से प्रकाशमान है। वो मोह से रहित है तथा न ही वो भटकना में आता है। सच्चाई के स्रोत, सदास्थिर परमात्मा पर से मैं सदा कुर्बान हूं। उसका कोई रूप नहीं है, न रंग है तथा न ही चिन्ह है। सच्चे शबद द्वारा ही उसका पता चलता है। परमात्मा का न माता-पिता है। न कोई उसका पुत्र है, न कोई रिश्तेदार है। वो काम से रहित है तथा उसकी पत्नी भी नहीं है। वो किसी कुल से संबंधित नहीं है। वो माया के प्रभाव से परे है। उसकी महिमा अपरंपार है। सब जगह परमात्मा की ज्योति का ही प्रकाश है। हर शरीर में परमात्मा का निवास है और हर शरीर में उसी की ज्योति है। सच्चे गुरु की कृपा से, मार्गदर्शन से जिस मनुष्य के मन से माया-मोह के पर्दे हट जाते हैं उसी को परमात्मा के घट-घट में निवास करने की बात समझ आती है कि वो निडर स्वरूप वाला है।

श्री गुरु नानक देव जी का आगे फरमान है कि परमात्मा ने जीवों को पैदा करके उनके सिर पर मृत्यु टिकाई हुई है। सब जीवों की जीवन-डोर को परमात्मा ने अपने वश में कर रखा है। जो मनुष्य गुरु-दर्शाए मार्ग पर चलते हुए भक्ति करते हैं, वे गुरु-शबद के माध्यम से जीवन सफल कर जाते हैं। अंतिम पंक्तियों में फरमान है कि शुद्ध आचरण वाले शरीर में ही सत्य (परमात्मा) का निवास पाया जाता है अर्थात् शुद्ध हृदय वालों को ही अपने अंदर परमात्मा होने की समझ आती है और ऐसे जन विरले होते हैं। जीवात्मा का परमात्मा से मिलन सच्चे गुरु के माध्यम से हृदय शुद्ध होकर होता है। गुरु जी कहते हैं कि मैं परमात्मा की ही शरण मांगता हूं। कहने से तात्पर्य कि मनुष्य को असीम परमात्मा की शरण में सदा रहना चाहिए। 



पंथक एकता को एक और चुनौती!

गुरु साहिबान ने अपने समकालीन समाज के भीतर रहते सब प्रकार के लोगों के जीवन को गहनता से अध्ययन करते हुए धर्म तथा धार्मिक रस्मों-रिवाज़ों को देखते हुए पुरातन ढांचे को बदलकर समाज में क्रांति लाई। गुरु साहिब द्वारा निर्धारित की नयीं दिशायों ने जीवन मनोरथ को बहुत सार्थक एवं नवनीत बना दिया। गुरु साहिबान ने समाज को सार्थक दिशा देने के लिए एवं धर्म प्रचार के लिए केंद्र स्थापित किए, जिनको गुरुद्वारा साहिब के नाम से जाना जाता है। गुरुद्वारा साहिब आदि से ही सिक्खी का केंद्र एवं पंथक शक्ति का धुरा रहे हैं। इनसे मनुष्य को नाम-सिमरन व मूल गुरमति-सिद्धांतों के अनुसार जीवन जीने की तथा सांझे कौमी मंतव्यों तथा कार्यों की पूर्ति की प्रेरणा मिलती आ रही है। इतिहास इस बात का साक्षी है कि गुरुद्वारा साहिबान जहां समाज में टूट चुके तथा निराश हो चुके लोगों को आध्यात्मिक आश्रय प्रदान करते हैं, वहीं सूझवान लोगों को सदीवी जीवन-मूल्यों के लिए कुछ करने का हौसला भी बख़्शिश करते हैं। 'सरबत्त के भले' तथा 'खालसा जी के बोल-बाले' कौम की हर जद्दोजहद के प्रेरणास्रोत के आधारभूत सूत्र भी हैं। इन गुरुद्वारा साहिबान का सही रख-रखाव करने के लिए सिक्ख कौम द्वारा अनेकों कुबार्नियां कर शिरोमणि गु प्र कमेटी, श्री अमृतसर अस्तित्व में लाई गई, जो गुरुद्वारा साहिबान के प्रबंध को सुचारू व पारदर्शी ढंग से निभाती आ रही है।

इस कमेटी का चुनाव भी सिक्खों द्वारा बहुत विलक्षण व पारदर्शी ढंग से किया जाता है, सिक्खों की एकजुटता हमेशा ही पंथ विरोधियों की आंखों में खटकती आई है। राजसी शक्तियां समाज के आम लोगों पर अपने व्यक्तिगत हितों की खातिर अपनी मनमर्ज़ी ठूंसती आई हैं। इन समाज विरोधी शक्तियों के विरुद्ध आम लोगों को जागृत करने के लिए सिक्ख पंथ की अहम भूमिका रही है। लोकाई को जागृत करने के केंद्र हमेशा ही गुरुद्वारा साहिबान बनते हैं। श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी की पावन बाणी से प्रेरणा लेकर संगत ज़ुल्म के विरुद्ध मर-मिटने का प्रण लेकर डटकर खड़ी हो जाती है तथा शहादतों को प्राप्त करने को अपना सौभाग्य समझती है। आम लोगों में जागृति पैदा करने वाले यह केंद्र तथा सिक्ख कौम हमेशा ही अपनी मनमर्ज़ी करने वाले समाज विरोधियों की आंखों में खटकते आए हैं। इस लिए सिक्ख कौम तथा गुरुद्वारा साहिबान को आपस में बांटने जैसी घटिया हरकतें शुरू से होती ही आई हैं। गुरु साहिबान के समय गुरु-अंश में से अथवा गुरु-घर के निकटवर्तियों को लालच देकर सिक्ख कौम के विरुद्ध बरता गया जिसके परिणामस्वरूप श्री गुरु अरजन देव जी, श्री गुरु तेग बहादर साहिब जी तथा अन्य भी अनेकों सिंघों को शहादतें देनी पड़ीं। बाबा बंदा सिंघ जी बहादर के पास सिक्खों के बंदई खालसा व तत्त खालसा के रूप में बांटने की कोशिश की गई जो भाई मनी सिंघ जी की दूरंदेशी सोच सदका कामयाब न हो सकी। मिसल काल में सिक्खों को बांटकर अपना मंतव्य सुझाने के लिए एक मिसल के सरदार को दूसरी मिसल के सरदार के विरुद्ध भड़काकर लड़ा दिया जाता था। इससे सिक्ख शक्ति को क्षति पहुंचती थी। महाराजा रणजीत सिंघ ने सिक्ख संगत को एकमुठ करने के लिए सारी मिसलों को खत्म करके एक सिक्ख राज्य कायम कर दिया। यह सिक्ख राज्य भी ज्यादा देर तक स्थिर न रह सका क्योंकि इसमें भी पंथ विरोधियों ने घुसपैठ करके सिक्खों को आपस में लड़ाकर अपना मंतव्य सिद्ध करना शुरू कर दिया। जिसके परिणामस्वरूप पंजाब अंग्रेजों की गुलामी के अधीन चला गया था। यहां ज़िक्रयोग्य है कि अंग्रेजों ने चाहे १८४९ ई में पंजाब पर धोखे से कब्ज़ा किया था परंतु इस कब्ज़े से पूर्व सिक्खों ने अंग्रेजों का रहना दूबर कर दिया। जब अंग्रेजों ने १७६५ ई में बंगाल पर कब्ज़ा किया था, तब से ही वो सिक्खों की बहादुरी के कारनामे सुनते आ रहे थे। अहमद शाह अब्दाली ने १७६१ ई में भारत पर आक्रमण के समय उसकी मुठभेड़ पहले मराठों के साथ हुई तो पानीपत के मैदान में मराठों की मुंह तोड़वीं हार हुई। इस उपरांत सिक्खों ने अपनी जानें देकर अफ़गानों से अपने देश वासियों की हिफ़ाजत की। अंग्रेज फोर्ट विलियम इस समय सिक्खों की बहादुरी का बहुत ही गहनता से मुलांकन कर रहा था। सिक्खों की शक्ति उनको भारत में पांव पसारने में रुकावट बनती नज़र आ रही थी। अंग्रेजों को इस बात का ध्यान हो गया था कि अगर उत्तर-पश्चिम इलाके में उनको कोई चुनौती देगा तो वो सिक्ख हैं!अंग्रेजों ने अपने सभी सूत्रों से ज्ञात कर यह अंदाज़ा लगाया कि सिक्ख गुलाम रहने वाली कौम नहीं है तथा इनकी प्रेरणास्रोत तथा जागृति का केंद्र गुरुद्वारा साहिबान हैं। अंग्रेजों ने अपना मंतव्य हल करने के लिए तथा सिक्खों को कमज़ोर करने के लिए

गुरुद्वारा साहिब में घुसपैठ करने की योजना बनायी। इस मंतव्य के लिए उन्होंने गुरुद्वारा साहिबान के प्रबंधक महंतों को लालच देकर अपनी तरफ कर लिया तथा गुरुद्वारा साहिबान में सिक्ख विरोधी गतिविधियां करनी शुरू कर दीं। महंतों को सिक्खों के विरुद्ध भड़काना शुरू कर दिया। १८४७ ई में अंग्रेज सरकार ने सिक्ख सरकार द्वारा श्री दरबार साहिब, श्री अमृतसर की कड़ाह प्रशादि की नियत की रोज़ाना ११ रुपए की राशि घटाकर ३ रुपए कर दी। जलंधर-दुआब के कमिश्नर जहान लोरेंस ने श्री दरबार साहिब के नाम जो जागीरें थीं उनका सर्वेक्षण करवाया तथा श्री अमृतसर वाली जागीरों को छोड़कर श्री दरबार साहिब के नाम जो जागीरें थीं उनको अपने पक्षीय महंत मक्खन सिंघ को अंग्रेज प्रस्त बनाने के लिए उसके व्यक्तिगत नाम पर कर दी गईं। इसी तरह और भी बहुत सारे महंतों को अंग्रेजों ने अपने पक्ष में कर लिया जिनको उन्होंने अपने मंतव्य के लिए बरतना शुरू कर दिया। नामधारी लहर के अगुआ बाबा राम सिंघ जी ने अंग्रेजों के विरुद्ध सिक्खों का एक बड़ा जत्था कायम कर लिया था। सन् १८७२ ई में अंग्रेजों ने अपने साथ मिलाए महंतों को बाबा राम सिंघ जी विरुद्ध बाखूबी बरता। १८४९ ई में ३० मार्च जो जब अंग्रेजों ने पूरी तरह से सिक्ख राज्य पर कब्ज़ा कर लिया तो उन्होंने अपने पक्षीय इन महंतों से श्री दरबार साहिब में दीपमाला करवाई। सन् १९१४-१५ ई में अमेरिकन तथा कनाडियन सिक्खों ने अंग्रेजों को भारत में से निकालने के लिए जद्दोजहद शुरू की तो अंग्रेजों ने अपने पक्ष में किए सरबराह अरूड़ सिंघ को इनके विरुद्ध खुलकर बरता। सिक्खों ने भारत को आज़ाद करवाने से पहले अपने गुरुद्वारा साहिबान को अंग्रेज प्रस्तों की चुंगल से आज़ाद करवाने की ठानी। अंग्रेज भी इस बात से भलीभांति वाकिफ़ थे कि अगर गुरुद्वारा साहिबान से हमारा कब्ज़ा हट गया तो भारत को आज़ाद होने में देर नहीं लगेगी। सिक्खों में अपने गुरुद्वारा साहिबान को आज़ाद करवाने के लिए लहर उठ खड़ी हुई। सिक्ख पंथ द्वारा गुरुद्वारा साहिबान का प्रबंध पंथक हाथों में लेने के लिए संघर्ष शुरू हो गया। मोर्चे लगाए गए, जेलें भरी गईं, अंग्रेज सरकार की पुलिस ने भी सिक्खों पर स्तिम ढाने की कोई कोर-कसर बाकी नहीं छोड़ी। सिक्खों ने लगातार लंबा समय संघर्ष करके हज़ारों की संख्या में कुर्बानियां करके, जेलों में सख़्त यातनायें झेलकर, अपनी जायदादें कुर्क करवाकर गुरुद्वारा साहिबान के रख-रखाव के लिए १९२० ई में पंथक कमेटी 'शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी' अस्तित्व में लाई। सिक्खों की इन कुर्बानियों के बदले ही सन् १९२५ ई में गुरुद्वारा एक्ट-१९२५ अस्तित्व में आया।

गुरुद्वारा एक्ट-१९२५ के अनुसार अस्तित्व में आई शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी एक ऐसी संस्था है जो अबंटित पंजाब, जिसमें मौजूदा पंजाब, हरियाणा, हिमाचल प्रदेश तथा पाकिस्तान पंजाब शामिल थे, के सभी ऐतिहासिक गुरुद्वारा साहिबान का प्रबंध देखती रही है। शिरोमणि गु. प्र. कमेटी द्वारा सिक्खों को एकजुट करने के लिए 'सिक्ख रहित मर्यादा' तैयार करने की योजना बनायी गई ताकि सिक्ख एक झंडे तले इकट्ठे हो सकें। इम मंतव्य के लिए रहु-रीत सब कमेटी बनाकर लंबा समय सोच-विचार तथा खोज करने के बाद सन् १९३२ ई में 'सिक्ख रहित मर्यादा' तैयार की गई। सिक्ख रहित मर्यादा के बनने से ही अंग्रेज सरकार को फ़िक्र होने लगी कि अगर सिक्ख इकट्ठे हो गए तो हमारा राज्य ज्यादा देर तक नहीं चलेगा परंतु सिक्ख जागृत हो चुके थे इस लिए इनके विरोध का उस समय कोई खास असर नहीं हो सका। इसी समय से शिरोमणि गु. प्र. कमेटी विश्वभर में गुरुद्वारा साहिबान की मर्यादा पर विश्वभर के सिक्खों के धार्मिक हितों की रक्षा हेतु प्रयत्न करती आ रही है। शिरोमणि गु. प्र. कमेटी पंजाब में चाहे चुनाव प्रक्रिया से चुनी जाती है परंतु इसमें पंजाब से बाहर वाले सिक्खों को भी उचित प्रतिनिधिता देकर साथ रखा जाता है। आज़ादी से पूर्व लाहौर में सिक्ख नैशनल कॉलेज तथा बंबई में गुरु नानक खालसा कॉलेज खोला गया था। अंग्रेजों का डर सही साबित होने के थोड़े समय में ही १९४७ ई में उनको भारत को आज़ाद करके जाना पड़ा। अंग्रेज जाते-जाते सिक्ख-शक्ति को बांट गए। सन् १९४७ ई में उन्होंने भारत के दो टुकड़े कर पंजाब वाली तरफ से पाकिस्तान अलग स्वतंत्र देश बना दिया। पंजाब के दो टुकड़े हो जाने के कारण सिक्ख-शक्ति के प्रेरणास्रोत बहुत सारे गुरुद्वारा साहिबान पाकिस्तान में रह गए जिनके दर्शन करने जाने के लिए सिक्खों को वीज़ा लेना पड़ता है। देश की आज़ादी के बाद भी सिक्खों को बांटने की तथा दबाकर रखने की घटिया साजिशें चलती रहीं। देश की आज़ादी में सबसे ज्यादा योगदान डालने वाली सिक्ख कौम के बारे में सन् १९४८ ई में सिक्खों के ज़राइम पेशा होने के बारे में सर्क्यूलर जारी कर दिया गया। आज़ादी से पूर्व पंडित जवाहर लाल नेहरू द्वारा यह कहना कि

हम चाहेंगे कि आज़ाद भारत की उत्तर दिशा में ऐसा क्षेत्र हो जहां सिक्ख आज़ादी का आनंद ले सकें और आज़ादी के बाद यह कहना कि "अब हालात बदल गए हैं," सिक्खों के साथ बहुत बड़ा विश्वासघात था। सिक्खों को दबाकर रखने के लिए सिक्खों को भड़काने वाली तथा बांटने वाली कार्यविधियां होती आ रही हैं। श्री दरबार साहिब, श्री अमृतसर तथा श्री अकाल तख़्त साहिब पर देश की ही फौज द्वारा इस तरह चढ़ाई करना जिस तरह सिक्ख इस देश के नागरिक न हों, बड़ा सबूत है। कई दहाकों तक सिक्ख नौजवानों का सरेआम शिकार करना ये सब सिक्ख शक्ति को कम करने के तरीके ही तो थे। देश की प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी के कत्ल के बाद दिल्ली में सिक्खों को चुन-चुनकर गलों में जलते टायर डालकर जलाना और कहना "जब बड़ा वृक्ष गिरता है तो धरती हिलती है" सिक्ख शक्ति को कम करने के ही तो नतीजे थे। प्रधानमंत्री राजीव गांधी का संत लौंगोवाल से किए ११ नुकाती लिखित समझौते में ऑल इंडिया सिक्ख गुरुद्वारा एक्ट बनाने के लिए वचनबद्ध होने पर भी आज तक एक्ट को देश भर के गुरुद्वारा साहिबान पर लागू नहीं किया गया। आज भी सिक्खों में अन्य फूट डालने की कोशिशें की जा रही हैं। यह जानते हुए भी कि गुरुधामों का संबंध किसी विशेष क्षेत्र से नहीं होता बल्कि गुरुधाम समूचे पंथ के सांझे होते हैं। पंथ-विरोधी पिट्ठुयों द्वारा हरियाणा की सिक्ख संगत को गुमराह किया जा रहा है। हरियाणा में गुरुधाम केवल हरियाणा के सिक्खों के ही नहीं हो सकते बल्कि समूचे गुरु-पंथ की अमानत हैं। १२ अप्रैल, १९५९ ई को प्रधानमंत्री जवाहर लाल नेहरू तथा मास्टर तारा सिंघ समझौता अस्तित्व में आया था, जिसको नेहरू-मास्टर तारा सिंघ पैक्ट के नाम से जाना जाता है। इस लिए आज हरियाणा प्रांत में गुरुधामों के लिए अलग कमेटी बनाना कानूनी तौर पर पुख़्ता नहीं है क्योंकि उस समय प्रधानमंत्री व मास्टर तारा सिंघ के मध्य हुए समझौते की यह सरेआम उल्लंघन है जिसके अनुसार शिरोमणि गु. प्र. कमेटी के जनरल हाऊस के दो-तिहाई सदस्यों की सहमति के बिना मौजूदा एक्ट में सोध नहीं हो सकती। इसके अतिरिक्त अंतर्राज्य एक्ट होने के कारण इसमें कोई भी सोध केवल पार्लियामेंट ही करती आई है। शिरोमणि कमेटी धर्म, समाज, विद्या, देश, कौम की समूची सेवाओं में भरपूर योगदान डाल रही है। शिरोमणि कमेटी ने सिक्ख-अस्तित्व तथा सिक्ख-पहचान को विश्व के नक्शे पर दर्शाने के बहुमूल्य कार्य किए हैं। संसार के प्रत्येक कोने में बसते सिक्ख जहां पंजाब को अपना पैतृक गांव समझाते हैं, वहीं शिरोमणि कमेटी को अपना पैतृक घर के रूप में भी समझते हैं तथा शिरोमणि कमेटी भी प्रत्येक मुश्किल के समय इनके लिए सुरक्षा कवच बनकर खड़ी हो जाती है। हरियाणा की राज्य सरकार द्वारा सिक्खों में फिर फूट डालने की कोशिशें काफी समय से जारी हैं। हरियाणा की राज्य सरकार द्वारा सिक्खों को गुमराह करके वहां के गुरुधामों के प्रबंध के लिए अलग गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी बनाकर सिक्खों को विभाजित करने की कोशिशें की जा रही हैं। इस संबंध में सिक्खों को जागृत करने के लिए शिरोमणि गु. प्र. कमेटी लंबे समय से कार्यशील है। ३१ मई, २००५ ई में शिरोमणि गु. प्र. कमेटी द्वारा विशेश इजलास बुलाकर हरियाणा सरकार द्वारा अलग कमेटी के फैसले को रद्द करते हुए चेतावनी दी गई थी कि अगर सिक्ख जगत को सर्वोच्च संस्था शिरोमणि गु. प्र. कमेटी के मौजूदा प्रारूप तथा सर्वोच्चता के साथ कोई छेड़छाड़ की गई तो सिक्ख संगत द्वारा इसका कड़ा जवाब दिया जाएगा। सभी कानूनों को छीके टांगकर हरियाणा राज्य के मुख्यमंत्री श्री भुपिंदर सिंघ हुड्डा ने सिक्ख कौम में फूट डालने की फिर घटिया चाल चली है। अब ११ जुलाई, २०१४ ई को हरियाणा विधान सभा में अलग हरियाणा गु. प्र. कमेटी का बिल पास कर दिया है। ४५ पन्नों का यह बिल विरोधी दल के सख़्त विरोध करने के बावजूद भी पास कर दिया गया। इससे पहले श्री अकाल तख़्त साहिब के जत्थेदार साहिब ने हरियाणा के उन सिक्खों को जो अलग कमेटी बनाना चाहते थे, श्री अकाल तख़्त साहिब पर आकर बात करने को कहा था परंतु वो जत्थेदार के कहने पर नहीं आए। हरियाणा सरकार के फैसले के विरुद्ध सिक्खों में रोष की लहर फैल गई। सिक्ख जत्थेबंदियों, सभा-सोसायिटियों, टकसालों, संत-समाज, निहंग जत्थेबंदियों ने श्री अकाल तख़्त साहिब पर गुरमते किए। सिंघ साहिबान ने इनके साथ दीर्घ विचार करने के पश्चात अलग हरियाणा गु. प्र. कमेटी बनाने में अहम भूमिका निभाकर सिक्खों में फूट डालने के दोष में स. जगदीश सिंघ झींडा, स. दीदार सिंघ नलवी तथा हरमहिंदर सिंघ चड्डा को पंथ से बहिष्कृत कर दिया है। सिक्खों को इस बात से सुचेत रहना चाहिए कि पहले की तरह ही सिक्ख शक्ति को कमज़ोर करके सिक्खों के नुकसान करने की व फूट डालने की साजिशें लागू न होने दें। 

मानव के सर्वश्रेष्ठ प्रणेता : श्री गुरु ग्रंथ साहिब

*-डॉ. जगजीत कौर**

श्री गुरु ग्रंथ साहिब सिक्ख मत का पूज्य ग्रंथ है। वर्तमान समय में यह पावन ग्रंथ ही सिक्ख के लिए जाहिरा जुहूर प्रत्यक्ष गुरु है, क्योंकि इसमें सिक्ख परंपरा से जुड़े दस गुरु साहिबान की प्रत्यक्ष ज्योति प्रतिष्ठित है। 'धुर की बाणी' में निहित शबद-उपदेश केवल सिक्ख जगत के लिए ही मार्ग दर्शक नहीं हैं, ये समूची मानवता के जीवन-मूल्यों के लिए कल्याणकारी हैं। इस सत्य बाणी में जिन मानव-मूल्यों की अभिव्यंजना हुई हैं वे सर्वकालिक हैं; सार्वभौमिक हैं; युगों युगों तक समूची मानवता का मार्ग प्रशस्त करने वाले हैं। यह सांझा उपदेश है *"खत्री ब्राहमण सूद वैस उपदेसु चहु वरना कउ साझा"* है। यह कुल मानवता को भ्रातृ-भाव, प्रेम, सहानुभूति, करुणा, मैत्री, सहृदयता, सेवा, परोपकार, त्याग, बलिदान जैसे दिव्य एवं महान गुणों की प्रेरणा शक्ति प्रदान कर कुल मानव, विश्व मानव को एक ही प्रेम सूत्र में बांधने का संदेश देता है। श्री गुरु ग्रंथ साहिब एक विशाल सागर है जिसमें प्रभु प्रेम, भक्ति, ज्ञान, योग, और कर्म की अनन्त मणियां हीरे, जवाहरात भरे पड़े हैं। जो जिज्ञासु जितनी अधिक गहरी डुबकी लगाता है उसके हाथ उतने ही अधिक अनमोल रत्न लगते हैं। जो उसके आध्यात्मिक, सामाजिक व व्यावहारिक जीवन को उत्थान के सोपानों पर पहुंचा उसे आत्मिक सुख, सुकून, शांति और नित्य आनंद से भर देते हैं। इसी लिए तो महत बाणी के संकलन कर्ता पंचम गुरुदेव गुरु अरजन देव पातशाह जी ने बाणी का विशद भंडार प्राप्त कर हर्षो उन्माद से आहलादित हो कहा है :

हम धनवंत भागठ सच नाइ ॥
हरि गुण गावह सहजि सुभाइ ॥१॥रहाउ॥
पीऊ दादे का खोलि डिठा खजाना ॥
ता मेरै मनि भइआ निधाना ॥१॥
रतन लाल जा का कछू न मोलु ॥
भरे भंडार अखूट अतोल ॥२॥
खावहि खरचहि रलि मिलि भाई ॥
तोटि न आवै वधदो जाई ॥ (पन्ना १८५)

अमूल्य मणियों का थाल परोसकर समग्र मानवता को समर्पित करते हुए संपादन कर्ता ने उल्लास प्रगट करते हुए कहा :

थाल विचि तिंनि वसतू पईओ सतु संतोखु वीचारो ॥
अंम्रित नामु ठाकुर का पइओ जिस का सभसु अधारो ॥
जे को खावै जे को भुंचै तिस का होइ उधारो ॥
एह वसतु तजी नह जाई नित नित रखु उरि धारो ॥
तम संसारु चरन लगि तरीऐ सभु नानक ब्रहम पसारो ॥ (पन्ना १४२९)

मानव जीवन को आचरण की उच्चतम शिखर तक पहुंचाने वाले महत तत्व सत्य की खोज, उसे जानने-बूझने की जिज्ञासा, सत्यपथ का राही स्वभावत: संतोष सहज टिकाव मन:स्थिति की स्थिरता का पात्र होगा। उसकी विवेक

**१८०१-सी, मिशन कम्पाऊण्ड, निकट सेंट मेरीज़ अकादमी, सहारनपुर (यू पी)-२४७००१, मो. ९४१२४-८०२६*

शक्ति, ज्ञान बुद्धि की सूझबूझ कुशाग्र होगी, अनगर्ल भटकने की संभावना कम होती जाएगी और तब वह स्थिर चित्त नाम-रस, नाम-अमृत का भुंचन करेगा। स्वभावत: मानव ऐसी अवस्था को प्राप्त करेगा जहां चतुर्दिक उसे ब्रह्म की अपार शक्ति, का विस्तार ही विस्तार प्रतीत होगा। तब ब्रह्म-सत्य की अपार शक्ति अपरंपार प्रसार के सामने वह स्वयं को बौना महसूस करेगा और गुरु चरणों पर अहंता अहं भाव हउमै को त्याग नतमस्तक होगा। ऐसे अहं भाव से गलित, केवल सेवा, परोपकार, मानव सेवा को समर्पित प्राणी ही आदर्श मानव हो सकता है। कितनी सुंदर योजना कितना महत जीवन आयोजन गुरु साहिबान ने मानव उत्थान के लिए निर्दिष्ट किया है। इसीलिए तो क्या भारतीय और क्या विदेशी विचारक साहित्यकार मनीषी दार्शनिक, शोधकर्ता, साधक एकस्वर से मुक्त कंठ से इस अमृतमय बाणी की प्रशंसा करते हैं।

इस पावन ग्रंथ के माध्यम से मधुरा भक्ति, प्रेमभक्ति और सहजभक्ति के रस में डूबा व्यक्ति भावनात्मक स्तर पर उस बिंदु पर आ खड़ा होता है जहां जाति, कुल, वर्ण, वर्ग, संप्रदाय देशकाल, नस्ल, रंग भेद, लिंग भेद की तमाम सीमाएं स्वत: टूट कर बिखर जाती हैं। उसकी दृष्टि ब्रह्ममय हो जाती है। अखिल जीवों में वह एक ही ज्योति वाहिगुरु जी के दर्शन करता है और मानव सेवा को तत्पर होता है।

मध्यकाल का समाज जिस जाति, धर्म मतमतांतर ऊंच-नीच के भेदभाव रुढ़ियों से ग्रस्त था उसका खंडन कर श्री गुरु ग्रंथ साहिब की बाणी *"एकु पिता एकस के हम बारिक"* भाव का प्रचार कर आपसी भेदभाव को मिटाती है। कोई ऊंचा नहीं कोई नीचा नहीं *'अलह राम के पिंडु परान'* की प्रतिष्ठा करती है। श्री गुरु ग्रंथ साहिब की बाणी में सारे भारत के दर्शन होते हैं। इसमें विभिन्न लोक संस्कृति के तीज त्यौहार, उत्सव, रहन-सहन, खान-पान, पोशाक, रीति-रिवाज़ की चर्चा की गई है। बाणी के माध्यम से विभिन्न प्राकृतिक दृश्य, नदी नहरें, पर्वत-पहाड़, वन-उपवन, मरुस्थल, हरियाली युक्त हरित कुंज, वनस्पति फल-फूल उपज, चार खानियों के जीव-जंतु, खनिज द्रब्य, पशु-पक्षी सब का वर्णन है। बाणी में सम्पूर्ण ब्रह्मांड सिमटा हुआ है *"पताला पाताल लख आगासा आगास"* लाखो पाताल लोक हैं *"केते इंद चंद सूर केते केते मंडल देस"* लाखो चंद्र लोक, सौर मंडल, दीप लोक, सूर्य लोक हैं। मानव से जुड़े संपूर्ण जीवन खंडों का ज्ञान प्रदान करती यह पावन बाणी मानव जीवन की प्रेरणा है। ऐसी पावन बाणी को ही दसवें गुरु साहिब श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी महाराज ने *'गुरु मानियो ग्रंथ'* का आदेश देकर समूची आध्यात्मिक शक्ति के सामने शीश झुकाने का हुक्म दिया है। जिसमें गुरु साहिबान के अलावा मध्यकालीन भक्तों, संतों, महापुरुषों, पीर-फकीरों, भट्टों आदि महापुरुषों की बाणी संकलित है। मानव द्वारा खड़े किए गए जाति वर्ग को गुरु साहिबान ने नज़र अंदाज़ किया है; सम्मान आदर है तो केवल ज्योति स्वरूप अकाल पुरख का जो प्रत्येक जीव में जोत रूप में विद्यमान है। मानव की मानव रूप में प्रतिष्ठा हैं जाति वर्ग कर्म से नहीं। विश्व धर्मों के इतिहास में ऐसा कोई अन्य धर्म ग्रंथ नहीं है जो मानव को मानव रूप में सम्मानित करता है।

यही नहीं इस पावन ग्रंथ में तो स्त्री-पुरुष की समानता की बात भी की गई है। मध्ययुग में स्त्री की समाज में जो हीन दशा थी वह इतिहास का चर्चित विषय है परंतु धन्य है गुरुदेव

साहिबान जिन्होंने विधाता की इस सुंदर सृष्टि की मूल रूप से प्रतिष्ठा की। १५वीं सदी में सबसे पहले श्री गुरु नानक देव जी ने ही हीन मानी जाने वाली, तथाकथित शूद्र तुल्य नीच कही जाने वाली, उपेक्षित, प्रताड़ित, लांछित, दुत्कारी जाती स्त्री के ऊपर लादे गए गंदे बदबूदार लबादे को उतार फेंका और समाज को झिंझोड़ा *"सो किउ मंदा आखीऐ जितु जंमहि राजान ॥"* चक्रवर्ती सम्राटों, अवतारों, देव पुरुषों को जन्म देने वाली स्त्री हीन कैसे हो सकती है? वह तो अकाल पुरख वाहिगुरु जी की सुंदर सृष्टि-रचना का आधा भाग है, पुरुष की सहभागिनी है। नारी के बिना पुरुष अधूरा है। वह पुरुष की पूरक, प्रेरक शक्ति है। स्त्रियोचित्त गुणों-- दया, ममता, त्याग बलिदान जैसे महत गुणों को अपनाकर ही पुरुष पूरा है। नारी की निंदा मत करो बल्कि भाग्यवती, आचारवती नारी की प्रशंसा कर प्रभु-दरबार में उज्जवल मुख लेकर जाओ :

जितु मुखि सदा सालाहीऐ भागा रती चारि ॥
नानक ते मुख ऊजले तितु सचै दरबारि ॥
(पन्ना ४७३)

श्री गुरु ग्रंथ साहिब की बाणी मनुष्य को व्यवहारिक दिशाएं देती है; एक संतुलित आदर्श सामाजिक प्राणी बनाती है। व्यर्थ के थोथे कर्मकांडों, पाखंडों, वहमों, अंधविश्वासों से ऊपर उठाकर उसे एक स्वस्थमना बौद्धिक चिंतक बनाती है। इस बाणी में एक मात्र सर्वशक्तिमान समर्थ विश्व के स्वामी परमात्मा से जुड़ने की बात की गई है; प्रभु की स्तुति, यश-गायन, कीर्ति-गायन की बात की गई है। देवी-देवताओं और प्रकृति के अन्य तत्त्वों के प्रति अंधविश्वास एवं उपासना का ढोंग इसमें नहीं है। तर्कहीन, अवैज्ञानिक, पौराणिक, मिथहासक तत्त्वों की चमत्कारी कथा-कहानियां इसमें नहीं हैं। इस दृष्टि से इस महान ग्रंथ को आधुनिक युग का सर्वश्रेष्ठ ग्रंथ कहा जाए तो अतिकथनी नहीं होगी।

इस अनुपम बाणी की विलक्षणता इस दृष्टि से भी है कि शुद्ध रूप से आध्यात्मिक जगत की आत्म-चिंतन की उच्चतम इकाइयों को स्पर्श करती हुई यह बाणी मानव को ऐसा व्यवहारिक मार्ग सुझाती है जिसमें उसे समाज को साथ लेकर चलने का स्वस्थ सामाजिक चिंतन दिया गया है। उसे समाज में रहना है, किरत करनी है, सुच्ची किरत करनी है। वह किरती सिक्ख है, गृहस्थी है, परिवार में रहता है। परिवार के सभी मीठे सम्बंधों का निर्वाह करते हुए उसे देश, कौम, पंथ की सेवा करनी है। इसीलिए वह *"एक जोति दुइ मूरती धन पिरु कहीऐ सोइ"* एक नारी-व्रत धर्म को निभाता है। प्रवृति मार्ग में रहते हुए सहज आनंद की ओर बढ़ना है, सेवा-सिमरन में जुड़ना है। सेवा ने ही गुरु-काल से लंगर-प्रथा को जन्म दिया। गुरु उपदेश अनुसार भेदभाव से दूर लंगर-पंगत की सेवा करते हुए वह *"पहिला मरणु कबूलि"* करना है। प्रभु-प्राप्ति जो जीवन का चरम मनोरथ है वहां मानव-सेवा द्वारा पहुंचना है :

विचि दुनीआ सेव कमाईऐ ॥
ता दरगह बैसणु पाईऐ ॥ (पन्ना २६)

सेवा ही परमार्थ भावना को जन्म देती है। गुरु साहिबान ने स्वयं अपने जीवन में धर्म, देश, कौम, पंथक-निर्माण और मानव स्वतंत्रता मानव अधिकारों की सुरक्षा के लिए संघर्ष किए, बलिदान दिए। पंचम गुरुदेव जी शहीदों के सिरताज बने। सिक्खों की कुर्बानियों की गौरवमयी गाथा इन्हीं से प्रारंभ होती है। पुन: श्री गुरु तेग बहादर साहिब का शीशदान, श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के चारों लख़्ते-जिगर एवं माता गुजरी जी की शहादत, गुरु साहिब का अपना जीवन-दान और

उसके बाद एक लंबी दास्तान शहादतों की, श्री गुरु ग्रंथ साहिब के मानववादी दृष्टिकोण पर ही आधारित है; जो कहती है *"मरणु मुणसा सूरिआ हकु है जो होइ मरनि परवाणो ॥"* और पंथ हित कुर्बान होकर शहीद सिक्ख आनंद में झूमता कहता है *"अब मोहि जीवन पदवी पाई ॥"* जीने का तो आनंद ही मरने में है। प्रभु प्रेम के पथ का पथिक मरने से नहीं डरता और शर्त है :

जउ तउ प्रेम खेलण का चाउ ॥
सिरु धरि तली गली मेरी आउ ॥ (पन्ना १४१२)

इन्हीं महत गुणों के कारण श्री गुरु ग्रंथ साहिब की बाणी उच्च मानव मूल्यों से संयुक्त, मानवीय समाज की प्रणेता बाणी के रूप में विश्व विचारकों द्वारा सम्मानित की जाती रही है। यह बाणी समूह मानवता का कल्याण करने वाली सर्वदेशीय, सर्वजनीय बाणी है। इसकी प्रासंगिकता युगों-युगों तक शाश्वत रहने वाली है। आज के युग में भी यह बाणी जीवन के लिए उतनी ही लाभप्रद है जितनी यह अपने रचनाकाल और संपादन काल में रही है। आज जबकि मानव-समाज नैतिक मूल्यों के पतन के कगार पर खड़ा है; आज जब भुखमरी, गरीबी, अभाव और इससे उत्पन्न भ्रष्टाचार, रिश्वतखोरी, व्यभिचार, चरित्रहीनता, बलात्कार, नशाखोरी, नशीली दवाइयों का सेवन, घरेलू कलह-कलेश, झगड़े, धन लिप्सा, चोरी डकैती, जूआखोरी देश-विदेश के परस्पर कटुसंबंध, आतंकवाद, परमाणु शक्ति का भय, पदार्थवाद जो विश्व समाज की विश्वस्तरीय समस्या बना खड़ा है तो ऐसे में श्री गुरु ग्रंथ साहिब के पावन उपदेश, विश्वशांति की शिक्षा, परस्पर प्रेम-भातृभाव सांझीवालता के मधुर बोलों के प्रचार-प्रसार ही इन समस्याओं से मुक्ति दिलाने में सहायक सिद्ध हो सकते हैं।

यही नहीं आज विश्वस्तर पर जैसे लोकतंत्रीय प्रणाली के टकराव हो रहे हैं उसमे एक स्वस्थ लोकतंत्र की बहाली में भी गुरबाणी के संकेत सहायक सिद्ध हो सकते हैं। गुरबाणी का स्पष्ट संकेत है :

--तखति राजा सो बहै जि तखतै लाइक होई ॥
(पन्ना १०८८)
--तखति बहै तखतै की लाइक ॥ (पन्ना १०३९)

राज शक्ति का सही हकदार योग्य पुरुष है और योग्य पुरुष ही स्वस्थ राजनीति और सच्चे लोकतंत्र की बहाली कर सकता है जिसे गुरु बाणी 'हलेमी राज' कहती है, जिसमें किसी व्यक्ति को दूसरे व्यक्ति को डराने, धमकाने, सताने, शोषण करने का अधिकार नहीं है। सभी मनुष्य परम पिता परमात्मा की सुंदर रचना है। सभी जीवों को समान रूप से प्रभु प्रदत्त सुख साधन मांगने का अधिकार है :

हुणि हुकमु होआ मिहरवाण दा ॥
पै कोइ न किसै रञाणदा ॥
सभ सुखाली वुठीआ इहु होआ हलेमी राजु जीउ ॥
(पन्ना ७४)

ऐसा लोकराज जहां सभी सुखी हों। श्री गुरु ग्रंथ साहिब की बाणी सरबत्त के भले की बात करती है। इसीलिए अमेरिका की येल युनिवर्सिटी के धर्मों के तुलनात्मक अध्ययन पर लंबे समय तक नियुक्त रहे प्रसिद्ध प्रो. डा. जे. सी. आरचर ने सन् १९४६ में ही श्री गुरु ग्रंथ साहिब से संबंधित खोज पत्रों की पुस्तक में कहा और लिखा था The religion of the Guru Granth is universal and practical religion_______ the world needs today. Its message of peace and love. 'श्री गुरु ग्रंथ साहिब का धर्म एक विश्वअर्थी और क्रियात्मक धर्म है। समग्र संसार को इसकी शान्ति और प्रेम की धारक शिक्षा की संदेश की आज आवश्यकता है।"



पोथी परमेसर का थानु

-डॉ. अमृत कौर*

सबदु गुरू सुरति धुनि चेला ॥ (पन्ना ९४३)

शबद-गुरु की साधना सिक्ख धर्म-चिंतन का केंद्र-बिंदु है :

सुरति सबदि भव सागरु तरीऐ नानक नाम वखाणे ॥ (पन्ना ९३८)

सुरति को शबद पर केंदित कर नाम-सिमरन-अभ्यास करता हुआ शिष्य (सिक्ख) आंतरिक चेतना की ऐसी अवस्था पर जा पहुंचता है जहां उसे रूहानी संगीत (नाद) अंत:स्तह में ध्वनित होता प्रतीत होता है। दैवी ज्ञान की निरंतर बजती हुई यह अनहद झंकार है जो एकरस बजती हुई परम प्रकाश से मिलन कराती है, परमानंद की विस्मादी अवस्था तक जा पहुंचाती है :

धुनि महि धिआनु धिआन महि जानिआ गुरमुखि अकथ कहानी ॥ (पन्ना ८७९)

दैवी ज्ञान उसके अंतर चक्षु खोलता है। गुरु का शबद वह कशिश रखता है कि सुरति एकरस होकर उसमें लीन हो जाती है। गहरी अनुभूति में लीन हुआ शिष्य स्वयं शबद रूप हो जाता है और परमानंद की अनंत ऊंचाइओं को स्पर्श करता हुआ आनंद की लहरों में लीन दशम द्वार तक जा पहुंचता है :

ओथै अनहद सबद वजहि दिनु राती गुरमती सबदु सुणावणिआ ॥ (पन्ना १२४)

तब महा आनंद की प्राप्ति होती है। अज्ञान अंधेरा मिट जाता है। दुख कट जाते हैं। मनुष्य नूरो-नूर हो जाता है :

अंतरि सबदु वसाइआ दुखु कटिआ चानणु कीआ करतारि ॥ (पन्ना ५४९)

परमात्मा ने अपना सृजन खुद कर के प्रकृति का सृजन किआ :

आपीन्है आपु साजिओ आपीन्है रचिओ नाउ ॥
दुयी कुदरति साजीऐ करि आसणु डिठो चाउ ॥ (पन्ना ४६३)

अपने आप को स्वर लहरों के रूप में, अनहद नाद के रूप में अभिव्यक्त किया :

पसरिओ आपि होइ अनत तरंग ॥ (पन्ना २७५)

परमात्मा शबद द्वारा अपने आपको प्रकाशित करता है। शबद-लहरें सम्पूर्ण ब्रह्मांड में व्याप्त है; जिनके द्वारा आलौकिक आनंद का तराना ध्वनित हो रहा है। इसे ईश्वर और मनुष्य के बीच में पुल कहा जा सकता है।

यह तो आज का विज्ञान भी मानता है कि सम्पूर्ण ब्रह्मांड में ध्वनि-लहरें व्याप्त हैं। परमात्मा के हुक्म से उत्पन्न इन ध्वनि-लहरों से सम्पूर्ण जगत के शबद, नाम, वर्ण, रूप, आकार उत्पन्न हुए :

अखरी नामु अखरी सालाह ॥
अखरी गिआनु गीत गुण गाह ॥ (पन्ना ४)

शबद को प्रभु माना गया है। इसे परमात्मा की आवाज़ माना गया है। इसे परमात्मा से निसृत स्वर माना गया है। इसे ज्ञान और सत्य का भंडार निरंकारी पैगाम माना गया है। परमात्मा इसके द्वारा स्वयं बोलता है :

वाहु वाहु बाणी निरंकार है तिसु जेवडु अवरु

*१५४, ट्रिब्यून कॉलोनी, बलटाना, जीरकपुर-१४०६०४ (पंजाब), मो. :९८१५१-०९९५७

न कोइ ॥ *(पन्ना ५१५)*

ज्ञान-स्वरूप परमात्मा शबद-गुरु के रूप में प्रत्येक मन में निवास करता है। आत्मा में बसती इस ज्योति स्वरूप दिव्य ज्योति का अनुभव शबद के द्वारा होता है :

आतम रामु रामु है आतम हरि पाईऐ सबदि वीचारा हे ॥ *(पन्ना १०३०)*

हमारे अंदर बसते इस सत्य-स्वरूप परम तत्व निरंजन शबद से जो मनुष्य जुड़ जाता है उसका हृदय कमल फूल की तरह खिल जाता है :

सो जोगी गुर सबदु पछाणै अंतरि कमलु प्रगासु थीआ ॥ *(पन्ना ९४०)*

वह अमृत के घूंट भरता है :

गुर का सबदु महा रसु मीठा ॥
ऐसा अंम्रितु अंतरि डीठा ॥ *(पन्ना १३३१)*

गुरु-शबद में सुरति जोड़कर सहज अवस्था की प्राप्ति होती है :

झिमि झिमि वरसै अंम्रित धारा ॥
मनु पीवै सुनि सबदु बीचारा ॥ *(पन्ना १०२)*

हउमैं की दीवार टूट जाती है त्रिगुणतीत अवस्था की प्राप्ति होती है :

त्रै गुण मेटै सबदु वसाए ता मनि चूकै अहंकारो ॥ *(पन्ना ९४४)*

शबद जब जीवन में प्रफुल्लित हो जाता है तो जीवन में दैवी गुणों का विकास होता है। मनुष्य निष्काम सेवा के पथ पर अग्रसर होता है :

सो निहकरमी जो सबदु बीचारे ॥ *(पन्ना १२८)*

शबद चरित्र-निर्माण में सहायक सिद्ध होता है :

बिनु सबदै आचारु न किन ही पाइआ ॥ *(पन्ना १२८५)*

गुरमति चिंतन के अनुसार शबद परमात्मा से मिलने का साधन बन जाता है :

गुरमुखि बाणी ब्रहमु है सबदि मिलावा होइ ॥ *(पन्ना ३९)*

गुरमति चिंतन में शबद-गुरु को विशेष स्थान प्राप्त है। श्री गुरु ग्रंथ साहिब गुरु का साकार रूप है। जीवन में शबद-गुरु का विकास गुरुबाणी द्वारा होता है। श्री गुरु अरजन देव जी ने *"पोथी परमेसर का थानु"* के रूप में श्री गुरु ग्रंथ साहिब को स्थापित किया। यह धुर की बाणी है, अमृत बाणी है :

बाणी गुरू गुरू है बाणी विचि बाणी अंम्रितु सारे ॥ *(पन्ना ९८२)*

सबदे उपजै अंम्रित बाणी गुरमुखि आखि सुणावणिआ ॥ *(पन्ना १२५)*

परमात्मा गुरुमुख पुरुषों, साधुओं-संतों, के माध्यम से बोलता है। इस तथ्य का वर्णन करते हुए श्री गुरु नानक देव जी कहते हैं :

हउ ढाढी वेकारु कारै लाइआ ॥
राति दिहै कै वार धुरहु फुरमाइआ ॥
ढाढी सचै महलि खसमि बुलाइआ ॥
सची सिफति सालाह कपड़ा पाइआ ॥
सचा अंम्रित नामु भोजनु आइआ ॥
गुरमती खाधा रजि तिनि सुखु पाइआ ॥
ढाढी करे पसाउ सबदु वजाइआ ॥ *(पन्ना १५०)*

शबद-गायन के द्वारा काया कंचन बन जाती है, जीवन धन्य-धन्य हो जाता है। श्री गुरु नानक देव जी के मुखारविंद से निकले निरंकारी बोल और भाई मरदाना जी की रबाब के दैवी जादू ने जनमानस की काया पलट दी। सज्जन कौडा जैसे अपराध वृत्ति वाले प्राणियों को शबद-गुरु के प्रभाव द्वारा सत्य पथ पर अग्रसर किया गया। शबद-प्रकाश की किरणों ने जनता का पथ आलोकित किया। गुरु साहिबान ने लोगों को सबद के साथ जुड़े रहने की प्रेरणा

(शेष पृष्ठ २८ पर)

श्री गुरु ग्रंथ साहिब की मानवतावादी दृष्टि

-डॉ. सत्येंद्रपाल सिंघ*

पूर्ववर्ती सिक्ख गुरु साहिबान की बाणी को संगृहीत करके एक प्रमाणिक ग्रंथ का आकार देने के पीछे पंचम पातशाह श्री गुरु अरजन देव जी का मंतव्य यह भी था कि गुरु-विचार की मौलिकता अक्षुण रहे और निहित स्वार्थवश उसमें कोई अशुद्धि न की जा सके। रूढ़ियों और पूर्वाग्रहों से बुरी तरह ग्रसित तत्कालीन सामाजिक परिस्थितियों में मानवीय मूल्य ताक पर रख दिये गए थे और इंसान के साथ पशुवत व्यवहार आम बात थी। सिक्ख गुरु साहिबान ने बड़ी निर्भीकता से इसका खंडन किया और स्थितियों को सशक्त चुनौती दी ताकि सभी को सम्मानजनक आधारभूत जीवन सुनिश्चित किया जा सके। एक महान मिशन था मानवीय मूल्यों की संरक्षा, जिसके बिना परमात्मा और आत्मिक विकास की बात अधूरी थी।

समाज सुव्यवस्थित नहीं रह सकता यदि मनुष्य-मनुष्य के बीच भेद हो, आपसी विद्वेष और वितृष्णा का भाव हो और न्याय सर्वसुलभ न हो। सिक्ख गुरु साहिबान ने जाति-व्यवस्था पर गहरी चोट की जो सामाजिक असंतुलन का मुख्य कारण थी। कथित श्रेष्ठ जातियों ने समाज में अपना प्रभुत्व स्थापित कर रखा था और निम्न मानी जाने वाली जातियों का शोषण किया जा रहा था। उन्हें गुलाम बनाकर रखा गया था। जाति के गर्व में स्व-सम्मान की अपेक्षा और दूसरों की उपेक्षा की जाती थी। श्री गुरु नानक साहिब ने इस प्रवृत्ति पर कठोर प्रहार करते हुए कहा कि परमात्मा के दरबार में जाति आदि की कोई महत्ता नहीं है :

जाति जनमु नह पूछीऐ सच घरु लेहु बताइ ॥
सा जाति सा पति है जेहे करम कमाइ ॥
जनम मरन दुखु काटीऐ नानक छूटसि नाइ ॥
(पन्ना १३३०)

गुरु साहिब ने कहा कि सम्मान का हकदार अपने कर्मों से बना जाता है न कि जाति से। परमात्मा को भी कर्म ही प्रिय है। कोई भी जाति हो यदि कर्म क्षेष्ठ नहीं तो सम्मान भी नहीं है और जीवन-मुक्ति भी नहीं है। कथित निम्न जाति के आधार पर तिरस्कार का खंडन करते हुए श्री गुरु नानक साहिब ने कहा कि निम्न तो वह है जिसके मन में परमात्मा का निवास नहीं है, जो परमात्मा से दूर है :

खसमु विसारहि ते कमजाति ॥
नानक नावै बाझु सनाति ॥ (पन्ना १०)

परमात्मा के मार्ग पर चलना किसी को श्रेष्ठ सम्मान के योग्य बनाता है न कि किसी श्रेष्ठ कुल अथवा जाति में जन्म ले लेना मात्र। तत्कालीन समाज में ब्राह्मण कुल में जन्म लेना सौभाग्य की बात माना जाता था। हर ब्राह्मण पूज्यनीय था। सिक्ख गुरु साहिबान ने इस सिद्धांत को कर्म के साथ जोड़ा। कर्म को भी सांसारिक कर्म से नहीं परमात्मा से जोड़कर देखा। विचार के इस तल पर गुरु साहिबान ने चारों वर्णों को एक साथ खड़ा कर दिया बिना किसी भेदभाव के :

ब्राहमणु खत्री सूद वैस चारि वरन चारि आस्रम हहि जो हरि धिआवै सो परधानु ॥
जिउ चंदन निकटि वसै हिरडु बपुड़ा तिउ

*E-१७१६, राजाजीपुरम, लखनऊ-२२६०१७, मो. : ९४१५९६०५३३

सतसंगति मिलि पतित परवाणु ॥३॥
ओहु सभ ते ऊचा सभ ते सूचा जा कै हिरदै वसिआ भगवानु ॥
जन नानकु तिस के चरन पखालै जो हरि जनु नीचु जाति सेवकाणु ॥ (पन्ना ८६१)

आदि काल से समाज को चार वर्णों में बांट कर देखा जाता रहा और उसी क्रम में लोगों को महत्त्व प्राप्त होता था। गुरु साहिबान की दृष्टि में उसे महत्त्वपूर्ण माना गया जो परमात्मा से जुड़ा हुआ है एवं साधसंगत करता है। परमात्मा को मन में बसा लेने से, उसके निकट होने से मनुष्य में वही गुण विकसित होने लगते हैं जो परमात्मा के हैं, जैसे चंदन के वृक्ष के निकट उगने वाली अन्य वनस्पतियां भी महक उठती हैं। ऐसे मनुष्य जो परमात्मा से जुड़े हुए, कैसी भी नीच मानी जाने वाली जाति में जन्मे हों, पूज्यनीय हो जाते हैं। उनके चरण धोना भी सौभाग्य की बात हो जाती है। उच्च-निम्न जाति सामाजिक कुव्यवस्था की सोच थी जिस पर कुठाराघात कर सच को सामने रखने का काम गुरु साहिबान ने किया।

जाति-वर्ण के आधार पर एक बड़ी आबादी को सामाजिक और आर्थिक ही नहीं, धार्मिक-आध्यात्मिक स्तर पर भी तिरस्कृत कर दिया गया था। यहां तक कि वेद मंत्रों आदि की भाषा भी उनके लिए निषिद्ध थी। अहंकार से भरे हुए कथित उच्च जातियों के लोग अनाचार-अन्याय करने के बाद घमंड से सिर ऊंचा करके चलते थे। ऐसे लोगों को गुरमति ने मूर्ख-गवार कहा।

जाति का गरबु न करीअहु कोई ॥
ब्रहमु बिंदे सो ब्राहमणु होई ॥१॥
जाति का गरबु न करि मूरख गवारा ॥
इसु गरब ते चलहि बहुतु विकारा ॥१॥रहाउ॥
चारे वरन आखै सभु कोई ॥
ब्रहमु बिंद ते सभ ओपति होई ॥२॥
माटी एक सगल संसारा ॥
बहु बिधि भांडे घड़ै कुम्हारा ॥३॥
पंच ततु मिलि देही का आकारा ॥
घटि वधि को करै बीचारा ॥४॥
कहतु नानक इहु जीउ करम बंधु होई ॥
बिनु सतिगुर भेटे मुकति न होई ॥५॥
(पन्ना ११२७)

उपरोक्त वचन में श्री गुरु अमरदास जी मानवीय समानता के सूक्ष्म सूत्र को उजागर करते हुए कहते हैं कि मानव शरीर की रचना पांच तत्वों से मिलकर हुई है। सभी की रचना का आधार एक ही है। कौन यह कह सकता है कि किसमें कौन-सा तत्व कम या अधिक है? पूरे संसार की रचना एक ही परमात्मा ने की है। यदि रचना में भेद नहीं किया जा सकता, रचनाकार में भेद नहीं किया जा सकता तो जाति के आधार पर भेदभाव कैसा? ऐसा करने वालों को गुरु साहिब ने वर्जित किया कि इसके कारण अनेक विकार उत्पन्न हो जाते हैं। भक्त कबीर जी ने तो ऐसे लोगों की सख़्त प्रताड़ना की :

जौ तूं ब्राहमणु ब्रहमणी जाइआ ॥
तउ आन बाट काहे नही आइआ ॥
(पन्ना ३२४)

समाज धन-सम्पदा और अन्य सांसारिक शक्तियों के आधार पर भी विभक्त था। गुरु साहिबान ने कहा कि जो कुछ भी सांसारिक पदार्थ मनुष्य जी-जान से परिश्रम करके एकत्र कर रहा है यहीं छूट जाने वाला है साथ नहीं जाने वाला है। इस सांसारिकता के पीछे जीवन व्यर्थ गंवा देने के प्रति भी सचेत किया :

करि करि पाप दरबु कीआ वरतण कै ताई ॥
माटी सिउ माटी रली नागा उठि जाई ॥२॥
जा कै कीऐ स्रमु करै ते बैर बिरोधी ॥
अंत कालि भजि जाहिगे काहे जलहु करोधी ॥
(पन्ना ८०९)

जिस धन-सम्पदा, सांसारिक वस्तुओं के लिए मनुष्य अन्य लोगों का अपमान-क्रोध-प्रताड़ना करता है वह अंतिम समय में सहायक नहीं होती। सगे-सम्बंधी भी साथ छोड़ जाते हैं। पांच तत्वों से मिलकर बना शरीर मिट्टी में मिल जाता है और खाली हाथ ही जाना पड़ता है। यह वास्तविकता जानते हुए भी न जानने का ढोंग करने वाला मनुष्य धन के गुमान में निर्धनों का अपमान करता रहता है :

निरधन आदरु कोई न देइ ॥
लाख जतन करै ओहु चिति न धरेइ ॥१॥रहाउ॥
जउ निरधनु सरधन कै जाइ ॥
आगे बैठा पीठि फिराइ ॥१॥
जउ सरधनु निरधन कै जाइ ॥
दीआ आदरु लीआ बुलाइ ॥२॥
निरधनु सरधनु दोनउ भाई ॥
प्रभ की कला न मेटी जाई ॥३॥
कहि कबीर निरधनु है सोई ॥
जा के हिरदै नामु न होई ॥४॥ (पन्ना ११५९)

भक्त कबीर जी ने अपने वचन में समाज की दशा का भी वर्णन किया और गूढ़ बात भी कही। धनहीन को कोई सम्मान नहीं मिलता वह चाहे जितने भी यत्न कर ले। ज्यादातर देखा गया है कि धनवान लोग निर्धन लोगों के सम्मान को उत्सुक नहीं होते। भक्त कबीर जी ने कहा कि धनवान और निर्धन में कोई भेद नहीं है दोनों समान हैं, जबकि वास्तविक विर्धन वह है जो परमात्मा से दूर है। यह बात सांसारिक अमीरी-गरीबी की है कि किसी के पास धन है, किसी के पास नहीं है, जबकि गुरमति मे प्रभु गुणों से सम्पन्न व्यक्ति को अमीर तथा प्रभु-गुणों से विहीन व्यक्ति को गरीब माना गया है।

वास्तव में मानवीय मूल्यों की गिरावट का मुख्य कारण है-- अहंकार। मनुष्य पहले उन वस्तुओं-स्थितियों को पाना चाहता है जिन पर अहंकार किया जा सके। उन्हें प्राप्त कर लेने के बाद उत्पन्न हुआ अहंकार मनुष्य को विकारी बना देता है जिस से असमानता की भावना फैलती है। इस विकृति को पहचान कर गुरमति में अहंकार का सख़्त निषेध किया गया है ताकि मन:स्थिति निर्मल रह सके; परमात्मा में लीन होने की राह खुल सके।

कबीर गरबु न कीजीऐ चाम लपेटे हाड ॥
हैवर ऊपरि छत्र तर ते फुनि धरनी गाड ॥३७॥
कबीर गरबु न कीजीऐ ऊचा देखि अवासु ॥
आजु काल्हि भुइ लेटणा ऊपरि जामै घासु ॥३८॥
कबीर गरबु न कीजीऐ रंकु न हसीऐ कोइ ॥
अजहु सु नाउ समुंद्र महि किआ जानउ किआ होइ ॥३९॥
कबीर गरबु न कीजीऐ देही देखि सुरंग ॥
आजु काल्हि तजि जाहुगे जिउ कांचुरी भुयंग ॥४०॥
(पन्ना १३६६)

अहंकार अपने जीवन पर, घर-सम्पदा पर, धन-दौलत पर, सुंदर देह पर किया जाता है और जिनके पास यह नहीं है उन्हें अपने से निम्न माना जाता है। भक्त कबीर जी ने कहा कि ये सारे अहंकार मिथ्या हैं क्योंकि कल पता नहीं क्या हो जाए। सुंदर तन वैसे ही दूर जाने वाला है जैसे सांप अपने केंचुल को त्याग देता है। महल कितने भी बड़े-ऊंचे क्यों न हों अंतत: ज़मीन में ही समाना पड़ता है और कुछ दिनों बाद उस ज़मीन पर भी घास जम जाती है। अहंकार है, तभी मनुष्य को अन्य में परमात्मा नहीं दिखता। गुरमति के अनुसार अहंकारी मनुष्य दुर्गति को प्राप्त होता है।

जिस कै अंतरि राज अभिमानु ॥
सो नरकपाती होवत सुआनु ॥
जो जानै मै जोबनवंतु ॥
सो होवत बिसटा का जंतु ॥
आपस कउ करमवंतु कहावै ॥
जनमि मरै बहु जोनि भ्रमावै ॥

धन भूमि का जो करै गुमानु ॥
सो मूरखु अंधा अगिआनु ॥
करि किरपा जिस कै हिरदै गरीबी बसावै ॥
नानक ईहा मुकतु आगै सुखु पावै ॥

(पन्ना २७८)

श्री गुरु अरजन देव जी ने कहा कि कैसा भी अहंकार हो वह पतन की ओर ही ले जाने वाला है। राजा का अपने राज्य पर, यौवन पर, अपनी कर्मठता पर, अपनी धन-दौलत पर या अन्य किसी भी प्रकार का अभिमान मूर्खता, अज्ञानता, जीवन-विफलता का सूचक है। ऐसे लोगों की तुलना गुरु साहिब ने नरक के कुत्ते, मल के कीड़े, अंधे और आवागमन के फेर में फंसे रहने वाले से की। उन्होंने स्वयं को जती-तपी के अहंकार से भी सर्तक किया।

कोटि करम करै हउ धारे ॥
स्रमु पावै सगले बिरथारे ॥
अनिक तपसिआ करे अहंकार ॥
नरक सुरग फिरि फिरि अवतार ॥
अनिक जतन करि आतम नही द्रवै ॥
हरि दरगह कहु कैसे गवै ॥
आपस कउ जो भला कहावै ॥
तिसहि भलाई निकटि न आवै ॥
सरब की रेन जा का मनु होइ ॥
कहु नानक ता की निरमल सोइ ॥३॥

(पन्ना २७८)

समाज में ऐसे लोग भी हैं जो धर्म-कर्म में लगे दिखते हैं किंतु अहंकार उत्पन्न होने के कारण उनके सारे कर्म व्यर्थ चले जाते हैं। कई लोग चाहते हैं कि दूसरे उन्हें भला पुरुष कहें जिसके लिए वे नाना प्रकार के यत्न करते रहते हैं किंतु भलाई का कोई भी गुण उनमें परिलक्षित नहीं होता। मुख्य है मन का निर्मल होना और मानवीय संवेदनाओं के प्रति द्रवित रहना। सभी जीवों में परमात्मा के स्वरूप को देखने वाला, सभी के प्रति विनम्रता और प्रेम का भाव रखने वाला ही भले कर्मों वाला कहा जाता है जिससे समूची मानवता लाभान्वित होती है।

हर युग में सामाजिक कल्याण के अनेक कार्य होते आए हैं। निरंकुश और निष्ठुर राजाओं, धनवानों, धार्मिक लोगों ने मानवीय राहत के कई कार्य किए। इनमें से बहुत-से कार्य अपने यश की वृद्धि के लिए, लोगों की प्रशंसा पाने के लिए अथवा अपनी आत्मिक ग्लानि को कम करने के लिए किए गए।

पहली बार गुरु साहिबान ने सामाजिक स्थितियों पर सूक्ष्म दृष्टि डालते हुए, मूल कारणों की पहचान करते हुए सोच को सही दिशा देने का कार्य किया जिससे लोगों में एक नई चेतना जागृत हुई जो विकसित होते हुए जब परिपक्व हो गई तो श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी की अगुवाई में 'खालसा' का जन्म हुआ। खालसा के जन्म ने सारे भेदभाव मिटाकर मन की निर्मलता को प्रत्यक्ष किया। खालसा का जन्म जिस पुष्ट और परिपक्व आधार पर हुआ उसका मुख्य तत्व था समानता, उदारता और सहृदयता। यही तो मानवता की परिभाषा है और कसौटी भी। यह शाश्वत तत्व ही खालसा की विशेषता है, इसीलिए हर दिन सुबह-शाम संसार के लाखों गुरुद्वारों में सरबत्त के भले की अरदास की जाती है जिससे खालसा और मानवता को प्रफुल्लता प्राप्त होती है।

श्री गुरु ग्रंथ साहिब वास्तव में मानवता की विशाद व्याख्या है और खालसा उसका प्रकट स्वरूप। जो मन और तन को विकार रहित कर परमात्मा से जोड़े, ऐसा माध्यम संसार में श्री गुरु ग्रंथ साहिब के अतिरिक्त अन्य कोई नहीं। जिस धर्म के रहबर स्वयं को, पूरे वंश को बलिदान कर मानवता की रक्षा का सबक सिखाते हों, उस धर्म (खालसा धर्म) जैसा कोई दूसरा धर्म नहीं।



भक्त कबीर जी और भक्त रविदास जी की बाणी के प्रसंग में

गुरबाणी में समाज-चेतना

*-स. कृष्ण सिंघ**

मध्यकाल के मुगल और भारतीय सभ्याचार की एक सामूहिक विशेषता यह प्रकट होती है कि दोनों सभ्याचार अपने आप में अलग-अलग रास्तों के पथिक बनकर भी मानव विरोधी और मानव पक्षीय व्यवहार को धारण करते हैं। एक तरफ मुस्लिम शासकों की मारू रुचियां हैं जब तैमूर (१३३६-१४०३ ई) जैसा कट्टरवादी बादशाह अपने मत के प्रसार के लिए तलवार की नोक से कार्य करने में भी संकोच नहीं करता। "उसके आदेश से क्षेत्र दीपालपुर में ५ हज़ार, अयोध्या में १४ हज़ार, बनारस में ३३ हज़ार हिंदू मारे गए और उनके लड़के-लड़कियां दास-दासी बनाए गए। १९०० हिंदुओं को कोठियों में बंद करके जला दिया गया।[१] वो इस मत के बारे में स्पष्ट करता है कि "भारत पर आक्रमण करने के पीछे उद्देश्य यह था कि मैं काफिरों के विरुद्ध मुहिम लेकर जाऊं, उनको हज़रत मुहम्मद साहब के सच्चे धर्म में लेकर आऊं। भारत को सरईश्वर और कुफ्र की भ्रष्टता से पवित्र करूं और मंदिरों एवं मूर्तियों को तोड़ूं, जिस कारण हम गाज़ी और मुजाहिद इस्लाम के योद्धाओं और सिपाहियों के रूप में अल्लाह के समक्ष पेश हो सके।[२] इसका मुख्य कारण यही था कि उस समय के प्रबंधकीय ढांचे में न्याय का सारा कार्य काज़ियों और मुल्लाओं के हाथ में था। रिश्वत लेकर दूसरों का हक मारना (विशेष तौर पर गैर-मुस्लमानों का) उनका कट्टरवादी स्वभाव बन चुका था। शासक श्रेणी शासन के नशे में, अपने ऐशो-आराम में पड़कर सामान्य जनता के मूल्यों को आंखों से ओझल कर चुकी थी। ज़जिया आदि कर के लिए गैर-मुसलमान लोगों को और भी बंधनों में जकड़ा हुआ था। भाई गुरदास जी की पहली वार उपरोक्त तथ्यों को भली-भांति उजागर करती है, जिसमें श्री गुरु नानक साहिब के आगमन से पूर्व के समय को उन्होंने बड़े ही कलात्मक ढंग से चित्रित किया है :

कलि आई कुते मुही खाजु होइआ मुरदार गुसाई ॥
राजे पाप कमांवदे उलटी वाड़ खेत कउ खाई ॥
काजी होए रिसवती वढी लै के हकु गवाई ॥
इसत्री पुरखै दामि हितु भावै आइ किथाऊं जाई ॥
वरतिआ पापु सभसि जगि मांगी ॥(वार १:३०)

गुरबाणी में भी स्थान-स्थान पर ऐसे संकेत मिलते हैं, जो समकालीन समाज की बिगड़ी दशा को बड़े सुचेत रूप में दृष्टिगोचर करते हैं :

--कादी कूड़ु बोलि मलु खाइ ॥ (पन्ना ६६२)
काजी होइ कै बहै निआइ ॥
फेरे तसबी करे खुदाइ ॥
वढी लै कै हकु गवाए ॥
जे को पुछै ता पड़ि सुणाए ॥ (पन्ना ९५१)
राजे सीह मुकदम कुते ॥
जाइ जगाइन्हि बैठे सुते ॥
चाकर नहदा पाइन्हि घाउ ॥
रतु पितु कुतिहो चटि जाहु ॥
जिथै जीआं होसी सार ॥
नकी वढी लाइतबार ॥ (पन्ना १२८८)

दूसरी ओर इस्लामी सभ्याचार के सूफी मत के प्रचारक भारतीय जनता में बहुत लोकप्रिय हुए, क्योंकि उन्होंने भारत के लोगों को, जो तथाकथित उच्च श्रेणियों के हाथों ऊब चुके

**ऐसोसियट प्रोफेसर, पंजाबी विभाग (अध्यक्ष), गवर्नमैंट कॉलेज फॉर गलर्स, लुधियाना १४१००१ मोः ९४६३९-८९६३९*

थे, को प्यार, वफ़ादारी, सांझ और हमदर्दी का संदेश दिया।[३] उन्होंने कुछ ऐसे नुक्ते उठाए जो भारतीय जनता के तपते हृदय को शांत करने में मददगार सिद्ध हुए। इस्लामी शासकों की मारू नीतियों के कारण भारतीय जनता के हृदय पर हुए गहरे जख़्मों को भरने में वे मरहम का रूप बने। भारतीय जनता के साथ सूफी फकीरों की सांझ बहुत ऊंचे स्तर पर प्रकट होती है। इस सांझ की निशानियां हमें पंजाबी साहित्य जगत् में प्रसिद्ध सूफी शेख फरीद जी के विचारों से भी मिलती हैं :

फरीदा बारि पराइऐ बैसणा सांई मुझै न देहि ॥
जे तू एवै रखसी जीउ सरीरहु लेहि ॥
(पन्ना १३८०)

परमात्मा को सब के दिलों में रहता बता कर वे अपनी प्यार-भावना में तीव्रता प्रदान करते हैं। विशेष बात तो यह है कि शराह के बंधनों को स्वीकार करने के बावजूद भी मानव जाति के लिए उनकी प्रचारात्मक दृष्टि कट्टरवादी नहीं थी :

सभना मन माणिक ठाहणु मूलि मचांगवा ॥
जे तउ पिरीआ दी सिक हिआउ न ठाहे कही दा ॥ (पन्ना १३८४)

निष्कर्ष रूप में एक तरफ इस्लामी शासन की मारू रुचियां है और दूसरी तरफ संतों के मीठे वचन और उनका भारतीय जनता की ओर अनूठा प्रभाव।

इस्लामी सभ्याचार की तरह भारतीय सभ्याचार में भी यह दो-पक्षीय व्यवहार दृष्टिगोचर होता है। मनू स्मृति द्वारा किए गए जाति-बंटवारे ने मानवीय जीवन को सर्व-पक्षीय विकास से दूर किए रखा। तथाकथित शूद्रों को शिक्षा के क्षेत्र में प्रवेश करने की सख़्त मनाही थी। विद्या प्राप्त करना और देना केवल ब्राह्मणों का कार्य था। शूद्रों का कार्य केवल अन्य वर्णों की सेवा करना था। इन कारणों के कारण तथाकथित निम्न वर्ग के लोग अन्य वर्ग-श्रेणियों के मुकाबले ऊपर न उठ सके। 'इनसाइक्लोपीडिया ऑफ रीलिज़न एण्ड ऐथिक्स' (भाग ११वां, पृष्ठ ९१५) में मिलते संकेतों से भी यह सच्चाई सिद्ध होती है कि "कोई शूद्र, ब्राह्मण के बराबर नहीं बैठ सकता। वेद पढ़ना, सुनना उसके लिए वर्जित है। यदि वह जान-बूझ कर सुनता है तो उसके कान बंद कर दिए जाएं। यदि उच्चारण करता है तो उसकी ज़ुबान काट दी जाए। यदि याद करता है तो उसके शरीर के टुकड़े-टुकड़े कर दिए जाएं। एक शूद्र को जान से मारने की सज़ा एक उल्लू या कुत्ते को मारने के बराबर थी। शूद्र के साथ खाना तो एक ओर, उसकी परछाईं लेने की भी मनाही थी।"

मनू स्मृति द्वारा किए गए जाति-भेद ने मनुष्य को चार मुख्य भागों में बांट दिया था। यह बंटवारा अंदर ही अंदर ईर्ष्या और सूच भ्रष्ट की बुराइयों के अधीन मानवीय एकता को दीमक की तरह खा रहा था। इस वर्ग-भेद ने समूची भारतीय जनता को सैनिक क्षेत्र में भी अलग रूप दे दिया था, जिससे पराई हकूमत के लिए भारत की धरती पर पैर जमाने आसान हो गए थे। प्रतिक्रम यह हुआ कि विकास के सभी रास्ते बंद हो गए और समाज अलग-अलग टुकड़ों में बंट गया। जात-पात के इस प्रतिक्रम संबंधी विदेशी विद्वान एस. एन. गफूरोआ के विचार यहां वर्णन योग्य हैं-- "जात-पात की मौजूदगी ने उपजाऊ ताकतों के विकास के रास्ते में रुकावट डाली और भारतीय आबादी के अलग-अलग तबकों की अनदेखी को बरकरार रखा।"[४]

परिणामस्वरूप तथाकथित शूद्र जातियों की आत्मिक, शारीरिक और बौद्धिक हालत पूरी तरह खराब हो चुकी थी। तथाकथित उच्च वर्गीय लोग हर तरह से उनका शोषण कर रहे थे। प्रसिद्ध चिंतक प्लेटो (अफलातून) ने भी यदि मानवीय बांट की है तो वह भी कर्म आधारित थी, जन्म आधारित नहीं उसने समाज

के समूचे कार्य-व्यवहार को तीन मुख्य मानवीय श्रेणियों में बांटा। स्पष्ट किया कि ऐसी वर्ग-बांट मानवीय समाज की उन्नति का कारण होगी। यह वर्ग-बांट पूरी तरह से कार्य-बांट ही रही, जन्म का इस बांट से कोई संबंध न था।[५]

श्री गुरु नानक जी ने भी जात-बांट को क्रम अधारित ही माना। उनका कहना है :

जाति जनमु नह पूछीऐ सच घरु लेहु बताइ ॥
सा जाति सा पति है जेहे करम कमाइ ॥
(पन्ना १३३०)

'सभि महि जोति जोति है सोइ' कहते हुए उन्होंने सब को गले से लगाया और सामाजिक बराबरी की ज़ोरदार आवाज़ बुलंद की। तथाकथित नीच (शूद्र) वर्ग के उत्थान के लिए विशेष रूप से आवाज़ बुलंद की :

नीचा अंदरि नीच जाति नीची हू अति नीचु ॥
नानकु तिन कै संगि साथि वडिआ सिउ किआ रीस ॥
जिथै नीच समालीअनि तिथै नदरि तेरी बखसीस ॥
(पन्ना १५)

भक्त कबीर जी ने भी जात-पात का विरोध कठोर शब्दों में किया। उन्होंने जात-अभिमानियों को तो यहां तक कह दिया :

जौ तूं ब्राहमणु ब्रहमणी जाइआ ॥
तउ आन बाट काहे नही आइआ ॥२॥
तुम कत ब्राहमण हम कत सूद ॥
हम कत लोहू तुम कत दूध ॥३॥
कहु कबीर जो ब्रहमु बीचारै ॥
सो ब्राहमणु कहीअतु है हमारै ॥ (पन्ना ३२४)

भक्त कबीर जी ने तो अपने आध्यात्मिक अनुभव के आधार पर यहां तक कह दिया कि अगर सारा संसार आलौकिक प्रभु के नूर की उपज है, जो सर्व व्यापक है, जिसका निवास हर प्राणी में है, तो फिर यह अच्छे-बुरे का अंतर क्यों ?

अवलि अलह नूरु उपाइआ कुदरति के सब बंदे ॥
एक नूर ते सब जग उपजिआ कउन भले को मंदे ॥
(पन्ना १३४९)

भक्त रविदास जी के अनुसार जो मनुष्य प्रभु का नाम सिमरन करते हैं, वे जन्म-जाति के बंधनों से मुक्त हो जाते हैं :

कहि रविदास जुो जपै नामु ॥
तिसु जाति न जनमु न जोनि कामु ॥
(पन्ना ११९६)

ऐसे बंधनों से मुक्ति हासिल करके वे अपने आप को प्रभु के दरबारी महसूस करते हैं :

एकु मुकंदु करै उपकारु ॥
हमरा कहा करै संसारु ॥
मेटी जाति हूए दरबारि ॥
तुही मुकंद जोग जुग तारि ॥ (पन्ना ८७५)

विशेष बात तो यह है कि प्रभु-नाम-सिमरन का संबंध किसी विशेष वर्ण-जात के साथ नहीं, बल्कि यह तो समूची मनुष्य जाति के लिए लाभकारी रूप में जुड़ा हुआ है :

ब्रहमन बैस सूद अरु ख्यत्री डोम चंडार मलेछ मन सोइ ॥
होइ पुनीत भगवंत भजन ते आपु तारि तारे कुल दोइ ॥ (पन्ना ८५८)

जात-पात की वर्ग-बांट एवं मुगल शासकों के मारू प्रभाव के कारण भारतीय सभ्याचार धर्म के क्षेत्र में अपनी मूल अग्रणीय प्रवृत्तियों से पीछे रह गया था। एक वर्ग था जो आम जनता को जबरदस्ती अपनी लपेट में लेकर उनको अनचाहे बंधनों में डालना अपना मुख्य उद्देश्य समझता था। खोखले हो चुके रूपावाद को पंजाबी के जाने-पहचाने विद्धान डॉ. अतर सिंघ ने परंपरावाद का नाम दिया है। उनके कथन के अनुसार, "इस परंपरावाद का सबसे बड़ा लक्षण निर्जीव चिह्न हैं। जो जीवन के सरल अनुभव का प्रतीक न रह कर अपने आप महत्त्वपूर्ण हो बैठे। यह अवस्था परंपरावाद की भी थी और अवसाद की भी। इस परंपरा के विरुद्ध रीतिबद्ध जटिलता के विरुद्ध सबसे कठोर आवाज़ भक्ति लहर के अधीन उठी।[६] इस संबंध

में प्रोफेसर परमिंदर सिंघ का यह मत है कि "ज्यादातर यह (भक्ति लहर) सामाजिक गुलामी और ब्राह्मणवाद के सूखे फलसफे के विरुद्ध प्रतिक्रम का नतीजा था। परमात्मा में पूर्ण विश्वास रखने वाला हिंदू मत बौद्ध मत को बहुत देर तक स्वीकार न कर सका, जो कि परमात्मा के अस्तित्व के बारे में बिल्कुल चुप था और बहुत ज़ोर कर्म फिलासफी पर देता था। महात्मा बुद्ध के चेले उसके अच्छे सिद्धातों को भूलकर कुरीतियों में फंस गए थे। महात्मा बुद्ध की पूजा परमात्मा की पूजा का दर्जा ले चुकी थी। अहिंसा के सिद्धांत ने लोगों को शारीरिक और आत्मिक रूप से कमज़ोर बना दिया था।[७]

हर तरफ अपराध का ही बोलबाला था। समूह धर्मों के पैरोकार अपने धर्म के प्रसार के लिए जनता को फिजूल के कर्मकांडों में डालकर पूरी तरह गुमराह कर रहे थे। धर्म की सीमा रेखा तो केवल उनके निजी स्वार्थों तक ही सीमित होकर रह गई थी। यह भक्ति लहर ही थी, जिसने लोक लहर के रूप में लोगों के साथ निकटता स्थापित करके खोखले और कर्मकांडी जीवन का कठोरता से विरोध किया और सच पर आधारित जीवन व्यतीत करने का मानवीय चेतना वाला संदेश दिया :

--काहू दीन्हे पाट पटंबर काहू पलघ निवारा ॥
काहू गरी गोदरी नाही काहू खान परारा ॥१॥
अहिरख वादु न कीजै रे मन ॥
सुक्रितु करि करि लीजै रे मन ॥ *(पन्ना ४७९)*
--तूं ब्राम्हनु मै कासीक जुलहा बूझहु मोर गिआना ॥
तुम्ह तउ जाचे भूपति राजे हरि सउ मोर धिआना ॥ *(पन्ना ४८२)*
--निरधन आदरु कोई न देइ ॥
लाख जतन करै ओहु चिति न धरेइ ॥१॥रहाउ॥
जउ निरधनु सरधन कै जाइ ॥
आगे बैठा पीठि फिराइ ॥ *(पन्ना ११५९)*

आर्थिकता से जुड़े इन भावों की अभिव्यक्ति भक्त रविदास जी की बाणी में से मूर्तिमान होती है :

ऐसी लाल तुझ बिनु कउनु करै ॥
गरीब निवाजु गुसईआ मेरा माथै छत्रु धरै ॥१॥रहाउ॥
जा की छोति जगत कउ लागै ता पर तुहीं ढरै ॥
नीचह ऊच करै मेरा गोबिंदु काहू ते न डरै ॥
(पन्ना ११०६)
--नागर जनां मेरी जाति बिखिआत चंमारं ॥ . . .
मेरी जाति कुट बांढला ढोर ढोवंता नितहि बानारसी आस पासा ॥
अब बिप्र परधान तिहि करहि डंडउति तेरे नाम सरणाइ रविदासु दासा ॥ *(पन्ना १२९३)*

वर्णनयोग्य बात यह है कि भक्ति लहर के पैरोकारों ने ब्राह्मण वर्ग को अपने अध्ययन का विषय बनाया। भक्त साहिबान की बाणी में एक ओर *"लोगु जानै इहु गीतु है इहु तउ ब्रहम बीचार ॥"* है और दूसरी तरफ *"कहु कबीर गूंगै गुड़ु खाइआ पूछे ते किआ कहीऐ ॥"* का संकल्प है। कहने से तात्पर्य यह है कि बाणी विरह के भावों तक सीमित नहीं, इसमें प्रभु-विचारों का भी विशेष महत्त्व है।

भक्त कबीर जी को दो बार उनके जीवन में खत्म करने का प्रयास किया गया। मुसलिम इस कारण नाराज़ थे कि भक्त कबीर जी उनके धर्म की कुरीतियों का खंडन करते थे। ब्राह्मण चाहते थे कि उनका जीवन खत्म कर दिया जाए क्योंकि वे वर्ण-व्यवस्था के अनुसार स्थापित उनकी 'उच्च पदवी' को नहीं मानते थे। वे छूत-छात, जात-पात के कट्टर विरोधी थे और कर्मकांड के विरुद्ध प्रचार करते थे। सूतक, श्राद्ध, तीर्थ-स्नान आदि जिनके द्वारा ब्राह्मण वर्ग अपनी उपजीविका चलाता था, उनके भी भक्त कबीर जी विरोधी थे। इसलिए उन्होंने एक दिन विचार करके गंगा के किनारे बैठे भक्त कबीर जी को मुश्कें बांधकर नदी में धक्का दे दिया।[८]

भक्त रविदास जी के जीवन में भी ऐसी ही घटनाएं होने के बारे में संकेत मिलते हैं। उनकी उन्नति को देखकर काशी के पंडित लोगों ने उस समय के राजा के पास शिकायत भी की थी। भक्त बाणीकारों की दृष्टि निर्गुणवादी थी। उन्होंने एक निराकार प्रभु की उपासना की, किसी देवी-देवताओं के प्रति उनकी आस्था नहीं थी। उनकी सामाजिक सोच ऐसी थी, जो उस समय के अगुओं को नापसंद थी। वे समय की उस पुजारी श्रेणी का विरोध करते थे जो जनसमाज में दुविधा एवं द्वेष पैदा करती थी :

--कबीर बामनु गुरू है जगत का भगतन का गुरु नाहि ॥
अरझि उरझि कै पचि मूआ चारउ बेदहु माहि ॥
(पन्ना १३७७)

--पंडित मुलां जो लिखि दीआ ॥
छाडि चले हम कछू न लीआ ॥३॥
रिदै इखलासु निरखि ले मीरा ॥
आपु खोजि खोजि मिले कबीरा ॥ (पन्ना ११५९)

अलग-अलग धर्मों से संबंधित पुरोहित श्रेणियां अहंकारग्रस्त होकर अपने-अपने धर्म की उच्चता को प्रकट करती थीं। भक्त कबीर जी की ये पंक्तियां इस विचार की पुष्टि करती हैं :

--पंडित जन माते पढ़ि पुरान ॥
जोगी माते जोग धिआन ॥
संनिआसी माते अहंमेव ॥
तपसी माते तप कै भेव ॥ (पन्ना ११९३)

--बुत पूजि पूजि हिंदू मूए तुरक मूए सिरु नाई ॥
ओइ ले जारे ओइ ले गाडे तेरी गति दुहू न पाई ॥ (पन्ना ६५४)

भक्त बाणीकारों का उद्देश्य मूल रूप से बाहरी बेमतलब के पाखंडों से मुक्ति हासिल करना है। उनकी दृष्टि में बेमतलब मायावी बंधनों के कारण पूरा जगत ही पाखंड में लिप्त है :

हरि पाखंडु न कीजई बैरागीअड़े ॥
पाखंडि रता सभु लोकु वणाहंबै ॥ (पन्ना ११०४)

यही कारण है कि भक्त कबीर जी ने धर्मों के सैद्धांतिक पक्षों को बाहरी रूप के साथ-साथ अंतरमुखी रूप में भी चित्रित किया। यह उनकी सामाजिक चेतना थी जो नाम-सिमरन के माध्यम से आध्यात्मिक प्रसंग में नवीन अर्थों को लेकर उभरी :

--मनु करि मका किबला करि देही ॥
बोलनहारु परम गुरु एही ॥
कहु रे मुलां बांग निवाज ॥
एक मसीति दसै दरवाज ॥ (पन्ना ११५८)

रोजा धरै निवाज गुजारै कलमा भिसति न होई ॥
सतरि काबा घट ही भीतरि जे करि जानै कोई ॥
निवाज सोई जो निआउ बिचारै कलमा अकलहि जानै ॥
पाचहु मुसि मुसला बिछावै तब तउ दीनु पछानै ॥
(पन्ना ४८०)

--सो मुलां जो मन सिउ लरै ॥
गुर उपदेसि काल सिउ जुरै ॥
काजी से जु काइआ बीचारै ॥
काइआ की अगनि ब्रहमु परजारै ॥
सुपनै बिंदु न देई झरना ॥
तिसु काजी कउ जरा न मरना ॥
सो सुरतानु जु दुइ सर तानै ॥
बाहरि जाता भीतरि आनै ॥
गगन मंडल महि लसकरु करै ॥
सो सुरतानु छत्रु सिरि धरै ॥ (पन्ना ११५९)

भक्त रविदास जी की बाणी में हमें उस समय के पंडितों, योगियों, संयासियों, तथाकथित ज्ञानिओं की अहंकारग्रस्त जीवन गतिविधियों के बारे में संकेत मिलते हैं :

हम बड कबि कुलीन हम पंडित हम जोगी संनिआसी ॥
गिआनी गुनी सूर हम दाते इह बुधि कबहि न नासी ॥ (पन्ना ९७४)

जोगीसर पावहि नही तुअ गुण कथनु अपार ॥
(पन्ना ३४६)

अपनी आध्यात्मिक अनुभवी चेतना के चलते भक्त रविदास जी ने हिंदू मत में प्रचलित आरती के पूजा-साधनों की आधारशिला भी प्रभु-नाम-तत्व को ही माना :

नामु तेरो आरती मजनु मुरारे ॥
हरि के नाम बिनु झूठे सगल पासारे ॥रहाउ॥
नामु तेरो आसनो नामु तेरो उरसा
नामु तेरो केसरो ले छिटकारे ॥ . . .
नामु तेरो दीवा नामु तेरो बाती
नामु तेरो तेलु ले माहि पसारे ॥ (पन्ना ६९४)

उन्होंने मन की पवित्रता को हमेशा कायम रखने और प्रेमा-भक्ति पर ज़ोर दिया; कलयुग में केवल प्रभु के नाम को ही प्रधानता दी :

सतजुगि सतु तेता जगी दुआपरि पूजाचार ॥
तीनौ जुग तीनौ दिड़े कलि केवल नाम आधार ॥ . . .
अनिक जतन निग्रह कीए टारी न टरै भ्रम फास ॥
प्रेम भगति नही ऊपजै ता ते रविदास उदास ॥ (पन्ना ३४६)
--साधसंगति बिना भाउ नही ऊपजै
भाव बिनु भगति नही होई तेरी ॥
कहै रविदासु इक बेनती हरि सिउ पैज राखहु राजा राम मेरी ॥ (पन्ना ६९४)

उपरोक्त किए गये सारे विचार का निष्कर्ष यह निकलता है कि प्रभु-नाम-तत्व की शक्ति ही है, जो जनसाधारण को सर्वपक्षीय रूप से बंधन-मुक्त करती है। यह शक्ति आलौकिक होकर भी पूरे जगत व्यवहार के साथ लौकिक रूप में अपनी सांझ डालती है और जगत की सभी समस्याओं के समाधान का माध्यम बनती है। भक्त रविदास जी के अनुसार :

जा के कुटंब के ढेढ सभ ढोर ढोवंत
फिरहि अजहु बंनारसी आस पासा ॥
आचार सहित बिप्र करहि डंडउति
तिन तनै रविदास दासान दासा ॥(पन्ना १२९३)

निष्कर्ष रूप में भक्त बाणीकारों की समाज-चेतना आज भी पहले जितनी ही सार्थक है।

संदर्भ सूची

१. शेर सिंघ शेर (डॉ.) सचिआर : गुरु नानक, जलंधर, पंजाब किताब घर, १९७२, पृष्ठ १७ के अनुसार
२. पंजाब का इतिहास, संपादक फौजा सिंघ, पटियाला, पंजाबी यूनीवर्सिटी १९६८, पृष्ठ २६६
३. अतर सिंघ (डॉ.), दृष्टिकोण, लुधियाना, लाहौर बुक शॉप, १९६३, पृष्ठ-१५३
४. जनरल ऑफ मिडीवल इंडियन लिट्रेचर, चंडीगढ, पंजाब यूनिवर्सिटी, मार्च १९७८, पृष्ठ ११७
५. शेर सिंघ (डॉ.) विचारमाला, लुधियाना, लाहौर बुक शॉप १९५१, पृष्ठ ५६
६. दृष्टिकोण लुधियाना, लाहौर बुक शॉप १९६३, पृष्ठ ४३-४४
७. पंजाबी साहित्य की उत्पति तथा विकास, लुधियाना, लाहौर बुकशाप, १९७४, पृष्ठ ४७-४८
८. जोध सिंघ (भाई), कबीर : जीवनी तथा शिक्षा, पटियाला, पंजाबी यूनीवर्सिटी, १९७१, पृष्ठ-३५

सिकंदर लोधी के समय जब भक्त साहिबान पर जुल्म किए गए, उनका ज़िक्र हमें निम्नलिखित शब्दों में मिलता है :

-भुजा बांधि भिला करि डारिओ ॥
हसती क्रोपि मूंड महि मारिओ ॥ . . .
किआ अपराधु संत है कीन्हा ॥
बांधि पोट कुंचर कउ दीन्हा ॥ . . .
कहि कबीर हमरा गोबिंदु ॥
चउथे पद महि जन की जिंदु ॥ (पन्ना ८७०)
२. गंग गुसाइनि गहिर गंभीर ॥
जंजीर बांधि करि खरे कबीर ॥
मनु न डिगै तनु काहे कउ डराइ ॥
चरन कमल चितु रहिओ समाइ ॥रहाउ॥
गंगा की लहरि मेरी टुटी जंजीर ॥
म्रिगछाला पर बैठे कबीर ॥
कहि कंबीर कोऊ संग न साथ ॥
जल थल राखन है रघुनाथ ॥(पृष्ठ ११६२)

अनुवादिका : मनीषा,
प्राध्यापिका, हिंदी विभाग,
गवर्नमेंट कॉलेज फॉर गर्ल्स, लुधियाना-१४१००१ 

भाई गुरदास जी : संक्षिप्त जीवन-परिचय

*-स. गुरदीप सिंघ**

भाई गुरदास जी उच्च कोटि के विद्वान थे। आप गुरबाणी के प्रमुख व्याख्याकार के रूप में प्रसिद्ध थे। साथ ही शास्त्रों आदि के ज्ञाता भी थे। आपकी रचना 'वारां' को 'गुरबाणी की कुंजी' कहा जाता है। आपने गुरबाणी के विचारों तथा तथ्यों को आम संगत तक पहुंचाने के लिए बहुत ही सरल ढंग अपनाए हैं। अनेक प्रकार के अलंकारों, उदाहरणों द्वारा विस्तृत रूप में लिखा है। आप एक आदर्श गुरसिक्ख, प्रभावशाली प्रचारक, सच्चे सेवक, कुशल लिखारी और अद्वितीय रचनाकार थे।

संबंधों की दृष्टि से भाई गुरदास जी श्री गुरु अमरदास जी के भतीजे और माता भानी जी के चचेरे भाई थे। भाई साहिब का जन्म पंजाब के तरनतारन नगर से २० किलोमीटर की दूरी पर स्थित गोइंदवाल साहिब कसबे में सन् १५५१ में हुआ। भाई गुरदास जी को तीन वर्ष की आयु में पितृ-विछोह और बारह वर्ष की आयु में मातृ-विछोह सहन करना पड़ा।

श्री गुरु अमरदास जी की पावन संगत की रंगत भाई गुरदास जी पर खूब चढ़ी। आपने अपना समूचा जीवन गुरु-घर की सेवा में समर्पित कर दिया। गुरु जी ने आप की तीक्ष्ण बुद्धि और गुरमति ज्ञान में परिपक्वता देखकर आपको चंबा और जम्मू रियासत में सिक्ख धर्म का प्रचार करने के लिए भेजा। सन् १५७४ ई में श्री गुरु अमरदास जी परलोक गमन कर गए और भाई साहिब वापिस आकर श्री गुरु रामदास जी की सेवा में लग गए। श्री गुरु रामदास जी की आज्ञा से आप सिक्ख धर्म के प्रचार हेतु आगरा, लखनऊ, बुरहानपुर और राजस्थान के क्षेत्रों में गए। भाई साहिब उस समय आगरा में थे जब श्री गुरु रामदास जी शारीरिक चोला त्याग गए। आप श्री गुरु अरजन देव जी की सेवा में श्री अमृतसर आ गए।

श्री गुरु अरजन देव जी का बड़ा भाई प्रिथी चंद गुरु-घर का बड़ा विरोधी बना हुआ था। वह सिक्ख संगत से चढ़ावा आदि खुद ले लेता था और परशादा छकने के लिए संगत को गुरु-घर के लंगर में भेज देता था। भाई गुरदास जी ने प्रमुख सिक्खों-- बाबा बुड्ढा जी, भाई पैड़ा जी, भाई साहलो जी आदि से सलाह करके शहर के बाहरी रास्तों पर प्रमुख सिक्खों को खड़ा कर दिया, ताकि बाहर से आने वाली संगत को वास्तविकता के बारे में जागृत किया जा सके।

भाई गुरदास जी को श्री गुरु अमरदास जी तथा उनके परवर्ती तीन गुरु साहिबान के दर्शन और उनके साथ जीवन-यापन करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ था। उनके द्वारा रचित वारों में श्री गुरु नानक देव जी से लेकर छठम पातशाह श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब तक की महिमा का वर्णन है :

सतिगुरु नानक देउ है परमेसरु सोई।
गुरु अंगदु गुरु अंग ते जोती जोति समोई।

३०२, किदवाई नगर, लुधियाना-१४१००८; मो: ९८८८१२६६९०

अमरा पदु गुरु अंगदहुं हुइ जाणु जणोई।
गुरु अमरहुं गुरु रामदास अंम्रित रसु भोई।
रामदासहं अरजनु गुरू गुरु सबद सथोई।
हरिगोबिंद गुरु अरजनहुं गुरु गोविंदु होई।
गुरमुखि सुख फल पिरम रसु सतिसंग अलोई।
गुरु हरिगोविंदहुं बाहिरा दूजा नही कोई।
(वार ३८:२०)

श्री गुरु अरजन देव जी ने श्री गुरु ग्रंथ साहिब की संपादना की। श्री गुरु ग्रंथ साहिब की संपादना के समय लिखारी की सेवा का महान कार्य भाई गुरदास जी ने निभाया। श्री गुरु ग्रंथ साहिब का पहला प्रकाश भादों सुदी १, संवत् १६६१ (सन् १६०४) को श्री हरिमंदर साहिब (श्री अमृतसर) में किया गया। श्री गुरु अरजन देव जी और श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब के समय संगत की सेवा, गुरमति प्रचार की सेवा और प्रबंध की सेवा भाई गुरदास जी प्रेम और सद्भावना से करते रहे। जब गुरु जी ग्वालियर के किले में नज़रबंद थे, लंगर की सेवा और देख-रेख भाई गुरदास जी द्वारा ही होती रही।

मूल रूप से भाई गुरदास जी की रचना दो प्रकार की है-- ब्रजभाषा में लिखित 'कबित्त सवैये' और पंजाबी भाषा में 'वारां' 'श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथ' की सातवीं रास के चौथे अंश में लिखे संस्कृत के ६ सलोकों को भी भाई गुरदास जी विरचित माना जाता है। कबित्त सवैयों की रचना तब की गई जब भाई साहिब आगरा, मथुरा आदि हिंदी भाषीय इलाकों में गुरमति प्रचार के लिए गए थे। वहां के निवासियों को उनकी ही भाषा में गुरमति दृढ़ करवाई जा सकती थी।

भाई गुरदास जी ने कुल ४० 'वारों' की रचना की है। आपकी वारों में मानस-जन्म को दुर्लभ बताकर उसको सफल बनाने की प्रेरणा दी गई है। गुरसिक्ख भ्रम, पाखंड, कर्मकांड आदि से मुक्त है। सतिगुरु, गुरमुख, साधसंगत, माया, परोपकार, विनम्रता, सेवा, कर्मों का फल आदि सिद्धांतों की विस्तृत रूप में व्याख्या की गई है। परमात्मा की सर्वोच्चता को दर्शाया गया है और बताया गया है कि परमात्मा द्वारा दी गई दातों को लेकर दाता-प्रभु को भुलाना नहीं चाहिए। इसके अलावा भाई साहिब ने गुरु-महत्ता, मानस-जन्म की श्रेष्ठता, गुरमति गाडी-राह, गुरसिक्ख का नित्तनेम, प्रभु-सिमरन आदि पर प्रकाश डाला है।

संवत् १६९४ में आप श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब के साथ गोइंदवाल साहिब गए हुए थे। वहां पर एक दिन अमृत बेला में नित्तनेम के बाद गुरु जी की हजूरी में आप ने शरीर रूपी चोले का त्याग कर दिया। गुरु जी ने स्वयं भाई साहिब के शरीर का अंतिम संस्कार किया। भाई कान्ह सिंघ नाभा के अनुसार उस दिन संवत् १६९४ की भादों सुदी ८ थी; ईसवी सन् १६३७ था। गुरु जी ने भाई गुरदास जी की सेवाओं को मुख्य मानते हुए कहा :

महि मंडल महिं जसु विसथारा। पाइ परमगति पंथ पधारा।४०।
चिरंकाल तेरो रहि नामु। जानहिं गुरू पंथ अभिरामू।
(श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथ, रास ७ अंसु १४)



गुरबाणी के व्याख्याकार : भाई गुरदास जी

-डॉ. कशमीर सिंघ 'नूर'*

शब्द 'गुरदास' के अनेक अर्थ हैं। 'गुरदास' उसे कहा जाता है जो व्यक्ति अपने इष्ट, अपने गुरु का भक्त, सेवक, शिष्य आज्ञाकार हो। गुरु का सेवक सेवा, समर्पण, त्याग, स्वेच्छा के साथ अपने इष्ट को समर्पित होता है। गुलाम (मज़बूरी व लाचारी में) अपने स्वामी, मालिक, आका का हर हुक्म तो मानता है मगर सच्चे मन से अपने मालिक की कभी सेवा नहीं कर सकता।

विश्व के महान् एवं अद्वितीय ग्रंथ श्री गुरु ग्रंथ साहिब के प्रथम पावन स्वरूप के लेखक होने का सौभाग्य प्राप्त भाई गुरदास जी को चार सिक्ख गुरु साहिबान की निकटता प्राप्त होने का सौभाग्य प्राप्त है। इनमें तीसरे पातशाह श्री गुरु अमरदास जी, चतुर्थ पातशाह श्री गुरु रामदास जी, पंचम पातशाह श्री गुरु अरजन देव जी तथा छठम पातशाह श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब शामिल हैं।

सिक्ख पंथ के महान् विद्वान एवं गुरबाणी के व्याख्याकार भाई साहिब भाई गुरदास जी नाते में तीसरे पातशाह श्री गुरु अमरदास जी के भतीजे और पंचम पातशाह श्री गुरु अरजन देव जी के मामा थे। उनका जन्म श्री गुरु अमरदास जी के छोटे भाई श्री ईशरदास जी के गृह में श्री गोइंदवाल साहिब में सन् १५५१ में हुआ। उनकी माता जी का नाम माता जीवणी जी था। भाई गुरदास जी को तीन वर्ष की आयु में पितृ-विछोह और बारह वर्ष की आयु में मातृ-विछोह सहन करना पड़ा। उनका पालन-पोषण, शिक्षा-दीक्षा उनके ताऊ श्री गुरु अमरदास जी की छत्र-छाया में हुई। उन्होंने पंजाबी, अरबी, फ़ारसी, हिंदी, संस्कृत, ब्रज आदि भाषाओं का संपूर्ण ज्ञान हासिल किया। पहले उन्होंने गुरु जी की शरण और गुरु-संगत में रहकर गुरमति को सीखा तथा इस पर दृढ़तापूर्वक पहरा दिया, फिर गुरमति का प्रचार अति श्रद्धा, नम्रता व उत्साह के साथ दूर-दूर तक किया। भाई गुरदास जी ने असंख्य भूले-भटके प्राणियों को गुरमति की शिक्षा देकर नाम-सिमरन, सेवा व परोपकार करने की प्रेरणा दी। वे गुरमति के प्रचार हेतु सदैव तत्पर रहते थे।

भाई गुरदास जी ने श्री गुरु रामदास जी के वक्त और फिर श्री गुरु अरजन देव जी की आगवानी में आगरा और काशी में रहकर गुरमति का प्रचार किया। जब श्री अमृतसर में गुरगद्दी पर पंचम पाताशाह श्री गुरु अरजन देव जी सुशोभित थे, तब गुरु जी के बड़े भाई प्रिथी चंद ने गुरु जी को तंग-परेशान करना शुरू कर दिया। उसने मसंदों के साथ मिलकर गुरु-घर की भेंट एवं लंगर हेतु आने वाली रसद को हथियाना शुरू कर दिया। सन् १५८३ में भाई गुरदास जी ने आगरा से श्री अमृतसर लौटकर प्रिथी चंद की गतिविधियों का विरोध करना आरंभ किया। भाई साहिब ने अपने साथियों को श्री अमृतसर के इर्द-गिर्द तैनात कर सिक्ख संगत को सीधा गुरु जी के दरबार में आने हेतु मार्गदर्शन दिया एवं वास्तविकता से सबको परिचित करवाया।

श्री गुरु अरजन देव जी को मालूम था कि भाई गुरदास जी कई भाषाओं के ज्ञाता

*बी-एक्स ९२५, मोहल्ला संतोखपुरा, होशियारपुर रोड, जलंधर-१४४००४, मो. ९८७२२-५४९९०

और गुरबाणी के उच्च कोटि के व्याख्याकार हैं, इसीलिए उन्होंने श्री गुरु ग्रंथ साहिब के संपादन के समय गुरबाणी को लिपिबद्ध (लिखने) करने का कार्य भाई गुरदास जी को सौंपा। यह कार्य भाई साहिब ने गुरु जी की आगवानी में उनकी आज्ञानुसार पूरी श्रद्धा, निष्ठा तथा कुशलता के साथ किया।

गुरमुखी लिपि एवं पंजाबी भाषा में रचित भाई साहिब की उत्कृष्ट रचना 'वारां' हैं जो कि संख्या में ४० हैं। श्री गुरु अरजन देव जी ने उनकी रचना वारां को गुरबाणी की कुंजी कहकर सराहा है। ये वारें सचमुच अद्वितीय व आलौकिक हैं। पंजाबी साहित्य तथा सिक्ख इतिहास में इन वारों को विशेष स्थान दिया जाता है । इन ४० वारों में कुल ९१३ पउड़ियां हैं। भाई साहिब द्वारा प्रयुक्त शब्दावली में से लगभग ६० प्रतिशत शब्दों का संबंध भारतीय भाषाओं से है तथा बाकी का अन्य भाषाओं से है। इन वारों में भाई साहिब ने गुरु-घर की महानता की, गुरु साहिबान के संदेशों की तथा उनके योगदान की भूरि-भूरि प्रशंसा की है।

भाई गुरदास जी में अनेक गुण मौजूद थे। उन्होंने भारतीय धर्मों का गहन अध्ययन किया हुआ था। वे सामाजिक रीतियों, रस्मों-रिवाजों से अच्छी तरह परिचित थे। उन्होंने अपनी वारों में लोकविश्वासों का भी वर्णन किया है; शगुन-अपशगुन का विवरण भी दिया है। सामाजिक हालात वर्णित करने के साथ ही भाई साहिब ने इन वारों में कई जगह गुर-इतिहास व सिक्ख-इतिहास की झलक भी पेश की है। प्रथम वार में श्री गुरु नानक देव जी का जीवन संक्षेप व सांकेतिक रूप में पेश किया है। इसी तरह उन्होंने ग्यारहवीं वार में उस समय के महान सिक्खों के संक्षिप्त इतिहास को दर्शाया है। भाई साहिब ने अपनी वारों में गुरमति दर्शन, गुरमति दृष्टिकोण व गुरमति सिद्धांतों की; भक्ति, सिमरन, गुरमुख एवं मनमुख की पहचान; रहित-मर्यादा (जीवन-शैली) तथा मानवीय जीवन के सदाचारक पक्ष की बाखूबी व्याख्या की है। भाई साहिब की रचनाएं कीर्तन परंपरा में आज भी गुंजायमान हैं।

भाई गुरदास जी ने ४० वारों के अलावा ६७५ कबित्त व सवैयों की रचना भी की है। उनकी वारों की शब्दावली लोक मुहावरे वाली है और वारों की अनेक काव्य-पंक्तियां लोकोक्तियों की तरह प्रसिद्ध हैं।

भाई गुरदास जी छठे पातशाह श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब के समय ८६ वर्ष की आयु में संवत् १६९४ यानि सन् १६३७ में श्री गोइंदवाल साहिब में परम ज्योति में लीन हो गये। भाई गुरदास जी को गुरमति साहित्य व इतिहास में उच्च कोटि का स्थान हासिल है। 

कविता

हे सर्वोच्च सत्ता!

हे सर्वोच्च सत्ता! हे अथाह असीम!
हे सर्व सरबत्ता!
हे त्रैकाल! हे अकाल! हे सर्वकाल!
तुम्हें सिर झुकाता हूं! मैं सर्व सुख पाता हूं!
मेरा मन शांत हो जाता।
मेरा तन स्वच्छ हो जाता।
सभी कष्ट मिट जाते।
सभी भ्रम संशय टूट जाते।
चढ़दी कला मन में आती।
सभी चिंताएं दूर भगाती।
तेरी कुदरत बहुत भाती।
तेरी सर्वकला बहुत सुहाती।

-डॉ. सुरिंदरपाल सिंघ, पत्तण वाली सड़क, पुराना शाला, गुरदासपुर-१४३५२१, मो. ९४१७१-७५८४६

उत्कृष्ट विद्वान् एवं समर्पित प्रचारक : भाई गुरदास जी

*-डॉ. राजेंद्र सिंह 'साहिल'**

भाई गुरदास जी को गुरमति के मुख्य प्रचारक एवं प्रतिनिधि व्याख्याकार के रूप में प्रमुख व आदरणीय स्थान प्राप्त है। आपकी काव्य-रचनाएं गुरमति की ऐसी सही और सटीक व्याख्या प्रस्तुत करती हैं कि उन्हें 'गुरबाणी की कुंजी' कहकर आदर प्रदान किया जाता है।

प्रारंभिक जीवन : भाई गुरदास जी का जन्म संवत् १६०८ बिक्रमी अर्थात् सन् १५५१ ई. में श्री गोइंदवाल साहिब में हुआ। आप तीसरे पातशाह श्री गुरु अमरदास जी के चचेरे भाई ईशरदास जी के सुपुत्र थे। (कुछ विद्वानों का मत है कि आपके पिता का नाम दातार चंद था।) आपका बचपन श्री गोइंदवाल साहिब में ही बीता। आपकी छोटी अवस्था में ही आपके माता-पिता का देहांत हो गया। ऐसी विकट स्थिति में भी आपने धैर्य नहीं खोया और जीवन का सबसे मूल्यवान फ़ैसला लिया तथा आप तीसरे पातशाह के चरणों में जा बिराजे। गुरु जी ने आपको गले से लगाया और आपकी शिक्षा का प्रबंध किया। भाई गुरदास जी ने यहां दत्तचित्त होकर शिक्षा ग्रहण की और अनेक भाषाओं के पारंगत बने।

गुरु-घर की सेवा में सदैव तत्पर : बड़े होकर भाई गुरदास जी को धर्म-प्रचार की सेवा मिली। चौथे पातशाह श्री गुरु रामदास जी ने गुरमति-प्रचार हेतु आपको आगरा, लखनऊ और बनारस भेजा। आपने यह सेवा तनदेही के साथ निभाई। चतुर्थ पातशाह के ज्योति-जोत समाने के बाद आप पंचम पातशाह श्री गुरु अरजन देव जी की सेवा में श्री अमृतसर आ गये। यहां आपने बाबा बुड्ढा जी के साथ मिलकर गुरु-परिवार की कई षड़यंत्रों से रक्षा की। प्रिथीचंद ने गुरु जी का विरोध करते हुए सिक्ख-संगत को गुरु-घर से विमुख करने का प्रयास किया तो आपने आगे रहकर सिक्ख-संगत का सही नेतृत्व किया, उन्हें वस्तुस्थिति से परिचित कराया और प्रिथीचंद की सभी साज़िशों को नाकाम कर दिया।

गुरु-घर की व्यवस्था को सुचारू रूप से चलाने के लिए आपने 'दसवंध' (आय का दसवां हिस्सा लोक-कार्यों के लिए अर्पित करना) की प्रथा को स्थापित करने में भी विशेष भूमिका निभाई।

श्री गुरु ग्रंथ साहिब की लेखन-सेवा : भाई गुरदास जी के जीवन का सर्वश्रेष्ठ कार्य रहा श्री गुरु ग्रंथ साहिब की आदि बीड़ का लेखन। पंचम पातशाह श्री गुरु अरजन देव जी ने आपसे लेखन की सेवा करवाई। गुरु जी ने श्री अमृतसर में रामसर के तट पर बैठकर भाई गुरदास जी से श्री गुरु ग्रंथ साहिब की पहली बीड़ लिखवाई। यह महान् कार्य १५ भादों, सं. १६६१ को सम्पन्न हुआ। तत्पश्चात १७ भादों, सं. १६६१ को श्री हरिमंदर साहिब में श्री गुरु ग्रंथ साहिब का प्रथम प्रकाश किया गया।

श्री अकाल तख़्त साहिब के निर्माण में योगदान : पंचम पातशाह की शहादत के बाद भाई गुरदास

**१/३३८, 'स्वप्नलोक', दशमेश नगर, मंडी मुल्लांपुर दाखा (लुधियाना), पंजाब-१४११०१, मो: ९४१७२-७६२७१*

जी ने स्वयं को छठम पातशाह श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब की सेवा में अर्पित कर दिया। जब छठम पातशाह ने श्री अकाल तख़्त साहिब की स्थापना का कार्य आरंभ किया तो भाई गुरदास जी ने इस कार्य में विशेष भूमिका निभाई।

श्री अकाल तख़्त साहिब के निर्माण से संबंधित सबसे महत्त्वपूर्ण बात यह है कि इसे छठम पातशाह ने अपने हाथों से तैयार किया, राज-मिस्त्री वगैरह नहीं लगाये गये। गुरु जी स्वयं ईंटें लाते, भाई गुरदास जी गारा बनाकर लाते और बाबा बुड्ढा जी चिनाई करते जाते।

अन्य प्रबंधन-कार्य : इसके बाद छठम पातशाह श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब ने भाई गुरदास जी को गुरगद्दी और गुरु-स्थानों की व्यवस्था करने की सेवा सौंपी। इस सेवा को आपने पूरी कुशलता के साथ जीवन के अंतिम वर्षों तक निभाया।

भाई गुरदास जी की काव्य-रचनायें : भाई साहिब की समस्त काव्य-रचनाएं मुख्यत: तीन रूपों में प्राप्त होती हैं :-

१. पंजाबी भाषा में रचित ४० वारें, जिनमें गुरमति-सिद्धांतों का सूक्ष्म एवं सहज विश्लेषण है।
२. संस्कृत भाषा में रचे गये छ: सलोक।
३. ब्रज भाषा में रचित ६७५ कबित्त एवं सवैये।

भाई गुरदास जी को चार गुरु साहिबान की सेवा में रहने का अवसर प्राप्त हुआ, इसलिए आपको गुरबाणी का गहरा अनुभव मिला और आपने अपना सारा जीवन गुरमति-आदर्शों के अनुरूप बिताया। यही कारण है कि आपकी रचना में गुरमति-सिद्धांत अत्यंत स्पष्ट एवं पूर्ण रूप में प्रकट हुए हैं। इसी विशेषता के कारण आपकी काव्य-रचनाओं को 'गुरबाणी की कुंजी' और 'सिक्ख धर्म का सर्वोत्तम रहितनामा' समझा जाता है। भाई साहिब की रचना पढ़ने-मात्र से गुरमति का महत्त्व एवं आदर्श सहज-स्वाभाविक रूप से मन में बस जाता है।

भाई गुरदास जी का गुरमति-सिद्धांतों की व्याख्या करने का ढंग बहुत सहज, सीधा और सरल है :

कलि आई कुते मुही
खाजु होइआ मुरदार गुसाई।
राजे पापु कमांवदे
उलटी वाड़ खेत कउ खाई। (वार १:३०)

अर्थात् कल्युग आ गया है, लोग कुत्ते के मुंह वाले हो गये हैं, मुरदा उनका भोजन बन गया है; राजा पाप कमा रहे हैं, बाड़ ही उलटकर खेत को खा रही है।

वण वण विचि वणासपति
इको धरती इको पाणी।
रंग बिरंगी फुल फल
साद सुगंध सनबंध विडाणी। (वार १७:५)

अर्थात् वन-वन में वनस्पति है, रंग-बिरंगे फूल-फल हैं; स्वाद, महक में सब भिन्न-भिन्न हैं, परंतु सभी एक ही धरती और एक ही पानी से उत्पन्न होते हैं।

देखि पराईआं चंगीआं
मावां भैणां धीआं जाणै।
उसु सूअरु उसु गाइ है
पर धन हिंदू मुसलमाणै। (वार २९:११)

अर्थात् पराई स्त्रियों को मां-बेटी-बहन मानना चाहिए। पराया धन मुसलमान के लिए सूअर और हिंदू के लिए गाय खाने के बराबर है।

भाई गुरदास जी न सिर्फ़ गूढ़ आध्यात्मिक, रहस्यवादी और सैद्धांतिक विषयों को बड़ी सरलता-सहजता से अभिव्यक्त करते हैं बल्कि काव्य-कला का भी पूरा ध्यान रखते हैं। आपने रस, छंद, अलंकार, बिंब, प्रतीक आदि का प्रयोग

अत्यंत निपुणता के साथ किया है।

उदाहरण के लिए यह कबित्त देखें, जिसमें गृहस्थ जीवन की महत्ता भी स्थापित की गई है और मालोपमा अलंकार का अद्‌भुत प्रयोग किया गया है :

जैसे सर सरिता सकल मै समुंद्र बडो,
मेर सुमेर बडो जगतु बखान है।
तरवर बिखै जैसे चंदन बिरखु बडो,
धातु मै कनिक अति उतम कै मानि है।
पंछीअन मै हंसु, म्रिगराजन मै सारदूल,
रागन मै सिरी रागु, पारस पखान है।
गिआनन मै गिआन अरु धिआनन मै धिआन गुर,
सकल धरम मै ग्रिहसतु प्रधान है ॥३७६॥

अर्थात् जैसे सर-सरिता में समुद्र, पर्वतों में सुमेरु, वृक्षों में चंदन, धातुओं में सोना, पक्षियों में हंस, जंगली पशुओं में शेर, रागों में सिरीराग, पत्थरों में पारस, ज्ञान-ध्यान में गुरु सर्वोत्तम होता है, वैसे ही सभी धर्मों में गृहस्थ धर्म श्रेष्ठ है।

छठम पातशाह की हजूरी में अकाल चलाना :
गुरु-घर के महान लिखारी, बहुभाषी विद्धान, महान प्रचारक और संवेदनशील कवि भाई गुरदास जी ने गुरु-घर की सेवा करते हुए सन् १६३७ ई में गोइंदवाल साहिब में छठम पातशाह की हजूरी में अपनी सांसारिक यात्रा पूरी की। भाई साहिब की सरल भाषा में रची गई काव्योक्तियां सदैव गुरबाणी का आशय स्पष्ट करती रहेंगी। 

पोथी परमेसर का थानु

(पृष्ठ ११ का शेष)

दी। संगत रूप में बैठकर शबद-गायन, मनन, श्रवण, भक्ति के प्रमुख साधन हैं।

विचि संगति हरि प्रभु वरतदा बुझहु सबद वीचारि ॥ *(पन्ना १३१४)*

शबद द्वारा ही सम्पूर्ण सृष्टि का उद्‌भव एवं विनाश हुआ है :

उतपति परलउ सबदे होवै ॥ *(पन्ना ११७)*

गुरु साहिबान ने शबद का प्रयोग धर्म दैवी ज्ञान, दैवी प्रकाश के लिए भी प्रयुक्त किया है। शबद जीवन को संवारता है। मनुष्य के अंदर जब शबद बस जाता है तो उसका आज्ञान अंधेरा मिट जाता है। सबद प्रकाश है। यह विकारों को दूर करता है :

कुबुधि मिटै गुर सबदु बीचारि ॥ (पन्ना ९४४)

तृष्णाओं, इच्छाओं के मकड़जाल से गुरमुख ऊपर उठ जाता है :

मनसा आसा सबदि जलाई ॥ *(पन्ना ९४०)*

दुख-रोग-संताप दूर हो जाते हैं, आवागमन का चक्कर समाप्त हो जाता है :

आवा गउणु मिटै गुर सबदी . . . ॥ *(पन्ना ९४०)*

शबद का विकास मानव-आत्मा में प्रभु-कृपा द्वारा होता है :

आपे सबद गुर मंनि वसाए ॥ *(पन्ना १२५)*

गुरु की कृपा के द्वारा जो शिष्य अपने अंदर बसते इस परम तत्व सबद को खोज लेता है, जो व्यक्ति सुरति सबद के आलोक में इसकी खोज निरंतर जारी रखता है, उसे तत्व ज्ञान की प्राप्ति के बाद अंदर बजते (घटि घटि वाजहि) नाद की पहचान हो जाती है, जिसके बाद उसे परमात्मा को पहचान कर विस्मादी अवस्था की प्राप्ति हो जाती है। उसके अंदर से आध्यात्मिक गुणों की किरणें फूटती हैं। त्रिगुणी माया से ऊपर उठकर नाम या सबद की प्राप्ति द्वारा मनुष्य की आत्मा परमात्मा में समा जाती है :

नामु पदारथु नउ निधि पाए त्रै गुण मेटि समावणिआ ॥ *(पन्ना १२८)* 

गुरमति संगीत के प्रचार तथा प्रसार में श्री गुरु अरजन देव जी का योगदान

-डॉ. प्रेम मच्छाल*

सिक्ख धर्म में कीर्तन संगीत के आदि निर्माता श्री गुरु नानक देव जी ने धर्म के साथ ही संगीत की परंपरा की भी शुरूआत की। उनके बाद परंपरागत रूप में कीर्तन परंपरा आगे आने वाले गुरु साहिबान में भी चलती रही। श्री गुरु अरजन देव जी ने संगीत की इस परंपरा को काफी महत्त्व दिया। उन्होंने कीर्तन-शैली को सीखने-सिखाने की परंपरा प्रचलित की।[१]

श्री गुरु अरजन देव जी का जन्म सन् १५६३ ई में गोइंदवाल साहिब में हुआ। आप श्री गुरु रामदास जी के सबसे छोटे सुपुत्र थे। आप १८ वर्ष की आयु में गुरु-पद पर आसीन हुए। आपने श्री अमृतसर शहर व अमृत सरोवर के निर्माण-कार्य पूरे किए। गुरु साहिबान के अलावा अन्य बाणी को संकलित एवं संपादित कर श्री गुरु ग्रंथ साहिब तैयार किया। आपने श्री गुरु ग्रंथ साहिब में विभिन्न महापुरुषों की बाणी शामिल करके भारतीय साहित्य व संस्कृति पर महान उपकार किया।[२]

प्रारंभ से ही आपको संगीत व साहित्य से विशेष लगाव था। छंद, भेद, काव्य के विभिन्न रूप, राग तथा भाषा की विविधता श्री गुरु अरजन देव जी की बाणी में विशेष रूप से प्राप्त है। आपकी बाणी में सलोक, पउड़ी, दुपदे, चौपदे, असटपदी, पड़ताल, सोलहे, सवैये, वार, बारह माहा, रुती, थिती, वार, पहरे, काफी, सद, अंजुली, अलाहुणी, करहले आदि कितने ही काव्य तथा गायन के रूप प्राप्त हैं। आपकी संगीत में गहरी पैठ थी। आप गायन-प्रक्रिया द्वारा बाणी का उच्चारण करते थे।[३]

श्री गुरु अरजन देव जी को सिक्ख रागियों की प्रथा आरंभ करने का श्रेय प्राप्त है।[४] श्री गुरु नानक देव जी से लेकर श्री गुरु अरजन देव जी तक परंपरागत रूप में मुसलमान रबाबी (मीरासी, डूम) ही कीर्तन किया करते थे, क्योंकि मीरासी लोग राग-विद्या में निपुण हुआ करते थे। श्री गुरु नानक देव जी के साथी भाई मरदाना जी थे। भाई मरदाना जी के बाद उनका सुपुत्र भाई शहजादा था। उसके बाद भाई सत्ता-भाई बलवंड ने कीर्तन परंपरा जारी रखी। ये दोनों भाई श्री हरिमंदर साहिब, श्री अमृतसर में भी कीर्तन करते थे।[५] उन दिनों ध्रुपद शैली का प्रचलन था। भाई सत्ता-भाई बलवंड ने भी ध्रुपद शैली के आधार पर गुरबाणी का गायन प्रारंभ किया।[६] काफी मान-सम्मान होने के कारण इनमें अहंकार आ गया, जिस कारण गुरु जी ने खुद सारंदा पकड़कर संगत को कीर्तन करने के लिए हुक्म दिया। इनमें से बाबा बुड्ढा जी व भाई गुरदास जी प्रमुख थे। सिक्खों द्वारा कीर्तन करने की परंपरा चल पड़ी। गुरु जी ने स्वयं सिक्खों को रागबद्ध कीर्तन की उत्कृष्ट शिक्षा दी। इस प्रकार पहली बार संगत-कीर्तन की शुरूआत हुई। इसके अलावा भाई मुकंद, भाई झांझू व भाई किदार भी गुरु जी के सम्मुख कीर्तन करते थे।[७]

*असिस्टेंट प्रोफेसर, संगीत एवं नृत्य विभाग, कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय, कुरुक्षेत्र-१३६११९; मो. ९७२९५-६०००१

श्री गुरु अरजन देव जी ने सबसे अधिक बाणी-रचना की। आपके २३१३ शबद श्री गुरु ग्रंथ साहिब में दर्ज हैं। आपने अपनी बाणी को ३० रागों में बद्ध किया है। आप रागदारी संगीत में निपुण थे। धुनों और राग के प्रति अपने विचार प्रकट करते हुए आपने कहा है कि जो धुन अथवा राग गाया जाए उसमें 'ओअंकार' के प्रति प्रीति प्रदर्शित होनी चाहिए :

ओअंकारि एक धुनि एकै एकै रागु अलापै ॥
(पन्ना ८८५)

एक बार कश्मीर को जाते हुए अकबर बादशाह और संसार-प्रसिद्ध गायक तानसेन ने भी गुरु जी का कीर्तन-दरबार सुना और वे बहुत प्रभावित हुए।[८]

श्री गुरु ग्रंथ साहिब में रागबद्ध बाणी का 'सिरी' राग से आरंभ किया गया है और समापन 'प्रभाती' पर किया गया है। श्री गुरु अरजन देव जी ने जब श्री गुरु ग्रंथ साहिब की बाणी संपादित की उस समय सारे देश में दुखों की शाम, (संध्या, सायं) बनी हुई थी। 'सिरी' राग सायं के समय का राग है और सायं-काल के अंधेरे के पश्चात् 'प्रभात' की किरणें नींद भरे नयनों को जगा देती हैं। इस उद्देश्य को लेकर ही 'सिरी' राग को आरंभ में और 'प्रभाती' राग को अंत में रखा होगा।[९]

श्री गुरु अरजन देव जी की मान्यता थी कि कीर्तन करने से मन को शांति मिलती है, इसलिए गुरु जी ने कीर्तन करने वालों को "भलो भलो रे कीरतनीआ" कहकर पुकारा है और कहा है कि तुम धन्य हो जो कीर्तन द्वारा प्रभु का गुणगान करते हो।[१०]

श्री गुरु अरजन देव जी ने श्री गुरु ग्रंथ साहिब के रागों को समय के अनुसार पांच कोटियों में विभाजित किया है, जिन्हें उन्होंने 'पांच चौंकियां' का नाम दिया है। इनमें से दो चौंकियां-- 'आसा की वार' व 'सो दरु की चौंकी' श्री गुरु नानक देव जी के समय से ही चली आ रही थीं।[११] इन चौंकियों के बारे में जानने से पहले यह जान लेना आवश्यक है कि चौंकी किसे कहते हैं। गुरमति संगीत में कीर्तनी जत्थे को चौंकी कहते हैं। चौंकी में कम से कम ४ गायक होते हैं। एक जत्थेदार, दो स्वर रचाने वाले (सहायक) तथा चौथा तबले वाला। प्राचीन समय में हर चौंकी के प्रारंभ में पहला शबद राग में आलाप के साथ गाया जाता था और शेष शबद अपनी मर्जी से गाये जाते थे, परंतु अब रागी सिंघ इस मर्यादा को कम ही पूर्ण कर पाते हैं।

"सो दरु तेरा केहा सो घरु केहा" शबद आसा राग में गाया जाता है। प्राचीन समय में रागी और रबाबी संगीत के महान आचार्य होते थे। बुजुर्ग बताते हैं कि भारतवर्ष के संगीतकार श्री हरिमंदर साहिब के रागियों और रबाबियों से मुकाबला करते हुए हिचकिचाते थे।[१२]

रागों की समयानुसार पांच कीर्तन-चौंकियां इस प्रकार हैं :-

१. आसा की वार की चौंकी : इसका समय प्रात:काल ३:०० से ६:०० बजे तक है। इसके अंतर्गत इन रागों का गायन किया जाता है-- आसा, सोरठि, रामकली, भैरउ, प्रभाती, गउड़ी, गंधारी। राग सोरठि सामान्यत: रात में गाया जाता है, परंतु 'आसा की वार' की चौंकी में इस राग में कुछ शबद गाये जाने की प्रथा है।

२. अनंद की चौंकी : 'आसा की वार' की चौंकी के पश्चात् 'अनंद की चौंकी' होती है। इसका गायन रामकली राग में किया जाता है। इसका समय सुबह ६:०० से ९:०० बजे तक है। राग रामकली के अतिरिक्त इसे अग्रलिखित रागों में

गाया जाता है-- गूजरी, टोडी, सूही, तुखारी, बिलावल आदि।

३. *चरण कमल की चौंकी :* इसे 'बिलावल की चौंकी' भी कहा जाता है। इसमें सबसे पहले बिलावल राग में शबद-गायन किया जाता है। तत्पश्चात् उस समय से संबंधित रागों का गायन किया जाता है। इसका समय सुबह १०:०० से ३:०० बजे (दोपहर) तक का है। इसमें अग्रलिखित रागों का गायन किया जाता है-- बिलावल, माझ, वडहंस, गौंड, सारंग, बसंत, माली गउड़ा, टोडी, गूजरी, देवगंधारी, सूही आदि। राग बसंत, बसंत ऋतु में दिन अथवा रात में किसी भी प्रहर में गाया जा सकता है।

सो दरु की चौंकी : इसका समय सायं ४:०० बजे से ७:०० बजे तक है। यह सूर्यास्त का समय है, जिसे संधिप्रकाश का समय भी कहा जाता है। इसे अग्रलिखित रागों में गाया जाता है-- सिरी, धनासरी, जैतसरी, बैराड़ी, मारू, आसा आदि। राग 'मारू' अधिकतर अन्तयेष्टि क्रिया के अवसर पर गाया जाता है।

५. *सुखआसन या कलिआण की चौंकी :* इसका गायन समय शाम ७:०० बजे से आरंभ होता है। इसमें सबसे पहले राग कलिआण और कानड़ा के शबद गाये जाते हैं। इसके पश्चात् अन्य रागों के शबद गाये जाते हैं। अंत में 'कीरतन सोहिला' का पाठ किया जाता है। इस चौंकी में अग्रलिखित राग गाये जाते हैं-- कलिआण, कानड़ा, सोरठि, तिलंग, नटनाराइण, केदारा, मलार, जैजावंती, आसा आदि।

राग 'मलार' को वर्षा ऋतु में किसी भी समय गाया-बजाया जाता है।[१३] श्री गुरु अरजन देव जी ने अपने बाणी-गायन में १७ घरों का प्रयोग किया है जिससे गुरु जी की संगीत में योग्यता का पता चलता है। यहां 'घरों' से तात्पर्य तालों से है जिसका प्रयोग श्री गुरु ग्रंथ साहिब में मिलता है।

श्री गुरु अरजन देव जी ने बहुत अधिक संख्या में बाणी रची। ऊपर दी गई चौंकियों से हमें यह ज्ञात होता है कि राग 'आसा' तीन चौंकियों में गाया जाता है। श्री गुरु अरजन देव जी ने यह राग सर्वकालिक माना है अर्थात् इस राग का गायन बिना किसी समय-बंधन के किया जा सकता है। जिस प्रकार उत्तर भारतीय संगीत पद्धति में प्रातःकालीन राग होते हुए भी 'भैरवी' राग को सर्वकालीन मानने की प्रथा है, राग 'आसा' की स्थिति भी कुछ इसी प्रकार की है।[१४]

संदर्भ-ग्रंथ सूची :

१. संगीत समीक्षा, डॉ. डी. एस. (नरूला), पृष्ठ ११०
२. आदि ग्रंथ दरशन, प्रो. प्यारा सिंघ पदम्, पृष्ठ ४५
३. श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी दा साहितिक इतिहास, डॉ. तारण सिंघ, पृष्ठ ३८४
४. Sikh Secred Music, Page 24
५. सिक्ख धरम अते संगीत, डॉ. ए. एस. (गोयल), पृष्ठ ६३,६४
६. संगीत समीक्षा, डॉ. डी. एस. (नरूला), पृष्ठ ११०
७. सिक्ख धरम अते संगीत, डॉ. ए. एस. (गोयल), पृष्ठ ६३,६४
८. उपरोक्त, पृष्ठ ८
९. सिक्ख धर्म का मार्ग, प्रो. बचन सिंघ 'बचन', पृष्ठ ४५
१०. पंजाब की संगीत परंपरा, गीता पैन्तल, पृष्ठ १२१
११. उपरोक्त, पृष्ठ १२३
१२. श्री हरिमंदर साहिब दे रागी, रबाबी, ज्ञानी किरपाल सिंघ, गुरमति प्रकाश, मासिक पत्रिका, अगस्त, १९८८, पृष्ठ ५१
१३. पंजाब की संगीत परंपरा, गीता पैन्तल, पृष्ठ १२५
१४. उपरोक्त, पृष्ठ १२५



सिक्ख इतिहास का गौरवमयी कांड : मोर्चा गुरु का बाग

-पांधी ननकाणवी*

अंग्रेज सरकार द्वारा महंत नारायण दास की आड़ तले सिक्ख कौम को सबक सिखाने के लिए गुरुद्वारा जन्म-स्थान श्री गुरु नानक देव जी, ननकाणा साहिब में २० फरवरी, १९२१ ई. को जिस ढंग से दो सौ के लगभग शूरवीर सिक्खों के खून से होली खेली गई उससे सरकार की प्यास बुझने की बजाय और भी भड़क उठी थी। जल्द ही श्री दरबार साहिब, श्री अमृतसर की चाबियां प्राप्त करने के मुद्दे पर सिक्ख पंथ तथा अंग्रेज सरकार के मध्य सीधा मुकाबला हो गया, जिसमें सरकार को लज्जित होना पड़ा। अंग्रेज सरकार अकाली लहर अथवा गुरुद्वारा सुधार लहर को कुचलने के लिए पवित्र गुरुधामों तथा उससे संबंधित जायदादों पर काबिज़ अय्याश महंतों की पीठ थपथपाने लग गई, जिसके फलस्वरूप गुरु के बाग के मोर्चे की आरंभता हुई।

श्री अमृतसर से लगभग २० कि. मी. की दूरी पर गांव घुक्केवाली में श्री गुरु अरजन देव जी तथा श्री गुरु तेग बहादर साहिब की याद को समर्पित दो पावन धाम स्थित हैं, जिनके नाम पर काफी ज़मीन लगी हुई है। यह पावन स्थान 'गुरु का बाग' के नाम से विख्यात है। १९२०-२१ ई में इस ज़मीन पर कीकर (बबूल), झाड़ियां आदि उगी हुई थीं जो सामूहिक रूप से महंत सुंदर दास के कब्जे में थीं। यह महंत सारे इलाके में अपनी अय्याश रुचियों के कारण बहुत बदनाम हो चुका था। इलाके भर की सिक्ख संगत की मांग पर शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी ने इलाके के प्रसिद्ध पंथ सेवक स. दान सिंघ विछोआ को इन दोनों गुरुद्वारा साहिबान के प्रबंध में सुधार लाने के लिए नियुक्त किया। स. दान सिंघ ने महंत को प्रेरित किया कि वो केवल एक स्त्री के साथ गुरमति मर्यादानुसार अनंद कारज करवाकर घर-गृहस्थी बसा ले और अमृत छककर सिंघ सज जाये; दोनों पावन गुरुधामों की सेवा एक पवित्र कार्य समझकर करे। महंत ने इस सुझाव को स्वीकार कर लिया और ईशरी नामक एक स्त्री के साथ अनंद कारज करवा लिया तथा श्री अकाल तख़्त साहिब पर उपस्थित होकर दोनों पति-पत्नी ने अमृत भी छक लिया। दोनों के नाम जोगिंदर सिंघ व गिआन कौर रखे गए।

साका श्री ननकाणा साहिब में अंग्रेज सरकार की सिक्खों के प्रति विरोध भरी नीति को सूंघकर महंत ने पुन: अपने व्यवहार में परिवर्तन कर लिया। इसे मुख्य रखकर पंथक जत्थेबंदी शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी ने स. दान सिंघ विछोआ को फिर हुक्म किया कि वो दोनों गुरुधामों एवं उनसे सम्बंधित जायदाद को अपने नियंत्रण में ले ले और इलाके की संगत के सहयोग से गुरुधामों की सेवा-संभाल करे। यह देखकर महंत का हृदय घबराया और उसने शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के साथ संधि कर ली। शर्तों के अनुसार महंत के गुज़ारे के लिए १२० रुपए मासिक और श्री अमृतसर में रिहायश के लिए एक मकान भी खरीदकर दिया गया। इस प्रकार दोनों पावन गुरुधाम और सम्बंधित गुरु के बाग वाली ज़मीन स्वाभाविक ही पंथक कब्जे में आ गई। जल्द ही महंत ने अंग्रेज ज़िला अधिकारियों की उकसाहट से कथित

गुरुधामों को अपने अधिकार में लेने के लिए हाथ-पैर मारने आरंभ कर दिए जिन पर अब तक शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी का अधिकार था। इस पर सिक्खों एवं ज़िला अधिकारियों के मध्य मुकाबला आरंभ हो गया। पांच सिक्ख 'गुरु का बाग' में से लंगर के लिए जब लकड़ियां काटने के लिए गए तो ये पांचों सिक्ख पुलिस द्वारा गिरफ्तार कर लिए गए। मि. डनट, डिप्टी कमिश्नर श्री अमृतसर ने इन पांचों सिक्खों को छः-छः महीने कैद तथा जुर्माने की सज़ा सुनाई। इस गिरफ्तारी को हर तरह से जायज़ ठहराने के लिए मि. बी. टी. (असिस्टेंट सुप्रिंटेंडेंट ऑफ पुलिस) खुद महंत के पास गया और शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के विरुद्ध रिपोर्ट प्राप्त की। यह थी एक चुनौती, जो अंग्रेज हाकिमों ने महंत की आड़ तले सिक्ख कौम को दी थी। इसके उत्तर में पंथक नेताओं ने पांच सिक्खों का एक अन्य जत्था स. सरमुख सिंघ 'चमक' के नेतृत्व में भेजकर अंग्रेज हाकिमों को यह बात स्पष्ट कर दी कि 'गुरु का बाग' वाली ज़मीन पंथ के अधिकार में है तथा लंगर के लिए लकड़ियां काटना उनका अधिकार है। इस जत्थे को भी पुलिस ने पहले गिरफ्तार किया, फिर पूछताछ करके कि जत्थे भिजवाने में किसका हाथ है आदि बातों का पता लगाकर छोड़ दिया। इस प्रकार गुरु के बाग की ज़मीन पर अपना हक जताने के लिए सिक्ख गिरफ्तारियां देने लग गए। सिक्ख कौम के अधिकार को मीयां फज़ल हुसैन, सदस्य पंजाब कौंसिल ने भी स्वीकार किया था। मीयां साहब के अनुसार, "शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी ने ३१ जनवरी, १९२१ ई. को 'गुरु का बाग' का कब्जा महंत सुंदर दास से ले लिया था, मगर सरकार (अंग्रेजी) ने अकाली लहर को खत्म करने के लिए 'गुरु का बाग' में बाधा उत्पन्न की थी।"

अंग्रेज सरकार की इस धक्केशाही के विरुद्ध समूह सिक्ख पंथ में क्रोध की ज्वाला भड़क उठी। २०/२२ अगस्त, १९२१ ई. को गुरुद्वारा मंजी साहिब के दीवान हाल में शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के अगुओं ने अंग्रेज हाकिमों की इस धांधली के विरुद्ध समूह सिक्ख जगत से शांतिपूर्ण गिरफ्तारियां देने की अपील की और इस प्रकार बाकायदा मोर्चे का आरंभ हो गया। पुलिस भी अपने हाकिमों के इशारे पर सिक्खों पर अपना दमन-चक्र चलाती रही।

२६ अगस्त, १९२२ ई. को 'गुरु का बाग' में भी एक दीवान सजाया गया। दीवान के पश्चात् ३६ सिक्खों का एक जत्था 'गुरु का बाग' में से लकड़ियां काटने के अधिकार को उचित साबित करने के लिए आगे बढ़ा ही था कि पुलिस ने सिक्खों को अपनी लाठियों से बहुत ज्यादा पीटा। इस घटना ने जलती पर तेल डालने का काम किया। समूह पंथ में विद्रोह की भावना जाग उठी।

२६ अगस्त, १९२२ ई. को ही सारी स्थिति पर विचार करने के लिए शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी ने श्री अकाल तख़्त साहिब पर एक एकत्रिता बुलाई। इस एकत्रिता में भारी मात्रा में संगत हाज़री भर रही थी। ठीक उसी समय डिप्टी कमिश्नर, श्री अमृतसर ने एक पर्ची अपने चपरासी के हाथ भिजवाई, जिसमें लिखा हुआ था कि शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के प्रमुख अगुओं के गिरफ्तारी के वारंट जारी हो चुके हैं, इसलिए वे गिरफ्तार होने के लिए खुद श्री दरबार साहिब परिसर से बाहर आ जाएं। श्री गुरु ग्रंथ साहिब के हजूर अरदास करके, हुकमनामा तथा कड़ाह प्रसाद प्राप्त करके पंथक नेताओं ने जैकारों की गूंज में खुद को गिरफ्तारी के लिए पेश किया। जत्थे में प्रमुख अगुआ इस प्रकार थे-- स. बहादर महिताब सिंघ

(प्रधान), भगत जसवंत सिंघ (महासचिव), स. नराइण सिंघ बैरिस्टर (सचिव), प्रो. साहिब सिंघ (उप सचिव), स. सुरमुख सिंघ (झबाल), मास्टर तारा सिंघ, स. रवेल सिंघ, बाबा किहर सिंघ पट्टी आदि। इन नेताओं को प्रण दिलाया गया कि वे पूर्ण रूप से शांतचित्त रहकर खुद को गिरफ्तारी के लिए पेश करेंगे। अत: ऐसे ही किया गया।

इस प्रकार सिक्खों के जत्थे श्री अकाल तख़्त साहिब पर उपस्थित होते; जत्थेदार श्री अकाल तख़्त साहिब, श्री गुरु ग्रंथ साहिब की हजूरी में सिक्खों से यह आदेश कर देते कि वे हाकिमों द्वारा दिखाई हर किस्म की भड़काहट, उकसाहट तथा मारपीट के बावजूद वे पूर्णत: शांत रहेंगे और 'गुरु का बाग' पर पंथक अधिकार मनवाकर ही दम लेंगे, चाहे कि इस कार्य को सम्पूर्ण करने के लिए वे शहीदियां ही क्यों न प्राप्त कर जाएं।

देश भर में आज़ादी के लिए संघर्षशील जमातों, विशेषत: 'नेशनल कांग्रेस' तथा 'खिलाफत तहरीक' के नेताओं ने ऐसे शांतमयी जत्थों पर बी. टी. के हुक्म से पुलिस द्वारा पशुओं की भांति की गई मारपीट को घृणा की दृष्टि से देखा। देश भर में हिंदुओं, मुसलमानों, ईसाइयों आदि धर्मों एवं जाति के लोगों ने सिक्खों के साथ सहानुभूति प्रकट की और क्रूरता भरे ढंग से मार खाने के बावजूद भी शांतमयी रहने की प्रशंसा की तथा अंग्रेज हाकिमों की दमन-नीति की जी भरकर निंदा की। समूची कौमी प्रेस ने सिक्खों की सहनशीलता की तारीफ़ की। देश भर के पत्रकारों तथा नेताओं ने सिक्खों के जत्थों को बुरी तरह मार खाते हुए अपनी आंखों से देखा और आंसू बहाए। ये आंसू प्रकट करते हैं कि 'वाहिगुरु-वाहिगुरु' जपते सिक्खों पर हुआ जुल्मो-सितम अपनी सारी सीमाएं लांघ चुका था। मि. बी. टी. (ए. एस. पी.), मि. लाब, मि. जैकफरसन (एस. पी.) आदि के हुक्म से सिक्खों को लाठियों से इस हद तक मारा जाता कि वे मार खाते-खाते लहू-लुहान हो जाते और अंत में बेहोश होकर गिर पड़ते। बी. टी. के हुक्म से सिक्खों को पवित्र केशों से पकड़कर घसीटा जाता और फिर बेहोश हो चुके गुरु के सिक्खों को लातें मारी जातीं। उनको ऐसी हालत में गंदे पानी वाले तालाबों में फेंक दिया जाता। धन्य हैं गुरु के वे सिक्ख जिन्होंने बी. टी. की मार बर्दाश्त करके अपने प्रण को हर हाल में निभाकर दिखाया। इस अवसर पर पंडित मदन मोहन मालवीय, हकीम अजमल ख़ान, लाला दुनी चंद (प्रधान, पंजाब कांग्रेस), मलक लाल खां, मियां मुहम्मद शरीफ, डॉ. याकूब बेग (खिलाफत कमेटी), स्वामी श्रद्धानंद, कुमारी लज्यावती, पादरी एंड्रयूज, श्रीमती सरोजनी नायडू, सर जुगिंदर सिंघ, भाई जोध सिंघ, प्रो. रुचि राम साहनी, स. अमर सिंघ (लायल गज़ट) आदि प्रमुख अगुआ, सुधारक एवं पत्रकार भी पधारे। उन्होंने सिक्ख जत्थों को शांतिपूर्ण ढंग से 'वाहिगुरु-वाहिगुरु' जपते हुए, पुलिस से मार खाते हुए अपनी आंखों से देखा और वे आंसू भर-भर रोए। पंडित मालवीय ने मि. लाब (ए. एस. पी.) के आगे सिक्ख सत्याग्रही जत्थों पर बेवजह सितम ढाने का ज़ोरदार शब्दों में विरोध किया और जलियां वाला बाग, श्री अमृतसर में एक जलसा करके सिक्ख कौम के हक में अपनी आवाज़ बुलंद की। ३ सितंबर, १९२२ ई. को खैरदान (श्री अमृतसर) की मसजिद में मुसलिम भाइयों ने भी सिक्खों की उनके अपने मकसद में कामयाबी की दुआ मांगी। यह मोर्चा १४ सितंबर, १९२२ ई से १७ नवंबर, १९२२ ई तक चला। लायलपुर के एक ऊंचे-लंबे, सुंदर नौजवान जत्थेदार प्रिथीपाल सिंघ ने पुलिस की जालिमाना मार के कारण २ अप्रैल, १९२४ ई. को शहीदी

प्राप्त की। दो अन्य हलवाह पिता-पुत्र सिक्ख-- स. भगत सिंघ व स. तारा सिंघ भी निर्दोष ही पुलिस के जुल्म का शिकार होकर शहीदियां प्राप्त कर गए।

पंथक नेताओं के मुकद्दमे में डीफेंस के रूप में पंडित मदन मोहन मालवीय खुद पेश हुए। मोर्चे के रौंगटे खड़े करने वाले हालात जब उन्होंने मजिस्ट्रेट के रूबरू दर्शाए तो कहते हैं कि श्रोताओं के साथ-साथ मजिस्ट्रेट की आंखें भी भर आई थीं। १४ मार्च, १९२३ ई. को सिक्ख पंथक नेता जेल से बाहर आ गए। सरकार ने सर गंगा राम को मध्यस्थ बनाकर 'गुरु के बाग' की ज़मीन महंत से उसे ठेके पर दिलाकर पुलिस हटा ली। इस प्रकार सिक्ख पंथ उस ज़मीन पर स्थाई रूप से काबिज हो गया और सिक्ख सत्याग्रही रिहा होकर श्री अमृतसर पहुंच गए तथा मोर्चा समाप्त हो गया।

आल इंडिया कांग्रेस कमेटी ने जहां सिक्ख पंथ के साथ अपनी सहानुभूति प्रकट की वहीं अंग्रेज हाकिमों की निर्दयता को जनसमूह के सामने प्रकट करने के लिए १७ सितंबर, १९२२ ई. को एक जांच-समिति का गठन भी किया, जिसमें श्री निवास आइसर (भूतपूर्व एडवोकेट जनरल), जे. एम. सेन गुप्ता (बैरिस्टर कलकत्ता), पादरी एस. पी. स्टोक्स (कोटगढ़, शिमला), श्री अभयंकर (बैरिस्टर नागपुर) तथा प्रो. रुचि राम साहनी आदि सदस्य लिए गए। इस समिति ने ११० व्यक्तियों के बयान लिए और ३५२ पृष्ठों पर आधारित एक रिपोर्ट भारतीय लोगों के सामने पेश की। जांच-समिति के निर्णय के अनुसार, "सरकार (अंग्रेजी) राजनीतिक कारणों के आधार पर अकाली आंदोलन को कुचलने के लिए बेचैन थी, मगर अकालियों ने 'वाहिगुरु-वाहिगुरु' कहते हुए पुलिस की लाठियों के बावजूद कठोर सितम एवं उकसाहट को सहारा। अकालियों के पास कोई हथियार या लाठियां नहीं थीं। उन्होंने कृपाण के इस्तेमाल का इरादा भी नहीं किया, क्योंकि कृपाण को अकाली अपना धार्मिक चिन्ह समझते हैं।"

उपरोक्त रिपोर्ट ३ जनवरी, १९२४ ई. को प्रकाशित की गई और भारत से बाहरी देशों में भी भेजी गई तथा सरकार अंग्रेजी के कथित कानून की धज्जियां उड़ाई गईं।

उपरोक्त जांच-समिति के आगे जिन व्यक्तियों ने अपने बयान दिए, उनमें से कुछेक ही पाठकों की नज़र किए जा रहे हैं। ये समूह बयान पुस्तक 'अकाली लहर' पर आधारित हैं।

प्रो. जोध सिंघ एम. ए. के बयान के अनुसार, "मैंने दो बार मार पड़ती अपनी आंखों से देखी है। प्रथम बार एक सितंबर को गुमटाला पुल पर, जिसके सम्बंध में ४ सितंबर के 'खालसा' में "गुमटाला पुल पर मार-- घोड़ों के नीचे रौंदना" के शीर्षक तले ख़बर प्रकाशित हुई। वहां घुड़सवार पुलिस का अधिकारी मौजूद था। उसने गालिबन् अपने आदमियों को हुक्म दिया कि वे अकालियों के ऊपर से गुज़रें। दो घोड़े उनके ऊपर से गुज़र गए।"

भाई मोहन सिंघ 'वैद्य' के शब्दों के अनुसार, "हमने देखा कि पुलिस केशों, हाथों, पैरों से पकड़कर सिक्खों को तालाबों एवं गड्ढों में फेंकती है। दो-तीन मिनट के बाद पंडित मालवीय जी वहां आ गए। उनकी आंखों में आंसू थे। उन्होंने अपने रुमाल से जख़्मियों के मुंह पोंछे। उसके बाद जख़्मियों को लारियों में फेंकना शुरू किया गया। हमने भरी आंखों से यह दृश्य भी देखा। पुलिस ने सिंघों के गुप्त अंगों पर भी चोटें मारी थीं। मारपीट के समय सिंघ 'सतिनाम वाहिगुरु' का जाप जपते थे और उनको किसी ने कड़वा वचन नहीं कहा।"

"... हमारे देखते ही देखते पांच अकालियों

का जत्था कीकर काटने वाली जगह पर पहुंचा। पुलिस ने बड़ी बेरहमी से जत्थे को मारा; दाढ़ी एवं केशों को नोचा। पुलिस ने कइयों की छाती पर चढ़कर उनको ज़ख्मी किया। अकाली मार खाकर कई बार उठते रहे और पुलिस हर बार उनको मारती रही। सर जुगिंदर सिंघ तथा पं. मालवीय जी इस दृश्य को देखकर सहन न कर सके। वे शीघ्र ही वापिस लौट गए। प्रो. रुचि राम साहनी, स. बखतावर सिंघ, एम. एल. सी., मैं तथा तीन-चार अन्य सरदार मारपीट का दृश्य देखकर रोते रहे।"

रायज़ादा हंस राज (बैरिस्टर), प्रधान कांग्रेस कमेटी, जलंधर ने यूं बयान दिया, "मेरी मौजूदगी में ११ अकालियों को मारा गया। मैंने उनको बड़े ध्यान से देखा। उनसे शांति भंग होने का कोई भय नहीं था। जब उनको पीटना शुरू किया गया, उनके हाथ जुड़े हुए थे और वे 'सतिनाम वाहिगुरु' का जाप कर रहे थे। वे मार खाकर गिर पड़ते थे। जब पुन: खड़े होते थे तो फिर पीटे जाते थे। मैंने उनके मुंह से 'सतिनाम वाहिगुरु' के बिना कोई शब्द नहीं सुना। वे 'हाय' तक नहीं कहते थे। मि. बी. टी. तथा उसके साथियों द्वारा मारपीट करते देखकर मेरे सामने श्री एंड्रयूज़ (पादरी) की आंखों में से आंसू निकल गए। अकालियों को इस तरह मारा जाता था जैसे पागल कुत्ते को मारा जाता है।"

श्री ज्ञान चंद मनपाल, सहायक संपादक 'वंदे मातरम्', लाहौर के शब्दों में-- "२ सितंबर को पांच बजे शाम को जत्था राजासांसी के पास रोका गया। यह १०० सिंघों का जत्था था। मि. जैकफरसन तथा बी. टी. के साथ ३० पुलिस के आदमी थे। पुलिस ने जत्थे को घेरा डाल लिया तथा मारपीट शुरू कर दी। जत्था ज़मीन पर बैठा हुआ था। पुलिस ने सिंघों के सिर, पेट, छाती तथा पीठ पर लाठियां मारीं। मि. बी. टी. ने दो-तीन आदमियों को लातें मारीं। सख़्त मार खाने के कारण जत्थे के कई सिंघ बेहोश हो गए। जो भी आदमी उठा उसे फिर मारा गया। जो आदमी सड़क के किनारों पर पड़े हुए थे उनको भी मारा गया। जत्थे के ज़ख्मी तथा बेहोश सिंघों को दाढ़ी, केशों तथा लातों से पकड़कर, घसीटकर, सड़क के दोनों तरफ के खेतों में फेंका गया था। घायलों को उठाने से पहले पंडित मालवीय जी वहां पहुंच गए। उन्होंने घायलों को बड़े ध्यान से देखा। पंडित जी को बहुत दुख हुआ और उनकी आंखों में आंसू आ गए। उन्होंने कहा, "शैतान यहां काम कर रहे हैं। आखिर, इनको दुख उठाना ही पड़ेगा।" मैंने देखा कि मारपीट के बाद पुलिस के आदमी हंस रहे थे। गुरु का बाग में अकालियों पर जो अत्याचार हुआ उसे जुबान बता नहीं सकती। पुलिस का व्यवहार पशुओं जैसा था और सिंघों का देवताओं वाला। मारपीट के समय अकालियों में परमेश्वर का निवास तथा पुलिस में शैतान बसता था।"

श्री अनंद नारायण, सहायक संपादक, 'ट्रिब्यून', लाहौर ने अपने बयान में इस प्रकार कहा, "अकाली मार खाने के लिए तैयार थे। अकालियों ने पुलिस के साथ कोई धक्का नहीं किया, बल्कि पुलिस ने ही उन्हें रोका। इस पर वे जमीन पर बैठ गए। वे शबद पढ़ रहे थे। पुलिस ने उन्हें घसीटकर सड़क से अलग कर दिया। कइयों को मारा भी गया। कई बैठे हुओं की इतनी मारपीट की गई कि वे बेहोश हो गए।"

श्री के संतानम (बैरिस्टर) जनरल सेक्रेटरी, पंजाब सरकार ने यह कहा, "अकालियों ने शांतमयी का प्रण लिया है। इसका लोगों तथा सरकार को पता है। वे इस प्रण पर कायम हैं। पुलिस पांच तथा छ: फुट की लाठियों द्वारा

उनको मारती है। लाठी बड़ा खतरनाक हथियार है। जब पुलिस अकालियों की दाढ़ी तथा केश नोचती है तो वो सिक्खों का धार्मिक अपमान करती है। मैंने किसी अकाली को मार से जान बचाते हुए नहीं देखा। पुलिस उनके मुंह, छाती, पीठ तथा गुप्त अंगों पर चोट करती है। यह बात बड़ी मुजरिमाना तथा न भूलने वाली है। मैंने पुलिस द्वारा कोई जुबानी तंबीह (चेतावनी) करते हुए नहीं सुना। पुलिस की मारपीट बहुत निर्दयता वाली है। मैं समझता हूं कि अकालियों में भगवान बसता है और पुलिस में पशुवृत्ति की ताकत है। मैंने कोई सरकारी फैसला ऐसा नहीं देखा जिसके द्वारा यह पता चलता हो कि बाग के वृक्ष महंत के हैं, जिन्हें काटने के लिए अकालियों को मना किया गया है।"

लाला दीना नाथ, संपादक 'देश' ने कहा, "मैंने देखा कि जब अकाली धरती पर पड़े हुए थे, पुलिस वाले उनको लातें मारते थे। मि. बी. टी. की मौजूदगी में बेहोश आदमियों को भी लातें मारी जाती थीं। मैंने एक पुलिस वाले को देखा कि वो बेहोश अकाली को केशों से पकड़कर घसीटता था। यह सारा दृश्य आदि से अंत तक बड़ा जालिमाना था। मैंने हकीम अजमल खां को अपने पास बैठे रोते हुए देखा है। हकीम जी के बिना स्वामी श्रद्धा नंद, प्रो. रुचि राम साहनी, लाला दुनीचंद, के. संतानम, मलक लाल खां (गुजरांवाला) तथा कुमारी लज्यावती (प्रिंसीपल, कन्या महाविद्यालय, जलंधर) भी वहीं मौजूद थे।"

स. अमर सिंघ, संपादक 'लायल गज़ट' लाहौर के शब्दों के अनुसार, "सरकार अकाली लहर को महंतों की आड़ में दबाना चाहती है, क्योंकि वो इसे आधी राजनीतिक लहर समझती है। यह बात सरकारी बयानों से प्रकट है। मैं कभी-कभी अफ्सरों तथा कौंसिल के सदस्यों के साथ बातचीत करता रहता हूं। उनकी बात से यह बात प्रकट होती है। जब मैंने 'गुरु का बाग' में मार पड़ती देखी तो मैं रो पड़ा। मि. लाब (ए. एस. पी.) ने एक अकाली के गले और सिर पर जूतों सहित पैर रखा। केश सिक्खों के लिए पवित्र हैं। यह देखकर हमारे जज़बात भड़क उठे। हमने दुहाई दी कि इस तरह मत करो। यदि सिक्खों के केश नोचे जाएं तो वे धर्म तथा अपने गुरु का अपमान समझते हैं।"

उपरोक्त तथ्यों के आधार पर यह कहा जा सकता है कि 'गुरु का बाग' के मोर्चे में शामिल समूह गुरसिक्खों ने सरकार अंग्रेजी की पुलिस की वहशियाना मारपीट तथा सितम के बावजूद 'सतिनाम वाहिगुरु' के धुनें उच्चारण करते हुए जिस सहनशीलता, जब्त, हठ एवं त्याग का सबूत दिया है उसकी हिंदोस्तान भर के लोगों ने एक-स्वर होकर भरपूर प्रशंसा की तथा अपने दिल का दर्द आंसुओं के माध्यम से प्रकट किया था। इस मोर्चे की विजय से हमारा आज़ादी-आंदोलन कई कदम आगे जा बढ़ा था। सिक्ख इतिहास का यह गौरवमयी कांड सदा सिक्ख जनसमूह के स्वाभिमान को झकझोरता रहेगा। गुरसिक्खों की इस अज़ीम कुर्बानी के आगे हमारी आने वाली नस्लों का भी सिर झुकता रहेगा। पंडित मेला राम 'वफ़ा' (संपादक, 'वंदे मातरम', लाहौर) ने इन शेयरों के माध्यम से अपनी श्रद्धा प्रकट की है :

तेरी कुर्बानियों की धूम है, आज इस ज़माने में,
बहादुर है अगर कोई, तो वो तू अकाली है।
बड़ी तारीफ के काबिल, तेरी हिम्मत-ओ-जुर्रत,
जद्दोजहद आज़ादी में, तूने जान डाली है।
किया है ज़िंदा तूने, रिवायते-गुजिश्ता को,
सितमगरों से तूने कौम की, इज्जत बचा ली है।
जालिमों की लाठियां तूने सही, सीना-ए-सपर होकर,
लुत्फ इस पै-कि लब पे, शिकायत है न गाली है।



शहीद स. करतार सिंघ सराभा

*-डॉ. मनमोहन सिंघ**

लुधियाना ज़िले के गांव सराभा में सरदार मंगल सिंघ (गरेवाल) के घर जन्मे स. करतार सिंघ सराभा बचपन से ही विचारशील थे। बचपन में ही सिर से पिता का साया उठ जाने के बाद स. सराभा को उनके दादा जी ने संभाला। साल १८९६ ई. में जन्मे स. सराभा ने १४ वर्ष की आयु में ही मालवा खालसा हाई स्कूल, लुधियाना से दसवीं की कक्षा पास की। अगली शिक्षा के लिए दादा जी ने अपने पोते को अमेरिका भेजना ही उचित समझा।

इन्हीं दिनों बहुत-से हिंदोस्तानी जो रोज़गार के लिए अमेरिका व कनाडा में पहुंचे हुए थे, उन्हें बहुत-सी मुश्किलों का सामना करना पड़ रहा था। यहां हिंदोस्तानियों के साथ रंग, नस्ल व गुलाम होने के भेदभाव के कारण दुर्व्यवहार किया जाता था। हिंदोस्तानियों को अपने आत्म सम्मान व गुलामी का एहसास होने लगा इसलिए उन्होंने 'गदर' नाम की एक पार्टी बनाई। स. सोहन सिंघ भकना को इस पार्टी का प्रधान व लाला हरदयाल को सचिव चुना गया। स. करतार सिंघ सराभा ने अपने हिंदोस्तानी मज़दूरों के साथ कार्य करना शुरू कर दिया। उन्होंने सारे हिंदोस्तानी मज़दूरों को देश को आज़ाद करवाने की शिक्षा दी।

विदेशियों की धरती पर वे हर पल यही सोचते कि मेरे देश की पहचान क्या है? मेरा सभ्याचार क्या है? मेरी भाषा कौन-सी है? इन सारे सवालों को बहुत धक्का उस दिन लगा जब उनके घर आई एक औरत ने सवाल किया कि " स. करतार सिंघ! तुम्हारे देश का झंडा कौन-सा है?" स. करतार सिंघ सराभा आशंका में फंस गये कि कौन-सा बताएं; यूनियन जैक मेरे देश का झंडा नहीं है।

वे जिस महफिल में जाते गोरे लोग उन्हें **'ब्लैक बास्टर्ड', 'ब्लैक कुली'** या **'निकट्ठा हिंदू'** कहकर डंक मारते। स. सराभा बहुत उदास रहने लग गये। इस आयु में उदासी व्यक्ति को किसी भी दिशा में ले जा सकती है। स. सराभा ने इस उदासी को तंदरुस्ती की तरफ मोड़ा। वे इंकलाबी देश-भक्तों की मीटिंगों में जाने लगे। गोरे लोगों द्वारा मारे गये ताहने उन्हें हर वक्त बेचैन रखते। सेनफ्रांसिस्को में गदर पार्टी के दफ्तर में वे बाबा सोहन सिंघ भकना, बाबा हरनाम सिंघ टुंडीलाट, बाबा प्रिथी सिंघ आज़ाद व लाला हरदयाल के साथ बैठकर हिंदोस्तान की समस्याओं पर विचार करते। पार्टी द्वारा निकाले गये अख़बार 'गदर' के लिए वे कविताएं लिखने लगे। कविताओं वाला बहुत सारा कार्य स. सराभा व स. हरनाम सिंघ टुंडीलाट ही करते थे। लेख लिखने का कार्य लाला हरदयाल के जिम्मे था। सारा पर्चा हस्तलिखित ही होता था। स्टेंसिल काटकर साईक्लों स्टाईल पर्चा खुद मुकम्मल करने की जिम्मेदारी भी स. सराभा की ही थी।

'गदर' का प्रथम अंक पहली नवंबर १९१३ ई. को पाठकों के पास पहुंचा। इंकलाबी जद्दोजहद

***८८९, फेज़-१०, मोहाली-१६००६२*

को आर्थिक रूप से आज़ाद करने के उद्‌देश्य से स. सराभा ने एक जहाजी कंपनी में नौकरी कर ली। वहां रहकर ही उन्होंने जहाज चलाने व उसकी मरम्मत करने का कार्य सीखा। इसका शायद पहला कारण यह था कि स. सराभा अंग्रजों के साथ लंबी लड़ाई लड़ने का प्रबंध कर रहे थे। जब कामागाटामारू जहाज अंग्रेजों ने कनाडा की बंदरगाह पर नहीं लगने दिया तब स. सराभा बाबा गुरदित्त सिंघ को जापान मिलने के लिए आये थे। स. सराभा उस समय अमेरिका में रह रहे भारतीयों के हरदिल अज़ीज नेता बन चुके थे। स. सराभा व उनके साथियों ने फरवरी, १९१४ ई में स्टाफसन में तिरंगा झंडा भी फहराया था। प्रथम विश्व युद्ध के समय जब अंग्रेज बिलावाड़ में फंसे हुए थे, गदर पार्टी ने उस समय लोहा गर्म देखकर उस पर चोट मारनी उचित समझी। कुछ नौजवानों का दल इंकलाब लाने के लिए भारत भेजा गया। इन नौजवानों में शहीद स. करतार सिंघ सराभा, स. बंता सिंघ सघेवाल, स. हरनाम सिंघ टुंडीलाट व स. हरनाम सिंघ कहरी आदि थे। इन इंकलाबियों का स्वागत करने के लिए 'इंडिया सेफटी एक्ट' पहले ही बाहें फैलाए बैठा था। स. सराभा इस एक्ट की आखों में धूल झोंककर बच निकले।

विष्णु गणेश पिंगले के बाद बनारस साजिश केस में फंसने वाले सचिन्द्र नाथ सान्यवाल ने भी अपनी सरगर्मियों का मुख्य केंद्र पंजाब को ही बनाया हुआ था। रास बिहारी बोस के आने से तो सारा पंजाब ही इंकलाबी रंग में रंग गया। इंकलाबी लहर को तेज करने के लिए पैसे की ज़रूरत थी। पंजाब के अच्छे खाते-पीते ख़ानदान के लोग इंकलाबियों को पकड़वाने में लगे हुए थे। पार्टी ने फैसला किया कि इस किस्म के धनाढ्य ख़ानदानी गद्‌दारों के धन पर हाथ साफ करना कोई गुनाह नहीं।

गदर पार्टी ने पंजाब तथा आस-पास के दूसरे राज्यों की फौजी छावनियों में फौजियों से सम्पर्क बनाकर उन्हें विद्रोह में शामिल होने के लिए प्रेरित किया। लाहौर व फिरोज़पुर की छावनियों में कुछ पलटने विद्रोह करने के लिए तैयार हो गईं। इंकलाबी पार्टी द्वारा २१ फरवरी, १९१५ ई का दिन बगावत के लिए निश्चित किया गया। इनके साथियों में से ही एक जो पुलिस द्वारा भेद लेने के लिए पार्टी में शामिल था ने पुलिस को सूचना दे दी। स. सराभा को गिरफ्तार करके लाहौर लाया गया, जहां उन पर लाहौर साजिश केस का मुकदमा चलाया गया। अंत: १९ नवंबर १९१५ ई को फांसी पर चढ़कर स. सराभा ने अपना नाम देश-भक्त शहीदों में लिखवा दिया। जेल के रिकार्ड के अनुसार फांसी वाले दिन स. करतार सिंघ सराभा के मुखड़े पर नूर था, भार आम दिनों से १० पौंड अधिक था। ऐसे महान शहीद को हमारी इन शब्दों द्वारा श्रद्धांजलि है :

शहीदों को चिताओं पर लगेंगे हर बरस मेले,
वतन पे मिटने वालों का यही बाकी निशां होगा।



आज़ाद हिंद फौज के संस्थापक
जनरल सरदार मोहन सिंघ

*-स. रणवीर सिंघ**

नेता जी सुभाष चंद बोस विदेशों में देश की आज़ादी के लिए प्रयास करते हुए कंटीली राहों पर पग बढ़ा रहे थे तभी उनकी उन राहों को सरल और सफलतम बनाने में जो योगदान एक साधारण सैनिक से जनरल बनने वाले सरदार मोहन सिंघ ने दिया उसे देश कभी नहीं भुला सकता।

सन् १९०७ में सरदार तारा सिंघ अपने पहले बच्चे के पिता बनने से २ महीने पहले ही वाहिगुरु को प्यारे हो गए। उनकी पत्नी बीबी हुकम कौर अपने मायके चली गई और वहीं बच्चे को जन्म दिया, नाम रखा गया-- मोहन सिंघ। ४ वर्ष का होते-होते उसकी मां भी परलोक सिधार गई। माता-पिता विहीन बालक ने नाना और मामा के रहमों कर्म पर जैसे-तैसे दिन काट कर दसवीं कक्षा पास कर ली। आगे पढ़ने का मन था परंतु कई मज़बूरियां घेरे हुई थीं। अत: पढ़ाई छोड़ एक-दो छोटी-मोटी दुकानों पर नौकरियां की। काम मन पसंन न होने पर छोड़ कर नाना के घर वापिस आ गए। नाना श्री तख़त मल ज़ैलदार थे। अच्छे रसूख वाले व्यक्ति थे मगर रोग-ग्रस्त थे। मामा फौज में थे। स. मोहन सिंघ ने भी फौज में जाने का मन बना लिया। फिरोज़पुर छावनी में १०/१४ रेजीमेंट के मेजर फैटन के चैलेंज को स्वीकार कर सभी परीक्षाएं जब पास कर ली तो गनर बन गए। फिर तो प्रत्येक टेस्ट में खरे उतर कर, आगे ही बढ़ते गए और प्रमोशन पाते गए। दिसंबर, १९४० में सिकंदराबाद में प्लाटून कमांडर स. हरनाम सिंघ (रंधावा) की बहन बीबी जसवंत कौर से शादी कर ली।

दिसंबर १९४१ में जापान से युद्ध की घोषणा कर दी गई। सिंगापुर मोर्चे पर जाने के आदेश मिल गए। सिंगापुर जाने का मतलब उन दिनों मौत का फतवा समझा जाता था। विदाई के समय सब के चेहरों पर इन्हें लेकर एक उदासी-सी झलक रही थी। स. मोहन सिंघ उस समय मेजर बन चुके थे। स. गुरबख़श सिंघ (ढिल्लों) और हसन उनकी कंपनी में अफसर थे मेजर स. मोहन सिंघ को वे बड़ा प्यार करते और सम्मान देते थे। वे भी बड़े उदास थे। मेजर स. मोहन सिंघ ने सबको ढांढस बंधाते हुए कहा "घबराओ मत! जापानियों और अंग्रेजों ने ऐसी कोई गोली ईज़ाद नहीं की जो मुझे मार सके। मैं आपको विश्वास दिलाता हूं कि आज मैं जिन अग्रेजों के लिए लड़ने जा रहा हूं, उन्हें ही भारत से बाहर खदेड़ने के लिए मुझे इनसे लोहा लेना पड़ेगा।" वो दिन दूर नहीं रहा जब ये शब्द अपनी सत्यता की कसौटी पर खरे उतरे।

९ दिसंबर, १९४१ को मित्रराष्ट्रों की सेना ने जापानी सेना से थाईलैंड पर आमने-सामने युद्ध में टक्कर ली। जापानियों ने मलाया को पूरी तरह अपने कब्जे में कर लिया और अंग्रेजी फौज बुरी तरह हार गई, मेजर सरदार मोहन सिंघ की प्लाटून को भारी क्षति उठानी पड़ी। सब सैनिक इधर-उधर बिखर गए। इनकी एक

*मु. पो. मांदी नारनौल, ज़िला महेन्द्रगढ़ (हरियाणा)

टुकड़ी जोकों के दलदल में फंस गई और उसने सबका खूब खून पिया। मौत के मुंह से किसी तरह निकल कर वे एक कस्बे में पहुंचे। वहां रह रहे भारतीय मूल के निवासी सौदागरदीन ने इनकी बड़ी मदद की। उसी से पता चला कि जापानी फौजें बड़ी तेजी से भारत की ओर बढ़ती जा रही है। भारत में भी उस समय अंग्रेजों से देश को आज़ाद करने की कोशिशें अपने चरम पर थी। मेजर सरदार मोहन सिंघ ने सौदागरदीन से गुप्त बात-चीत कर एक जापानी अफसर को लिखा, "अंग्रेज हमारे देश और आप जापानियों दोनों के दुश्मन हैं। इस हिंदोस्तान की आज़ादी के लिए आपसे मिल कर एक रणनीति पर वार्ता करना चाहते हैं। हमारी यह रणनीति आपकी भी मददगार होगी।" पत्र एक विश्वस्त व्यक्ति के हाथ जापानी कमांडर को भेजा गया। उसका उत्तर भी तुरंत मिल गया।

१४ दिसंबर, १९४१ की रात मेजर सरदार मोहन सिंघ ने अपने सलाहकारों से मिलकर पूरी योजना पर विचार-विर्मश किया। दूसरे दिन सुबह दो मोटर कारें इनके अड्डे पर पहुंची। द्विभाषिए के जरिए बात चीत हुई और १८ दिसंबर को जापानी सेना के कमांडर-इन-चीफ यामाशीमा से समझौते की व्यवस्था हुई, जिसमें यकीन दिलाया गया कि हिंदोस्तान से अंग्रेजों को खदेड़ने में जापान निःस्वार्थ भाव से सहायता करना चाहता है। मेजर सरदार मोहन सिंघ ने प्रस्ताव रखा कि भारत की सेना अलग से स्थापित की जाए और उसका नाम 'आज़ाद हिंद फौज' रखा जाए, जो जापानियों के साथ कंधे से कंधा मिला कर लड़े। अन्य कुछ शर्तों के साथ १७ फरवरी, १९४२ ई को जापान द्वारा बनाए गए ७३ हज़ार भारतीय बंदी मेजर सरदार मोहन सिंघ के हवाले कर दिए गए। इधर-उधर भटके सैनिक भी मिल गए और उसी दिन आज़ाद हिंद फौज की स्थापना कर दी गई और मेजर सरदार मोहन सिंघ को जनरल मान लिया गया।

सरदार मोहन सिंघ जनरल बनने के बाद महसूस करने लगे कि जब तक हिंदोस्तान की अपनी फौज के पास अच्छा असला नहीं होगा, और वो अंग्रेजों के साथ अग्रिम मोर्चे पर टक्कर न लें तो यह भारत के लिए शोभा जनक नहीं रहेगा। जनरल सरदार मोहन सिंघ ने यह सोच कर श्री रास बिहारी बोस से विचार-विमर्श करके एक कोर कमेटी बनाकर भारत को अंग्रेजों की दासता से आज़ाद कराने का बीड़ा उठाया। सफलता मिल भी रही थी पर जापानी इससे नाखुश थे। वे भारतीयों को अपनी कठपुतली समझते थे। जापानी कर्नल ईवाकुरू ने इस कार्यवाही का विरोध किया और कहा जनरल साहब, हमें आप पर एतबार है और भारत को अंग्रेजों से मुक्त कराने के मंसूबे पर विश्वास भी है, मगर आपको जापानियों की निगरानी और उनके आर्डर के मुताबिक ही काम करने को मंजूर करना होगा।"

जनरल सरदार मोहन सिंघ ने तत्काल खड़े होकर ईंट का जवाब पत्थर से देते हुए कहा कि "हिंदोस्तान की आज़ादी का मसला हमारा अपना निजी मामला है, इसका जापानियों के साथ कोई सरोकार नहीं। जब तक हमें मैदान-ए-जंग में अपने ढंग से कूदने नहीं दिया जाता दुनिया की कोई ताकत हमें अपना फैसला लेने से डिगा नहीं सकती। हमें आपकी शर्तें मंजूर नहीं।" कर्नल ईवकुरू ने हुक्मरानों के रौब-दाब वाली मुद्रा में जापान सरकार का फैसला सुनाया, "आपको आज़ाद हिंद फौज" के जी. ओ. सी. के पद से हटाया जाता है। आपकी देश-भक्ति और वतन पर मर मिटने वाली और हर कुर्बानी देने की भावना की कद्र कर

आपकी जान बख़्शी जाती है। अब आप 'आज़ाद हिंद फौज' के जी. ओ. सी. नहीं रहे, केवल मोहन सिंघ हो।"

जनरल सरदार मोहन सिंघ को समुद्री अड्डे के पास 'पुंगाल प्वाइंट' पर एक झोपड़ी में ११ जापानियों की निगरानी में कैद कर लिया गया। उधर सुभाष चंद्र बोस हिटलर से मिलकर १३ मई, १९४३ को टोकियो पहुंचे और जापानी अधिकारियों से महत्त्वपूर्ण बातें की। फिर २ जुलाई, १९४३ ई को सिंगापुर पहुंचे। एक जापानी अफसर, जो मोटर गाड़ी लेकर आपकी झोपड़ी के पास आया था, अदब से इन्हें सुभाष चंद्र बोस के पास ले गया। चार घंटे तक बातचीत हुई। ढेर सारी बातें हुईं। नेता जी ने जापानियों पर दबाव डाला कि वे जनरल सरदार मोहन सिंघ को रिहा कर 'आज़ाद हिंद फौज' के सब जंगी कैदी उन्हें सौंप दें। द्वितीय युद्ध समाप्त हुआ। अंग्रेजों ने 'आज़ाद हिंद फौज' के जंगी कैदियों पर मुकद्दमे चलाए। ४ मई, १९४६ को जनरल सरदार मोहन सिंघ व अन्य कैदियों को जेल से रिहा कर दिया गया। १५ अगस्त, १९४७ को भारत स्वतंत्र हुआ।

एक साधारण सिपाही से देश की स्वतंत्रता के लिए 'आज़ाद हिंद फौज' की स्थापना कर जनरल बनने वाले सिक्ख जरनैल ८२ वर्ष की आयु में अपने पैतृक गांव जुगियाना (ज़िला लुधियाना) में २६ दिसंबर, १९८९ ई को परलोक गमन कर गये। 

कविता

कृपाण श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी की

उठी आवाज़-ए-हक पर्वत से थी, इक बार गोबिंद की।
ख़लाओं[1] में गूंजती है आज भी ललकार गोबिंद की।
पहाड़ों से अगर पूछोगे तो, सब कुछ बता देंगे,
इन्होंने आंख से देखी जो है, यलग़ार[2] गोबिंद की।
सर-ए-मग़रूर[3] को करके क़लम[4] ही म्यान में लौटी,
कभी नाकाम लौटी ही नहीं, कृपाण गोबिंद की।
बजाए ईंट इसमें सर लगे हैं दो-दो बच्चों के,
नहीं टूटी, न टूटेगी कभी, दीवार गोबिंद की।
सियासत जानती है सब, मगर खामोश रहती है,
कि कलगी के लिए मौज़ूं[5] है तो, दसतार गोबिंद की।
इधर चमकी, उधर चमकी, यहां दमकी, वहां दमकी,
कोई बर्क़-ए-तपां[6] थी, यह कृपाण गोबिंद की?
पहले सिक्ख, फिर खालसा बनकर 'पंछी' यह प्रण लें,
कि हम बे-दाग़ रखेंगे सदा, दसतार गोबिंद की।

१. ख़लाअ= धरती- आकाश के बीच का शून्य; २. यलग़ार= जवाबी हमला;
३. सर-ए-मग़रूर= अहंकारी का सिर; ४. क़लम= काटना
५. मौज़ूं= अनुकूल; ६. बर्क़-ए-तपां= आसमानी बिजली

-स. करनैल सिंघ (सरदार पंछी), जेठी नगर, मलेरकोटला रोड, खन्ना-१४१४०१ (लुधियाना) पंजाब, मोः ९४१७०-९१६६८

शहीदी साका बजबज घाट के नायक : बाबा गुरदित्त सिंह

*-सिमरजीत सिंह**

गतांक से आगे . . .

२३ जून, १९१४ ई को बाबा गुरदित्त सिंह ने अपने वकील के साथ फिर एक बार बातचीत की। वैनकुवर में बसते सिक्खों को पता चला कि जपानी जहाज़ की अगली किश्त का भुगतान करना बाकी है तो उन्होंने सिक्ख संगत से फौरन ११००० डालर इकट्ठा करके भुगतान कर दिया। कनाडियन सरकार ने सिक्खों की गतीविधियों का पता लगाने के लिए जासूस विलियम हॉपकिन्सन की सेवाएं ली। विलियम हॉपकिन्सन कोलकाता निवासी गोरे बाप तथा भारतीय मां का पुत्र था। इसको पंजाबी बोलने तथा लिखने की मुहारत हासिल थी। इसने जहाज़ के अंदर तालमेल पैदा करके डॉ. रघुनाथ को लालच देकर अपना एजंट कायम कर लिया। इसी तरह उसने अपनी घुसपैठ करके ज़िला होशियारपुर के गांव सिआण से आकर कनाडा में बसे स. बेला सिंह तथा कई अन्य लोगों को अपना साथी बना लिया। इसी दिन जहाज़ सेक्रेटरी स. उमराउ सिंह द्वारा वैनकुवर के बी. सी. को टैलीग्राम भेजी गई जिसकी एक नकल खालसा अख़बार लायलपुर को प्रकाशित करने हेतु भेजी गई। इस अनुसार,

"कामागाटामारू के भारतीय यात्रियों को नजायज़ रूप से जहाज़ में कैद कर रखा गया है। खाने-पीने का सामान एवं पानी लेने और कानूनी सहालकार व दोसतों को मिलने से रोका गया। ऐसे अनुचित व्यवहार तथा गैरकानूनी सलूक के विरुद्ध बड़े पैमाने पर रोषमयी सभा। हिन्दोस्तानी कभी भी इसको नहीं भूलेंगे तथा न ही माफ करेंगे। इसको व्यापक रूप में प्रसारित करें।"

२५ जून को वैनकुवर में यात्रियों द्वारा हेबियस कार्पस रिट दायर की गई। इसके बारे में १९ जुलाई के अख़बार माडर्न रिव्यू में ख़बर प्रकाशित हुई जिसके अनुसार,

"कामागाटामारू जहाज़ के यात्रियों द्वारा हेबियस कार्पस रिट दायर की गई थी परंतु उस अपील की सुनवाई विकटोरिया में होगी। उस दिन फैसला चाहे कोई भी हो, हारने वाली पार्टी को कनाडा की सुप्रीम कोर्ट में अपील करने का अधिकार होगा तथा प्रीवी कौंसिल पास भी की जा सकेगी। भारती यह महसूस करते हैं कि उनको नजायज़ तौर पर जहाज़ में कैद कर रखा गया है तथा बरतानवी नागरिक होने के कारण उनको हेबियस कार्पस रिट दायर करने का अधिकार है ताकि वह उनकी नजायज़ नज़रबंदी का मामला अदालत या जज के समक्ष रख सकें।"

५ जुलाई, १९१४ ई को पांच यात्रियों ने कुछ भारतीयों से जो कनाडा में रह रहे थे आवास अधिकारियों की कश्ती में मुलाकात की। जहाज़ में सवार बाकी यात्रियों ने इन पांचों को जहाज़ में लेने से इन्कार कर दिया। इसी कारण इन पांचों को कुछ दिनों के लिए कश्ती में ही रहना पड़ा।

६ जुलाई को इनको वापिस जहाज़ में लिया गया। ८ जुलाई को कनाडा सरकार द्वारा देश

**संपादक, गुरमति ज्ञान एवं गुरमति प्रकाश*

निष्कासन का हुक्म जारी कर दिया गया जिस अनुसार, "अदालत द्वारा कानून की वैधता को कायम रखते हुए, हिंदुयों को छोड़कर दिए हुए फैसले के अनुसार, वैनकुवर स्थित आवास अधिकारियों को निर्देश दे दिया गया है कि कामागाटामारू पर सवार यात्रियों के देश निष्कासन के लिए कार्यवाही की जाए।"

११ जुलाई को जहाज़ के कप्तान ने खुद फर्स्ट इंजीनियर, सेकिंड तथा फोर्थ मेट तथा पानी वाले के बिना अन्य सभी यात्रियों को तट पर जाने से रोक दिया। जासूस हॉपकिन्सन द्वारा दी रिपोर्टों के आधार पर सरकार ने जहाज़ में राशन-पानी जाने की पूर्ण तौर पर पाबंदी लगा दी। सिक्खों के दमदर्द कनाडा निवासी ज़िला श्री अमृतसर के नगर भिक्खीविंड के स. भाग सिंघ, गांव खुर्दपुर ज़िला जलंधर के भाई बलवंत सिंघ, गांव दलेर सिंघ वाला ज़िला मानसा के सरदार बतन सिंघ, स. हरनाम सिंघ साहरी तथा स. सुंदर सिंघ बाड़ियां को कनाडा सरकार अपने शत्रु समझने लग गई।

१८ जुलाई, १९१४ ई को जहाज़ के एजंट जोनसटोन ने वहां पहुंचकर जहाज़ की वापसी के बारे में विचार करनी चाही परंतु बाबा गुरदित्त सिंघ ने उनको मिलने से इन्कार कर दिया। जहाज़ में बंदी मुसाफिरों ने कनाडा सरकार के गवर्नर जनरल को तार द्वारा इंसाफ की मांग की। उन्होंने कहा कि वे पंजाबी सिक्ख किसान है तथा कनाडा में मेहनत करके अपना रुज़गार करने के लिए आये हैं। वे कनाडा के विकास में अपना योगदान डालने के लिए यहां पहुंचे हैं। ३५००० डालर खर्च करने के बावजूद भी उनको अपराधी कैदियों की तरह रखा जा रहा है। इस अपील का भी कोई असर न हुआ और रद्द कर दी गई।

१९ जुलाई, १९१४ ई को आवास अधिकारियों की 'सी लाईन' नामक कश्ती से १२५ पुलिस वालों सहित एक अन्य कश्ती जहाज़ के समीप लाई गई। सिपाहियों ने यात्रियों पर फायरिंग शुरू कर दी। इससे जहाज़ के यात्री भड़क उठे तथा उन्होंने जहाज़ में मौजूद कोयले से इन पर हमला कर दिया। यह लड़ाई २० मिनट तक चलती रही बाबा गुरदित्त सिंघ के अनुसार पुलिस अधिकारियों के साथ डॉ. रघुनाथ भी शामिल था जिसको बतौर जासूस बरतने के लिए कनाडा सरकार ने उतरने की आज्ञा दे दी। इसके साथ ही जासूस हॉपकिन्सन तथा रघुनाथ की जहाज़ पर कब्ज़ा करने की योजना फेल हो गई।

२१ जुलाई को एच. एम. एम. रेनबो जंगी जहाज़ कामागाटामारू के पास तैनात कर दिया गया। बहुत-से भारती जिनकी संख्या १०००० के करीब बताई जाती है, तट पर इकट्ठा होना शुरू हो गए थे । कनाडा सरकार ने रेनबो के कमांडर को निर्देश दिए कि वो अपने आदमी कामागाटामारू जहाज़ पर भेजे ता कि इनमें से गैर सिक्खों की संख्या कम की जा सके। देश निष्कासन की पालना न करने पर जहाज़ के मालिक तथा किराएदार के विरुद्ध भी कानूनी कार्यवाही शुरू कर दी जाए। शाम को वैनकुवर के गुरुद्वारा साहिब में दीवान सजाए गए जिसमें सख़्त रोष का प्रकटावा किया गया तथा प्रस्ताव पारित किया गया कि अगर जहाज़ पर गोली चली या कैदी मुसाफिरों के जान-माल का नुकसान हुआ तो वैनकुवर में बसते सिक्ख आगजनी करेंगे।

२२ जुलाई को मुसाफिरों की ज़रूरतों के अनुसार रसद पानी तथा तेल दिया गया। २२ जुलाई, १९१४ ई. को पायनियर में ख़बर प्रकाशित हुई।

"कामागाटामारू में सवार हिंदुयों (सिक्खों)

ने आज उन सौ हथियारबंद पुलिस वालों को पीटा जो जहाज़ में चढ़ने की कोशिश कर रहे थे। जहाज़ में से फेंके गए ईंट-पत्थरों से कई पुलिस वाले जख़्मी हो गए हैं जिन में पुलिस का मुखिया भी शामिल है। जहाज़ को तोरने की एक कोशिश सोमवार को की जाएगी। उटावा सरकार ने जंगी बेड़े रेनबो के कमांडर को निर्देष दिया है कि वे अपने आदमियों की टुकड़ी कामागाटामारू के पास भेजे जो कि गुरुवार को रवाना होगा। सरकार के देश निष्कासन के बारे में हुकम की तामील न करने के लिए कामागाटामारू के मालिक तथा किराएदार के विरुद्ध कानूनी कार्यवाई भी शुरू की है।"

२३ जुलाई को सुबह ५:०० बजे जहाज़ ने लंगर उठा लिया तथा रेनबो की निगरानी तले योहकामा की तरफ रवाना हो गया। २४ जुलाई को सुबह ८:०० बजे तक रेनबो की सख़्त निगरानी तले जहाज़ चलता रहा।

१५ अगस्त, १९१४ ई को यह योहकामा पहुंच गया। १८ अगस्त, १९१४ ई को योहकामा से रवाना होकर २० अगस्त को कोबे पहुंचा।

३ सितंबर को कोबे से रवाना हो गया। ५ सितंबर को भारती अंग्रेजी सरकार ने हुक्म जारी कर दिया कि विदेश से पहुंच रहे यात्रियों की जांच-पड़ताल की जाए। इस कार्य के लिए लुधियाना में कार्यालय भी खोल दिया गया।

१६ सितंबर को कामागाटामारू जहाज़ सिंघापुर पहुंच गया यहां जहाज़ एक दिन के लिए रुका। यहां ठहरने के समय भी १२ फौजी हथियारों से पूरी तरह लैस हो फौजी कश्ती में सवार होकर जहाज़ पर पूरी निगरानी रखते रहे।

२६ सितंबर, १९१४ ई को यह जहाज़ सुबह ६:२० मिनट पर हुगली नदी में प्रवेश कर २९ सितंबर को कोलकाता से कोई २६-२७ किलोमीटर दूर बजबज घाट पर पहुंच गया, यहां सारे जहाज़ की तलाशी ली गई तथा मुसाफिरों को गाड़ी द्वारा पंजाब जाने के आदेश दिए गए। १७ मुसलमान मुसाफिर सरकार का हुक्म मानकर गाड़ी में सवार हो गए। परंतु जुझारू सिक्ख श्री गुरु ग्रंथ साहिब के पावन स्वरूप सहित जलसे के रूप में कोलकाता की तरफ पैदल ही चल पड़े । रास्ते में उनको रोककर गाड़ी में सवार होने के लिए कहा गया। बाबा गुरदित्त सिंघ ने उनको दलील दी कि वह एक व्यापारी है तथा उसने कोलकाता जाकर जपानी कंपनी के साथ हिसाब-किताब करना है। इस बात पर अंग्रेजी अफसर का इनके साथ तकरार हो गया। बाबा जी के सात वर्षीय बेटे को रोते-बिलखते को सिपाही पकड़कर ले गया। अंग्रेज अफसर ईस्टवुड ने अपने पिस्तौल से गोली चला दी। एक गोली स. हरनाम सिंघ की दसतार में लगकर निकल गई। दूसरी गोली उदोनंगल गांव के स. ठाकर सिंघ के लगने से वह जख़्मी हो गए। मुसाफिरों में भगदड़ मच गई। इसी भगदड़ में किसी ने ईस्टवुड को पार बुला (मार) दिया।

पुलिस एवं फौज की टुकड़ियों ने उन पर गोली चलाई। फलस्वरूप निम्नलिखित मुसाफिर शहीद हो गए जिनकी सूचिका निम्नलिखित है :

नाम	*पिता का नाम*	*गांव*	*थाना*
१. स. सीहान सिंघ	स. सेवा सिंघ	कोट दाता	सरहाली
२. स. इंदर सिंघ	स. वीर सिंघ	सिदवां	राहों
३. स. अरजन सिंघ	स. लक्खा सिंघ	ढुड्डीके	जलंधर
४. स. लछमण सिंघ	स. देवा सिंघ	माणोचाहल	तरनतारन

५. स. नरैण सिंघ	स. बचन सिंघ	लोआगे देवा	जीरा
६. स. रूड़ सिंघ	स. लाभ सिंघ	माणूके	श्री अमृतसर
७. स. भजन सिंघ	स. अनोख सिंघ	राजोआणा	धनौला
८. स. चंनण सिंघ	स. काहन सिंघ	बजीरके	बरनाला
९. स. शिव सिंघ	स. महिताब सिंघ	नानके	तरनतारन
१०. स. रूड़ सिंघ	स. शेर सिंघ	मंगिआना	बाजेवाल
११. स. केहर सिंघ	स. झंडा सिंघ	खमाणो	
१२. स. ईशर सिंघ	स. बूवा सिंघ	मानकी सिद्धू	जगराउं
१३. स. इंदर सिंघ			
१४ स. टहिल सिंघ	स. गंडा सिंघ	रामवाला	सरहाली
१५ स. रतन सिंघ उर्फ़ करम सिंघ	स. बतन सिंघ	जमसेर	जलंधर
१६. स. मसता सिंघ	स. बिशन सिंघ	लील माजरी	राएकोट
१७. स. ककड सिंघ	स. राम सिंघ	पाखरी	बाजेवाल

३ लाशों की पहचान नहीं हो सकी। आर. के. मजूमदार (बंगाल) तथा दीनबंधु (उड़ीसा) ज़िंदा पकड़े गए परंतु बाद में पुलिस ने मार दिए थे।

२५ जख़्मी हुए जिनमें से इनके नाम उपलब्ध हैं : जनाब पीर बख़्श, स. बादल सिंघ, स. मंगल सिंघ, स. रला सिंघ, स. टहिल सिंघ, स. इंदर सिंघ, स. प्रभ सिंघ, स. इंदर सिंघ, स. हजारा सिंघ, स. बहादर सिंघ, स. मल सिंघ, स. सुंदर सिंघ, स. सुच्चा सिंघ, स. सुनेर सिंघ, स. गुरदित सिंघ, स. ब्रिजपाल सिंघ, स. बखतावर सिंघ, स. बिशन सिंघ, स. मुनशा सिंघ, स. दरबारा सिंघ, स. नारंग सिंघ हैं। बहुत-से पकड़ लिए गए। इन शहीदों ने देश में नयी चेतना पैदा कर दी।

बाबा गुरदित्त सिंघ अपने कुछ साथियों सहित वहां से बचकर निकलने में सफल हो गए। जिनके नाम हैं स. किरपा राम गांव मीनापुर, स. बरकत सिंघ गांव संतपुर, स. मुनशा सिंघ गांव ढोडा माजरा, स. राम सिंघ गांव अबूल, स. माया सिंघ गांव भडाना, स. बंता सिंघ गांव ठट्ठा, स. नंद सिंघ गांव बलोर, स. भाग सिंघ गांव समरा, स. संता सिंघ गांव कुरदी, स. गूना सिंघ गांव घलोटी, स. अरजन सिंघ गांव खिआला, स. वीर सिंघ गांव चंबल, स. आसू सिंघ गांव खोरदाता, स. चतर सिंघ गांव सरहाली, स. नरैण सिंघ गांव कारिआवाला, स. बुध सिंघ गांव तुंगवाल, स. शेर सिंघ गांव तुंगवाल, श्री करता राम गांव तुंगवाल, स. केहर सिंघ गांव सोता, स. पाखर सिंघ गांव जंडियाला, स. दलजीत सिंघ गांव कौनी, श्री बंसी लाल गांव तुंगवाल, स. साधा सिंघ गांव चूहड़चक्क, स. लाल सिंघ गांव खिआली, स. भगत सिंघ गांव सहिणा, स. हरमन सिंघ गांव ढोलन, स. पूरन सिंघ गांव चंन, स. संतोख सिंघ गांव कमालपुर, श्री गोडी राम गांव अचरबाल।

बाबा गुरदित्त सिंघ ने अपने दो साथियों समेत रात एक छंभ में बिताई। उनकी टागों से जोकें चिंबड़ी रहीं तथा वे तोड़-तोड़कर फेंकते रहे। प्रभात होते ही बाबा जी अकेले की किसी बसती की खोज में निकल पड़े। उनका प्रयोजन बंगाली लीडरों को मिलकर इस घटना की जानकारी देना था। वह सफल न हो सके।

एक बंगाली ने उनके लिए बंगाली पहरावे का प्रबंध किया जिसको पहनकर वह रेल द्वारा जगन्ननाथ पुरी को रवाना हो गए। रेल के सफर के दौरान सी. आई. डी. के सिपाहियों को शक होने पर आपने रेलगाड़ी में से छलांग लगा दी। आप पगडंडियों द्वारा जैपुर व मारवाड़ के इलाके में पहुंच गए। आप ने बंबई जाकर उच्चकोटि के लीडरों से मुलाकात करके आप-बीती बताई परंतु कोई भरोसे योग्य परिणाम न निकला।

बाबा गुरदित्त सिंघ ६ वर्ष गुप्तवास रहने के उपरांत ननकाणा साहिब के खूनी साके के बाद सामने आए। ननकाणा साहिब में श्री गुरु नानक देव जी का प्रकाश उत्सव पूरी श्रद्धा भावना से मनाया जा रहा था। आप मुख्य समागम से एक दिन पहले पहुंच गए तथा अपनी गिरफ्तारी का ऐलान कर दिया। आपको गिरफ्तार करके लाहौर जेल भेज दिया। लाहौर से बदलकर आपको डेरा गाज़ी खां जेल में बंद कर दिया गया। जहां से २६ दिसंबर, १९२२ ई. को रिहा कर दिया गया। बजबज घाट के साके में शामिल चार सिक्खों को गिरफ्तार करके भारत की पुरातन जेल डिगशेई (हिमाचल प्रदेश) में बंद रखने के बाद फांसी पर लटका दिया गया।

वापिस आकर बाबा गुरदित्त सिंघ फिर से राष्ट्रीय आंदोलन में जुट गए तथा कई बार कैद काटी। अंग्रेज सरकार द्वारा जासूस तथा मुखबरों को बड़े-बड़े इनाम देकर ज़मीन के मुरब्बे दिए गए थे। बाबा गुरदित्त सिंघ की अगुवाई तले गदरी बाबाओं ने बहुत-से मुखबरों को हॉपकिन्सन सहित उनके किए की सज़ा देकर मार डाला।

आप १९२६ ई. में स. सुरमुख सिंघ झबाल के जेल चले जाने के कारण शिरोमणि अकाली दल के कार्यकारी अध्यक्ष बने। १९२६ ई. में इंडियन नेशनल कांग्रेस के गुहाटी सेशन में ५० सिक्ख डैलीगेटों सहित रोष के रूप में सभा का त्याग किया क्योंकि सब्जेक्ट कमेटी ने अपने प्रस्तावों में नाभे के महाराजा रिपुदमन सिंघ को गद्दी से उतारकर अन्याय के बारे में उलेख करने का सुझाव नहीं माना था। १९३१ ई. से १९३३ ई. तक अपनी राजनीतिक गतिविधियों के कारण तीन बार जेल गए। १९३७ ई. में इन्होंने कांग्रेस की टिक्ट पर पंजाब लैजिसलेटिव एसेंबली का चुनाव लड़ा परंतु हार गए। बजबज घाट का गोलीकांड भारत की आज़ादी के लिए लड़ी गई लड़ाई की एक अहम घटना है जिससे प्रेरणा लेकर स्वतंत्रता-संग्राम ज्वलंत हुआ देश के लिए हुई कुर्बानी के साकों में बजबज घाट का उलेख भी सम्मान से किया जाता है। १९४७ ई. भारत की स्वतंत्रता के बाद सिक्खों ने शहीदों की यादगार बनाने का प्रयास किया। बजबज स्टेशन के पास १९५२ ई. में शहीदों की याद में एक स्मार्क कायम किया गया। २४ जुलाई, १९५८ ई. को बाबा गुरदित्त सिंघ अकाल चलाना कर गए। उस समय आप कोलकाता गए हुए थे। अगले दिन भारी इकट्ठ के रूप में बाबा जी के मृत शरीर को श्री अमृतसर लाया गया तथा उनके गांव सरहाली में अंतिम-संस्कार किया गया। गांव सरहाली में बाबा गुरदित्त सिंघ की याद में गुरुद्वारा बाबा राम सिंघ जी में एक निशान साहिब सुशोभित किया हुआ है। गांव में बाबा जी का पैत्रिक घर है जिसमें उनका पड़पोत्र स. बलजीत सिंघ चंडीगढ़ से कभी-कभी आकर रहता है। श्री गुरु सिंघ सभा कोलकाता द्वारा १९५२ ई. से १९६२ ई. तक संगत के सहयोग से शहीदी दिवस मनाया जाता रहा। १९६२ ई. के बाद यह जिम्मेवारी स्थानीय सिक्खों ने अपने कंधों पर उठा ली। १९६६ ई. में इन्होंने यहां शहीदों की याद में एक गुरुद्वारा

साहिब शहीद गंज कामागाटामारू का निर्माण करवाया। यहां हर वर्ष २७ से २९ सितंबर तक शहीदों की याद श्रद्ध-भावना से मनाई जाती है।

इस ऐतिहासिक घटना पर बहुत-से लेखकों ने अपनी कलम द्वारा रोशनी डाली। शौरोन पोलक ने सबसे पहले इस घटना पर नाटक लिखा। इनके बाद स. अजमेर रोडे, स. साधू बिनिंग ने भी इस घटना पर नाटक लिखे। सन २००४ ई में अली काजमी ने इस घटना के वृत्तांत की दुर्लभ पेशकारियां की। २३ जनवरी, १९८९ ई को कामागाटामारू जहाज़ की रवानगी की ७५ वीं वर्षगांठ के मौके पर वैनकुवर के गुरुद्वारा साहिब में यादगारी समागम किया गया। २३ मई, २००८ ई को ब्रिटिश कोलंबिया विधान सभा ने इस घटना के प्रति माफी का प्रस्ताव पारित कर अपनी भूल का इज़हार किया तथा ३ अगस्त को प्रधानमंत्री सटीफन हॉर्पर द्वारा इस घटना की माफी मांगी गई। १ मई २०१४ ई को कनाडा सरकार के डॉक विभाग द्वारा कामागाटामारू जहाज़ की आमद की १०० वीं वर्षगांठ के मौके पर डॉक टिकट जारी कर देश भक्तों के प्रति अपनी श्रद्धा अर्पित की गई है। सरहाली गांव वालों ने बाबा जी की याद में खेल कल्ब बनाया हुआ है। जिसमें हर वर्ष खेल मेला करवाया जाता है।

कविता

माता-पिता का उपकार

रे मनुष्य! क्यों भुला रहे हो, माता-पिता का उपकार?
माता-पिता की सेवा करके, मिल जाता है सुख अपार।
लाड़-प्यार से पाला-पोसा, अपनी भूख-प्यास को भूल।
पढ़ा-लिखा गुणवान बनाया, घर आंगन का सुंदर फूल।
माता-पिता हैं रब का रूप, बात यह कर लो स्वीकार।
माता-पिता की सेवा करके, मिल जाता है सुख अपार।
जब हम धरती पर आये तो दौलत साथ न आई थी।
महल, अटारी, कार, कोठियां, पास न फूटी पाई थी।
साधन जुटा दिये सब हमको सोचो समझो, करो विचार।
माता-पिता की सेवा करके मिल जाता है सुख अपार।
पास हमारे साधन सारे माता-पिता क्यों हैं दुखी?
ऐसे में अधिक दिनों तक, रह सकते नहीं हम सुखी।
कड़वा बोल न उनको बोलो, करो न कटुता का व्यवहार।
माता-पिता की सेवा करके, मिल जाता है सुख अपार।
हमें सुलाया था सूखे में, मां गीले में सोई थी।
जब संकट में हमको देखा, उसकी ममता रोई थी।
उसे ज़रूरत जब सेवा की, हमने कर दिया इंकार।
माता-पिता की सेवा करके, मिल जाता है सुख अपार।
माया-मद में आकर जो, माता-पिता का करते अपमान।
उनको भी तड़पाने वाली, बन जाती है उनकी संतान।
अच्छी संतान बन कर दिखलाएं, अच्छी का ही करें इंतज़ार।
माता-पिता की सेवा करके, मिल जाता है सुख अपार।
दुख सहना मां-बाप की खातिर, फर्ज है एहसान नहीं।
फर्ज के बदले फर्ज निभाना, यह कोई अभिमान नहीं।
सुख लेने व देने से ही, बनता है सुखी संसार।
माता-पिता की सेवा करके, मिल जाता है सुख अपार।

-स. अमरजीत सिंघ, १, राजेश्वर नगर, फेस-१ सामने आई टी पार्क, सहसत्रधारा रोड, देहरादून, मो ९४१२०५६६७२

भारत-स्वतंत्रता के असली हकदार कौन ?

*-स. सुरजीत सिंघ**

सूरा सो पहिचानीऐ जु लरै दीन के हेत ॥
पुरजा पुरजा कटि मरै कबहू न छाडै खेतु ॥
(पन्ना ११०५)

भारत को आज़ाद करवाने का प्रश्न एक कड़वा सत्य है। सन् १८५७ से १९४७ ई की लंबी अवधि में जिन भारतीयों ने अपना सब कुछ न्यौछावर करते हुए अपनी जान तक कुर्बान कर दी थी, केवल इसलिए कि किसी भी कीमत पर ब्रिटिश साम्राज्य के चंगुल से भारत सदैव के लिए स्वतंत्र हो जाये, अफसोस कि ऐसे निःस्वार्थ जांबाज लोगों को तो देश ने भुला ही दिया है और आज़ादी का श्रेय चंद कूटनीतिज्ञों एवं राजनीतिज्ञों को ही दिया जा रहा है। यह तो सरासर इतिहास के तथ्यों के साथ खिलवाड़ है और इतिहास की वास्तविकता एवं सच्चाई को ही गुमराह कर झुठलाया जा रहा है।

आजकल यदि किसी से संयोगवश पूछ ही लिया जाये कि भारत को आज़ाद किसने कराया था तो इतिहास की जानकारी न रखने वाले अर्थात् इतिहास के तथ्यों से सर्वथा अनभिज्ञ लोग कोई उत्तर न देते हुए भारत की आज़ादी के असली हकदार-भारत के शहीदों को भुलाकर अन्य का नाम सुना देते हैं। विशेषकर २६ जनवरी, १५ अगस्त, २ अक्तूबर को यह गीत अकसर सुनाया जाता है : दे दी हमें आज़ादी, बिना खड्ग, बिना ढाल। साबरमती के संत तूने कर दिया कमाल। यदि इतिहास की कसौटी पर विश्लेषण किया जाये तो इस गति के शब्द सत्यता के सर्वथा विपरीत हैं अर्थात् इतिहास से मेल नहीं खाते, सीधे शब्दों में कह दिया जाये तो मिथ्या ही है। "बिना खड्ग बिना ढाल" बिल्कुल गलत है, क्योंकि १८५७ ई से १९४७ ई के मध्य लाखों भारतीयों को स्वतंत्रता संग्राम में अपनी जान तक देनी पड़ी थी, अपना घर-परिवार त्यागना पड़ा था, जो कि इतिहास के आंकडों से प्रमाणित हो रहा है। फिर इतिहास के प्रमाणित आंकडों को कैसे झुठलाया जा रहा है?

सन् १८५७-१९४७ की जन-क्रांति एवं स्वाधीनता संग्राम में अमर शहीद बाबा बीर सिंघ नौरंगाबादी, बाबा महाराज सिंघ और बाबा राम सिंघ नामधारी का विशेष योगदान रहा है, बाबा राम सिंघ ने कूका लहर के अंतर्गत अंग्रेजी सरकार का बहिष्कार, असहयोग आंदोलन, स्वदेशी वस्तुओं को अपनाने, विदेशी गुलामी तोड़ने एवं गौ-रक्षण को जनजागरण का आधार बनाया था, क्योंकि उनकी प्रेरणास्रोत थी, श्री गुरु ग्रंथ साहिब की बाणी-- *"पहिला मरणु कबूलि जीवण की छडि आस ॥ होहु सभना की रेणुका तउ आउ हमारै पासि ॥"* अर्थात् परमार्थ हेतु मरने (मृत्यु) की इच्छा स्वीकार करते हुए, स्वार्थी-लोभी जीवन की आशा छोड़ जनसाधारण की सेवा एवं चरणों की रज के समान विनम्र जीवन-आराधना ही सफलता का सूत्र है। स्वाधीनता हेतु चल रही कूका लहर से भयभीत ब्रिटिश सरकार ने कुख्यात रेग्युलेशन एक्ट की विशेष

**५७-बी, न्यू कालोनी गुमानपुरा कोटा-३२४००७ (राज.) मो. ९४१३६-५१९१७*

धारा के अंतर्गत कूका संघर्ष को विद्रोह करार देकर पाश्विक एवं दंडात्मक तौर-तरीके अपनाने प्रारंभ कर दिये थे, किंतु कूका लहर रूपी जन आंदोलन शांत होने के विपरीत अंदर ही अंदर आग की तरह भड़कता चला गया। घबराकर अंग्रेजी सरकार द्वारा क्रांति के अग्रदूत बाबा राम सिंघ नामधारी को गिरफ्तार कर पाश्विक यातनाएं देने हेतु बर्मा जेल में ठूंस दिया गया। दृढ़ संकल्प वाले बाबा जी बंद जेल से ही जन-क्रांति की कूका लहर का निरंतर संचालन करते रहे। वह अभागा दिन भी आया जब क्रूर यातनाएं झेलते हुए बाबा राम सिंघ का २९ नवंबर, १८८५ को देहांत हो गया, किंतु भारत-आज़ादी की ज्वाला को तो जन-जन में उन्होंने जगा ही दिया था। कूका लहर के अन्य सिक्ख शूरवीरों को भूखे-प्यासे ही जेलों में बंद कर दिया गया। अंग्रेजी सरकार के कमिश्नर मिस्टर कॉवन के माफी मांगने के अनुरोध को पूर्णतया ठुकराते हुए उन्होंने श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी की बाणी का ऊंचे स्वर में जाप करना शुरू कर दिया--

"देह सिवा बरु मोहि इहै सुभ करमन ते कबहूं न टरों ॥
न डरो अरि सो जब जाइ लरो निसचै करि अपुनी जीत करों ॥"

क्रूर यातनाओं के दौर में कई शूरवीरों के हाथ-पांव काट दिये गये, जिन्होंने तड़प-तड़प कर अपने प्राण त्याग दिये। कइयों को ज़िंदा ही ब्रिटिश तोपों के मुंह के आगे बांध कर गोले दाग चिथड़े-चिथड़े कर शहीद कर दिया गया। आश्चर्य कि इन शूरवीरों ने मातृभूमि की रक्षार्थ खुशी-खुशी यह कहते हुए अपने प्राण न्यौछावर कर दिये कि हम श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के पुत्र हैं, जिन्होंने देश-धर्म की रक्षार्थ अपना पूरा परिवार कुर्बान कर दिया था। धन्य हो गई भारत-भूमि, जहां ऐसे सरबंसदानी महात्यागी, शूरवीर रणबांकुरे अवतरित हुए। त्याग एवं बलिदान से भारत-भूमि पर जो रक्त गिरता गया वह भविष्य के लिए अभिप्रेरक बन भारत-आज़ादी के लिए सिद्ध होता चला गया। तभी तो कहा जाता है :

जहां शहीदों का रक्त गिरता है, वहीं से उगता है हर सवेरा।
जहां जलाता है देह दीपक, वहां न आता फिर अंधेरा।

सन् १९१९ में रोलेट एक्ट के विरोध में श्री अमृतसर के श्री हरिमंदर साहिब से भारतीयों के समूह के समूह सिर पर कफन बांधकर निकलते थे, जिन्हें अंग्रेजी सरकार की क्रूर यातनाएं झेलनी पड़ती थीं। १३ अप्रैल, सन् १९१९ को बैसाखी वाले दिन श्री अमृतसर में जलियां वाला बाग में स्वतंत्रता संग्राम हेतु लगभग २५ हज़ार भारतीय एकत्रित हुए थे, जिसमें बूढ़े, नौजवान, स्त्री, पुरुष सभी थे। ब्रिटिश हकूमत के प्रतिनिधि जनरल डायर ने बिना चेतावनी दिये ही भीड़ पर गोली चलाने के आदेश दे दिये और तब तक गोलियों की बौछार होती रही जब तक समस्त गोलियां समाप्त नहीं हो गईं। इस प्रकार १३०० निहत्थे निर्दोष भारतीय शहीद हो गये, जिनमें से ७९९ अर्थात् ६० प्रतिशत केवल सिक्ख शूरवीर थे। अंग्रेजी साम्राज्य की गुलामी की ज़ंज़ीरें तोड़ने के लिये नेता जी सुभाष चंद्र बोस के नेतृत्व में बनी आज़ाद हिंद फौज के ४२ हज़ार सैनिकों में से २८ हज़ार अर्थात् ६७ प्रतिशत केवल सिक्ख सैनिक थे जो कि भारत के ऐतिहासिक आंकडों से प्रमाणित हो रहा है। प्रमाणित तथ्यों के अनुसार स्वतंत्रता हेतु कालापानी की उम्र

कैद भुगतने वाले २६४६ भारतीय स्वतंत्रता सेनानियों में से २१४७ अर्थात् ८१ प्रतिशत केवल सिक्ख शूरवीर थे। इसी प्रकार बंगाल राज्य के बजबज घाट पर ब्रिटिश सैनिकों की गोलियों से शहीद हुए एवं फांसी पर लटकाए गये भारतीयों में से अधिकतर स्वतंत्रता सेनानी सिक्ख ही थे।

अमर शहीद स. भगत सिंघ, चंद्रशेखर आज़ाद, स. ऊधम सिंघ इत्यादि अनेकानेक आज़ादी के दीवानों ने खुशी-खुशी फांसी के फंदों को अपने गले लगा लिया था, क्योंकि उनके हृदय में केवल भारत-आज़ादी की ज्वाला ही प्रज्वलित हो रही थी। इतिहास की सच्चाई को सामने लाना आवश्यक है। इतिहास साक्षी है कि आज़ादी की जन-क्रांति सदैव से खून मांगती आई है।

१९४६-१९४७ ई के भारत विभाजन के समय लाखों ही पंजाबी (विशेषकर सिक्ख समुदाय) लोग जीवन भर की कमाई पूंजी लुटाकर घर-बार छोड़कर नये बने पाकिस्तान से हिंदोस्तान आये थे, जिन्में से लाखों की गिनती में लोग रक्त-पात में शहीद हो गये। किसी को माता-पिता किसी को भाई-बहन, किसी को पुत्र-पुत्री के प्राणोत्सर्ग का दुख झेलना पड़ा था; किंतु आश्चर्य कि आज भारत-स्वतंत्रता के स्टार बन बैठे लोगों ने न वहां पहुंच कर पीड़ितों के जीवन और सम्पति को बचाने का प्रयास किया और न ही वे उनके दुख-दर्द के हमदर्द बने। जिनके त्याग एवं बलिदान से भारत आज़ाद हुआ उनका तो नाम समय की धूल में दबकर रह गया। जिनके खून एवं चिताओं की कीमत पर आज़ादी प्राप्त हुई थी, स्वार्थवश वो सब कुछ भुला दिया गया है। उनके प्रति नेत्रों से श्रद्धा के आंसू नहीं टपकते, क्योंकि आंखों में आस्था का पानी तो राज-सत्ता ने सुखा दिया है। जिह्वा पर स्वार्थी सत्ता ने ताला लगा दिया है, ऐसे में राष्ट्र के असली नायकों शहीदों को कैसे पुकारा समरण किया जा सकता है ? भला हो भारत-भूमि के अमर शहीदों का जो अपना खून देकर, "रंग दे बसंती चोला, मां मेरा रंग दे बसंती चोला" एवं "पगड़ी संभाल जट्टा पगड़ी संभाल ओए" गा सुनाकर उत्साहित होते रहे एवं उत्साहित करते रहे; जेलों में भूखे-प्यासे तड़पते रहे, कालेपानी की सजाएं काटते रहे, फांसी के फंदों पर झूलते रहे, ब्रिटिश तोपों के दागे गोलों से चिथड़े-चिथड़े होते रहे, शरीर पर लाठियों एवं बंदूकों की गोलियों की बौछार झेलते रहे, भारत-विभाजन की त्रासदी में अपनी एवं परिवार की पीड़ा एवं प्राणोत्सर्ग का दुख स्वीकारते रहे।

"चाह नहीं मैं सुरबाला के, बालों में गूंथा जाऊं।
चाह नहीं मैं पूजा की, थाली में ही शोभा पाउं।
मुझे तोड़ लेना वनमाली, उस पथ पर तुम देना फेंक।
मातृ-भूमि पर शीष चढ़ाने, जिस पथ जाएं वीर अनेक।"

यह कहना सर्वथा उचित होगा कि इसी जन-क्रांति के परिणामस्वरूप ही अंग्रेजों को हर पक्ष से भारत छोड़ने के लिए विवश होना पड़ा था और अंततः भारत को स्वाधीनता हासिल हुई थी। वर्णित तथ्यों एवं भारत के स्वाधीनता इतिहास के परिप्रेक्ष्य में मंथन कर निर्णय कीजिये कि आज़ादी दिलवाने के असली वीर कौन हैं ? वे जो सत्ता के समस्त सुख भोग रहे हैं अथवा वे जिन्होंने मातृ-भूमि भारत के लिए अपना सब कुछ न्यौछावर कर प्राणोत्सर्ग तक कर दिया था ?



गुरु साहिबान का मानवतावाद और आधुनिक संदर्भ में उसकी सार्थकता

-डॉ. जयभगवान गोयल*

गतांक से आगे . . .

वस्तुत : श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी मानववादी मूल्यों के संरक्षक एवं साहसी संत-सिपाही थे। अपने इस उद्देश्य को स्पष्ट करते हुए उन्होंने कहा कि उन्हें परमेश्वर ने धर्म की स्थापना करने के लिए, संतों का साथ देने के लिए दुष्कर्म करने वाले दुष्टों को पकड़-पकड़कर मारने के लिए तथा लोगों को कुबुद्धि से हटाने के लिए यहां भेजा है :

-हम इह काज जगत मो आए ॥
धरम हेत गुरदेव पठाए ॥
जहां तहां तुम धरम बिथारो ॥
दुसट दोखीअनि पकरि पछारो ॥ . . .
-धरम चलावन संत उबारन ॥
दुसट सभन को मूल उपारन ॥
जहां तहां तिह धरम चलायो ॥
अत्र पत्र कह सीस दुरायो ॥ (बचित्र नाटक)

इसलिए उनका युद्ध 'धर्म-युद्ध' था, क्योंकि उन्होंने जो भी युद्ध किए वे दीनों की रक्षा, संतों की पालना और दुष्टों के विनाश के लिए ही किए अर्थात् मानवतावाद की स्थापना और सुरक्षा के लिए ही उन्होंने शौर्य, पराक्रम, साहस और वीरता का प्रदर्शन किया। ये ऐसे धर्म-युद्ध हैं जो असत्य, अधर्म अन्याय, अत्याचार के विरुद्ध और सत्य, न्याय, धर्म की रक्षार्थ लड़े गए।

उस युग में हिंदुओं की दशा बड़ी शोचनीय थी। वे असहाय और निर्बल थे। शक्तिशाली यवन शासकों के नृशंस अनाचारों से वे आतंकित और भयभीत थे। उनके सामने जुबान खोलने की हिम्मत उनमें नहीं थी। भाई संतोख सिंघ ने उनकी इस शोचनीय स्थिति का वर्णन करते हुए लिखा है:

हिंदू कोइ न कहि सकै तुरकन तेज बिसाल।
परमेशर पति राखई सिमरहिं दीन दयाल।
(नानक प्रकाश : पू. ३२:४)

श्री गुरु तेग बहादर साहिब ने निर्भयता का मंत्र दिया था। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने साहस, शौर्य, दृढ़ता, तेजस्विता, उत्साह का संबल देकर निरीह और सुप्त लोगों में अदम्य साहस का संचार कर दिया और उनमें विरोधी को उस की मांद में जाकर ललकारने की शक्ति भर दी। इस तरह गुरु जी ने तुरकों के तेज के दृढ़ तरु की जड़ें उखाड़ फेंकी, मलेच्छों का सर्वनाश कर दिया और अमानवीयता को विनष्ट करके मानवतावाद को प्रतिष्ठित किया।

उस युग की धार्मिक दशा भी चिंताजनक थी। अनेक मतों, पंथों और संप्रदायों का जाल फैला हुआ था। तरह-तरह की साधना-पद्धतियां प्रचलित थीं। महंत और मठाधीश मुल्लां और मुलाने, धर्म का प्रयोग शोषण के औजार के रूप में कर रहे थे। वे पारलौकिक सुख के स्वप्न दिखाकर लोगों के इहलौकिक सुख भी छीन रहे थे। वाह्याचारों, पाखंडों, आडंबरों, मिथ्याचारों, कर्मकांडों और चमत्कारपूर्ण साधना-पद्धतियों ने धर्म के वास्तविक स्वरूप को ढक लिया था। धार्मिक संकीर्णता, कट्टरता और अंधविश्वास से धर्म पंगु और गतिहीन हो गया था। उस युग में प्रचलित विभिन्न धर्मों, संप्रदायों, मतों आदि की साधना-पद्धतियों के मिथ्यात्व और निरर्थकता पर आक्षेप करते हुए श्री गुरु नानक देव जी

ने सत्य का मार्ग दिखाने की चेष्टा की है।

गले में माला डालकर, मस्तक पर तिलक लगाकर, संध्या करने, मूर्तियों की पूजा करने, समाधि लगाने आदि को श्री गुरु नानक देव जी ने फोकट कर्म कहा है :

पड़ि पुसतक संधिआ बादं ॥
सिल पूजसि बगुल समाधं ॥
मुखि झूठ बिभूखण सारं ॥
त्रैपाल तिहाल बिचारं ॥
गलि माला तिलकु लिलाटं ॥
दुइ धोती बसत्र कपाटं ॥
जे जाणसि ब्रहमं करमं ॥
सभि फोकट निसचउ करमं ॥ (पन्ना ४७०)

उनके अनुसार आदर्श ब्राह्मण वही है, जो ब्रह्म का चिंतन करता है :

सो ब्राहमणु जो ब्रहमु बीचारै ॥
आपि तरै सगले कुल तारै ॥ (पन्ना ६६२)

भक्त के लिए आकाश आरती का थाल है; सूर्य, चंद्र, तारे मोती हैं, मलय चंदन की सुगंधित धूप, वायु चंवर तथा वन के सभी पुष्प पूजा के फूल हैं :

गगन मै थालु रवि चंदु दीपक बने
तारिका मंडल जनक मोती ॥
धूपु मलआनलो पवणु चवरो करे
सगल बनराइ फूलंत जोती ॥ (पन्ना ६६३)

इसी प्रकार सच्चे मुसलमान के लिए मेहर ही 'मस्जिद' है, सिदक ही 'मुस्लला' है, शील ही 'रोजा' है, अच्छा कर्म ही 'काबा' है सत्य 'पीर' है और भला करना ही 'कर्म' है :

मिहर मसीति सिदकु मुसला हकु हलालु कुराणु ॥
सरम सुंनति सीलु रोजा होहु मुसलमाणु ॥
(पन्ना १४०)

सूफियों की वेश-भूषा की सार्थकता इसी में है कि मन को पारब्रह्म के चरणों में अनुरक्त कर देना ही उनके लिए 'लाल पोशाक' है। सत्य और दान 'सफेद पोशाक' हैं। हृदय की कालिमा को दूर करना 'नीली पोशाक है। ध्यान बड़ा जामा है संतोष ही कमरबंद और नाम, धन व यौवन है :

रता पैनणु मनु रता सुपेदी सतु दानु ॥
नीली सिआही कदा करणी पहिरणु पैर धिआनु ॥
कमरबंदु संतोख का धनु जोबनु तेरा नामु ॥२॥
(पन्ना १६)

सच्चे योगी को भी संतोष की 'मुंद्रा', शरम-पत की 'झोली', ध्यान की 'विभूति' पवित्र शरीर की 'खिंथा' और योग-युक्ति का 'डंडा' धारण करना चाहिए। मन को जीतने से ही जग को जीता जा सकता है :

जोगु न खिंथा जोगु न डंडै जोगु न भसम चड़ाईऐ ॥
जोगु न मुंदी मूंडि मुडाइऐ जोगु न सिंङी वाईऐ ॥
अंजन माहि निरंजनि रहीऐ जोग जुगति इव पाईऐ ॥
गली जोगु न होई ॥ (पन्ना ७३०)
आई पंथी सगल जमाती मनि जीतै जगु जीतु।
(पन्ना ६)
एक द्रिसटि करि समसरि जाणै जोगी कहीऐ सोई ॥१॥
(पन्ना ७३०)

गुरु जी ने सूफियों और मुसलमानों के धर्म में व्याप्त विसंगतियों का भी परिष्कार करने का प्रयास किया और उन्हें समझाया कि 'सच्चा धर्म' क्या है। श्री गुरु नानक देव जी किसी भी धर्म अथवा संप्रदाय के विरोधी नहीं थे। वे तो हर व्यक्ति को उसके सही धर्म का स्वरूप बताना चाहते थे। यदि कोई हिंदू है तो वो 'अच्छा हिंदू' कैसे बन सकता है ? कोई मुसलमान है तो वो अच्छा मुसलमान कैसे बन सकता है ? सूफी 'अच्छा सूफी' कैसे हो सकता है और योगी 'अच्छा योगी कैसे बन सकता है ?

श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने भी मानव-

अहितकारी धार्मिक मिथ्याचरण को फोकट कर्म, कुकर्म, डिम्भ, स्वांग आदि की संज्ञा दी है, जिनमें कोई सार नहीं है और वे मनुष्य का कोई हित नहीं करते। इस प्रकार के सभी मिथ्याचारों की उन्होंने कटु आलोचना की है और ऐसे लोगों को वे कुंजर, पूतना पक्षी, सूअर, हाथी, गदे, बिज्जू, बकरे, मृग, जोंक, वृक्ष, मोर, भूत, वानर, हिजड़ों आदि के समान कहकर फिटकारते हैं। जो मिथ्याचरण और पाखंडों से लोगों को ठगते हैं, उनका शोषण करते हैं। *(अकाल उसतत)*

श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने इस तथ्य को भी स्पष्ट किया है कि अलग-अलग लोग अलग-अलग ढंग से पूजा और उपासना कर सकते हैं। इससे कोई अंतर नहीं पड़ता क्योंकि सभी परमात्मा के रूप हैं, उनमें कोई भेद नहीं है :

कहूं हुइ कै हिंदूआ गाइत्री को गुपत जपिओ
कहूं हुइ कै तुरका पुकारे बांग देत हो ॥
कहूं कोक काब हुइ कै पुरान को पड़त मत
कतहूं कुरान को निदान जान लेत हो ॥
कहूं बेद रीत कहूं ता सिउ बिप्रीत ॥
कहूं त्रिगुन अतीत कहूं सुरगुन समेत हो ॥१२॥
सरब काल सरब ठउर एक से लगत हो ॥
(अकाल उसतत, १२:२०)

'**सेक्युलरिटी**' का इससे बेहतर स्वच्छ व स्वस्थ रूप और क्या हो सकता है ? हमारे आज के '**दिखावटी सेक्युलरिस्ट**' इससे बहुत कुछ सीख सकते हैं।

वस्तुत : गुरु जी विभिन्न धर्माचार्यों, पंडितों, मुल्लाओं, सूफियों, योगियों आदि के साथ वाद-विवाद करके उनकी धर्मान्धता, कट्टरता, संकुचितता, मिथ्यात्व, पाखंडों और अडंबरों का विरोध करके उन्हें सही, सात्विक, सहज, मानव-मंगलकारी धर्माचरण की प्रेरणा देते हैं।

श्री गुरु नानक देव जी ने धर्म का मानवीय मनोवृत्तियों और आचरण से संबंध स्थापित किया और धर्म को जीवन के व्यापक परिप्रेक्ष्य में प्रस्तुत किया। मानवीय मनोवृत्तियों का परिष्कार उनका मुख्य लक्ष्य था। अपनी मानसिक कुवृत्तियों के कारण ही मनुष्य अधर्मी, पापी, क्रूर, अत्याचारी और अन्यायी बनता है। इन कुवृत्तियों की निंदा करते हुए श्री गुरु नानक देव जी कहते हैं :

लबु कुता कूड़ु चूहड़ा ठगि खाधा मुरदारु ॥
पर निंदा पर मलु मुख सुधी अगनि क्रोधु चंडालु ॥
(पन्ना १५)

श्री गुरु नानक देव जी मनुष्य के भीतर की आत्मा को जगाकर उसके निजी सत्य का उद्घाटन करना चाहते थे; उसे अपने पथ का सही साक्षात्कार करवाकर धर्म के आदर्श मार्ग पर चलाना चाहते थे। अनासक्ति, संतोष, सत्य, करुणा, दया, परोपकार, सेवा, त्याग और सदाचार उनके लिए धर्म के अभिन्न अंग थे।

जहां दया, धर्म, प्रभु-नाम-सिमरन, हरि-गुण-गान, संत-सेवा, परोपकार आदि को उन्होंने मानवीय गुण माना है और उन्हें धारण करने पर बल दिया है, वहीं काम, क्रोध, मोह लोभ, तृष्णा, अहंकार, परपंच, द्वेष, वैर, चुगलखोरी, विषय-विकार, असत्य, दुर्मति, छल, कपट, लालसा आदि को अमानवीय दुर्गुण कहा है और उन्हें त्याज्य बताया है। सद्गुणों को धारण करने वाला व्यक्ति ही संत है, मुक्त जीव है, गुरमुख है, मानव हितकारी है, सच्चा मानव है। दुर्गुणों विकारों से युक्त व्यक्ति ही दुर्जन, दुष्ट, असुर है वही मनमुख है मानव-विरोधी है।

श्री गुरु नानक देव जी की मान्यता है कि मानव का लक्ष्य मानव-सेवा, मानव-प्रेम और मानव-कल्याण होना चाहिए और यह शुद्ध वैयक्तिक आचरण तथा सामाजिक और वयावहारिक जीवन में परिष्कार से ही संभव हो सकता है।

उन्होंने यह भी स्पष्ट किया कि अच्छा श्रमिक (नौकर) अच्छा किसान या अच्छा व्यापारी कैसे बना जा सकता है ? उनके अनुसार ईश्वर में विश्वास रखकर निष्ठा से अपना काम करना चाहिए। शरीर रूप खेत में मस्तिष्क-रूपी किसान को नाम का बीज डालकर शुभ कर्मों की खेती करनी चाहिए और सत्य के घोड़े पर बैठकर हरि-कथा-श्रवण का व्यापार करना चाहिए वस्तुत : श्री गुरु नानक देव जी मानव धर्म के पोषक थे।

गुरु साहिबान ने सामाजिक स्तर पर भी मानवतावादी मूल्यों की स्थपना की। उस युग में वर्ण और वर्ग के आधार पर मानवीय असमानता और विषमता व्याप्त थी, जिससे मनुष्य और मनुष्य के बीच का अंतर बढ़ गया था। रूढ़ियों, अंधविश्वासों, टोने-टोटकों, शकुन-अपशकुन के विचार आदि से भी समाज जड़हीन और गतिहीन हो गया था। गुरु साहिबान ने इन मानव-विरोधी सामाजिक प्रवृत्तियों का भी विरोध किया। वर्ण और वर्ग पर आधारित मानवीय भेदभाव व असमानता को समाप्त करके मैत्री, सद्भाव, सहयोग, स्वतंत्रता आदि उदार एवं उदात्त मानवीय भावनाओं पर आधारित मानवीय समानता और एकता की उद्घोषणा की तथा शताब्दियों से शोषित-उत्पीड़ित दलित व उपेक्षित वर्ग में नवीन चेतना जागृत की। श्री गुरु नानक देव जी सभी वर्गों की समानता एकता व सामाजिक न्याय के समर्थक थे। सामाजिक असमानता व शोषण का विरोध करते हुए उन्होंने घोषणा की थी कि जो नीचों से भी अधिक नीच है मैं तो उनके साथ हूं। बड़े वर्गों के लोगों से उनका क्या वास्ता ?

नीचा अंदरि नीच जाति नीची हू अति नीचु ॥
नानकु तिन कै संगि साथि वडिआ सिउ किआ रीस ॥ (पन्ना १५)

उन्होंने सामाजिक न्याय के आधार पर वर्णों की कृत्रिम दीवारों को तोड़ने के लिए कड़े प्रहार किए। जाति, धर्म, वर्ण, वर्ग पर आधारित छोटे-बड़े, राजा-रंक, कीरी-कुंजर, ब्राह्मण-शूद्र, हिंदू-मुसलमान के भेदभाव को दूर करके मानवीय समानता पर बल दिया और सामाजिक विसंगतियों व विकृतियों के विरुद्ध अनवरत संघर्ष करते हुए मानव-कल्याण का प्रयास किया; उदात्त मानवीय मूल्यों की स्थापना की और मानवतावाद का प्रवर्तन किया।

श्री गुरु नानक देव जी का विश्वास था कि आर्थिक विषमता के होते हुए भी सामाजिक समानता संभव नहीं है, इसलिए उन्होंने आर्थिक शोषण के विरुद्ध भी आवाज़ उठाई और दिखाया कि धनी वर्ग की रोटियों में उनके द्वारा उत्पीड़ित गरीबों का रक्त है, दीनों की श्रम अर्जित रोटियों में खून-पसीने की कमाई रूप दूध होता है। इसी संदर्भ में वे कहते हैं कि यदि एक वस्त्र को खून का छोटा-सा धब्बा भी लग जाता है तो वह अपवित्र हो जाता है। उस मनुष्य की क्या गति होगी जो हमेशा दूसरों का खून चूसते हैं ?

जे रतु लगै कपड़ै जामा होइ पलीतु ॥
जो रतु पीवहि माणसा तिन किउ निरमलु चीतु ॥
(पन्ना १४०)

उन्होंने यह भी कहा कि दूसरों के हक को दबाना हिंदू के लिए गाय का मांस खाने और मुसलमान के लिए सूअर का मांस खाने के समान है :

हकु पराइआ नानका उसु सूअर उसु गाइ ॥
(पन्ना १४१)

गुरु परंपरा मैं 'वंड छकणा' 'लंगर प्रथा' और सेवा का भी बहुत महत्त्व है जो सामाजिक परिप्रेक्ष्य में मानवतावाद को ही प्रतिष्ठापित करते हैं।

गुरु साहिबान ने भूखे को अन्न, नंगे को

वस्त्र और तृषातुर को जल देने का उपदेश दिया। उन्होंने लंगर-प्रथा का भी प्रचलन किया, जिसमें सभी वर्गों-वर्णों-जातियों के लोगों के द्वारा लाए गए अन्न को एक स्थान पर, एक देग में पकाकर, मिल-जुलकर बनाकर एक पंकित में साथ-साथ बैठकर छकने की व्यवस्था है।

गुरु दरबार में ऊंच-नीच का कोई भेदभाव नहीं किया जाता। सेवा भी जातीय या वर्णगत अथवा वर्गगत अहंकार को समाप्त करने का एक अमोघ माध्यम है। दशम गुरु जी ने खालसा की संरचना भी विभिन्न जातियों वर्गों और प्रदेशों से पांच प्यारे लेकर की थी। इससे भी उनकी मानवतावादी सोच प्रकट होती है।

नि:संदेह सामाजिक समानता और सामाजिक न्याय की नींव पर आधारित मानवतावाद का इससे बेहतर उदाहरण अन्यत्र दुर्लभ है।

जातिवाद हमारे सामाजिक एवं राष्ट्रीय जीवन के लिए एक भयंकर रोग है। स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात जातिवाद को समाप्त करने के बड़े-बड़े मनसूबे बनाये गए, बड़ी-बड़ी घोषणाएं की गई। दबे-कुचले लोगों को ऊपर उठाने के लिए और सामाजिक बराबरी लाने के लिए इन्हें बहुत-सी सुविधाएं दी गई।

मानवीय समानता की अवधारणा को दृढ़ता से स्थापित करने के लिए गुरु साहिबान ने आध्यात्मिक मानववाद का आधार प्रदान किया। मानवीय एकता का प्रतिपादन करने के लिए ब्रह्म और जीव की अभिन्नता का निरूपण इस प्रकार किया गया है :

जल ते ऊठहि अनिक तरंगा ॥
कनिक भूखन कीने बहु रंगा ॥
बीजु बीजि देखिओ बहु परकारा ॥
फल पाके ते एकंकारा ॥ (पन्ना ७३६)

आत्मा और परमात्मा की एकरूपता पर प्रकाश डालते हुए श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी फरमान करते हैं :

जैसे एक आग ते कनूका कोट आग उठैं
निआरे निआरे हुइ कै फेरि आग मै मिलाहिंगे ॥
जैसे एक धूर ते अनेक धूर पूरत हैं
धूर के कनूका फेर धूर ही समाहिंगे ॥
जैसे एक नद ते तरंग कोट उपजत है
पान के तरंग सबै पान ही कहाहिंगे ॥
तैसे बिस्व रूप ते अभूत भूत प्रगट हुइ
ताही ते उपज सबै ताही मै समाहिंगे ॥८७॥
(अकाल उसतत)

उनका कहना है कि सभी मनुष्यों के एक-से कान, नाक, आंख, शरीर हैं, सभी एक से तत्वों से बने हैं, फिर भेदभाव कैसा ? सभी मानव एक हैं, एक ही बनावट है उसी का यह सारा प्रसार है :

हिंदू तुरक कोऊ राफ़ज़ी इमाम साफी
मानस की जात सबै एकै पहिचानबो ॥
करता करीम सोई राजक रहीम ओई
दूसरो न भेद कोई भूल भ्रम मानबो ॥
देहरा मसीत सोई पूजा औ निवाज ओई
मानस सबै एक पै अनेक को भ्रमाउ है ॥
देवता अदेव जच्छ गंध्रब तुरक हिंदू
निआरे निआरे देसन के भेस को प्रभउ है ॥
एकै नैन एकै कान एकै देह एकै बान
खाक बाद आतश औ आब को रलाउ है ॥
अलह अभेख सोई पुरान औ कुरान ओई
एक ही सरूप सबै एक ही बनाउ है ॥८६॥
(अकाल उसतत)

श्री गुरु नानक देव जी के मानववादी चिंतन को स्पष्ट करते हुए भाई संतोख सिंघ कहते हैं कि गुरु जी हिंदू-तुरक, ऊंच-नीच सभी को एक ही मिट्टी से निर्मित मानते थे :

इक माटी इक ते करे, एक जोति सभी मांहि ॥
इस सो बन्यो बनाऊ, तंहि भरमहु उर माहि नाहिं ॥

खालक एक खलक बनाई, भलाजु बुरा नीच उचताई ॥ (नानक प्रकाश)

मानववाद की इससे अधिक सहज और सटीक व्याख्या और क्या हो सकती है ?

वास्तव में गुरु साहिबान का मानववाद आध्यात्मिक एवं धार्मिक सीमाओं का अतिक्रमण करके सामाजिक एवं आर्थिक संदर्भों को अपने में समेटकर चलता है और सभी प्रकार के शोषण का चाहे वह धार्मिक स्तर पर हो या सामाजिक अथवा आर्थिक स्तर पर उन्होंने उसका डटकर विरोध किया और सही अर्थों में व वास्तविक रूप में मानवतावाद की स्थापना की।

सभी गुरु साहिबान मानवतावाद के पोषक थे। एक ओर तो गुरु साहिबान ने सभी धर्मों, जातियों, देशों, वर्णों के मनुष्यों में एकता और समानता का प्रतिपादन किया है, दूसरी ओर उन सभी धार्मिक एवं सामाजिक विसंगतियों, विद्रूपताओं व विकृतियों का विरोध किया है जो मानव के हित में नहीं हैं।

आज मानवता पतन के कगार पर खड़ी कराह रही है और मानवतावाद का जहाज विसंगति रूप समुद्री चट्टानों और तूफानों से टकराकर डगमगा रहा है। सत्य, स्वतंत्रता, सहिष्णुता, सह-अस्तित्व, निर्भयता, समता, पवित्रता, दया, प्रेम, करुणा, मित्रता, बंधुत्व, परोपकार, संयम, संतोष, त्याग, कृतज्ञता, निः स्पृहीयता, सदाचरण आदि मानवीय गुणों से सम्पन्न मानवतावादी संस्कृति का स्थान लोभ, तृष्णा, अहंकार, द्वेष, कटुता, दुर्जनता, दमन, अन्याय, असत्य, कामुकता, स्वार्थपरता, छल-कपट भ्रष्टाचार आदि से युक्त अमानवीय रुग्ण संस्कृति लेती जा रही है। आज अराजकता, अनुशासनहीनता, अव्यवस्था फैलती जा रही है, भ्रष्टाचार बढ़ता जा रहा है और उत्तरदायित्व का भाव क्षीण हो रहा है। नैतिक नेतृत्व के अभाव में आम जनसमूह दिशाहीन और लक्ष्यहीन है। विघटनकारी प्रवृत्तियां प्रबल होती जा रही हैं। व्यक्ति, समाज और सारा परिवेश अमानवीय होता जा रहा है।

मानवतावादी समाज की स्थापना मानवीय भावनाओं मानवीय संवेदनाओं को प्रतिष्ठित करने से ही संभव है और उसके लिए उजवल एवं ओजस्वी नैतिक शक्ति की आवश्यकता है।

भारतीय संस्कृति में यह नेतृत्व प्रदान करने की शक्ति है, जो कि अनेक संकटों के बावजूद जीवंत और प्राणवान् रही है। हमारी संस्कृति में ऐसे तत्व विद्यमान हैं जो विविध धर्मों, जातियों देशों के जन समुदायों को मानवीयता के स्तर पर मैत्र, बंधुत्व व मांगलिकता के सूत्र में बांधने की सामर्थ्य रखते हैं। पश्चिमी विद्वान भी भारतीय संस्कृति की इस गरिमा को मुक्त कंठ से स्वीकार करते हैं। प्रसिद्ध चिंतक रेल्फ वाल्डो का कथन है कि मानव इतिहास के इस अत्यंत खतरनाक मोड़ पर मानवता की मुक्ति का एक ही मार्ग है और वो है भारतीय मार्ग। (At this supreme dangerous moment of human history the only way to salvation for mankind is the Indian way.)

निश्चय ही गुरु साहिबान ने भारतीय संस्कृति की इस मानवतावादी व्यवस्था को समृद्ध करने में उसे संचरणशील बनाने में अपूर्व योगदान दिया है। भारत के बुद्धिजीवी वर्ग विशेषकर लेखकों, पत्रकारों और अध्यापकों का यह दायित्व है कि वे अपने देश की गौरवपूर्ण परंपराओं और मानवतावादी संस्कृति के प्रति सम्मान का भाव जगाएं और उसके प्रवर्तन में अपना योगदान दें जिससे हम आज की विकृत संस्कृति के आकर्षण से अपनी युवा-पीढ़ी को बचा सकें।

(साभार : पुस्तक ' सिक्ख चिंतन का आधुनिक संदर्भ')



शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के अध्यक्ष साहिबान : २३

बीबी जगीर कौर बेगोवाल

*-स. रूप सिंघ**

सफल अध्यापक, धार्मिक-राजनीतिक अगुआ, प्रबुद्ध प्रबंधक तथा वक्ता, भूतपूर्व कैबिनेट मंत्री तीन बार शिरोमणि गु. प्र. कमेटी के सर्वोच्च पद 'अध्यक्ष' की पदवी पर सुशोभित रहे बीबी जगीर कौर का जन्म १५ अक्तूबर, १९५४ ई को स. गिरधारा सिंघ व माता प्रसिंन कौर के घर गांव भटनूरा, ज़िला जलंधर में हुआ। ये तीन भाई और पांच बहनें हैं। १९७१ ई में बीबी जी ने मैट्रिक का इम्तिहान सरकारी हाई स्कूल, भुलत्थ से उत्तीर्ण किया। बी. एस. सी. (गणित) गवर्नमेंट कॉलेज, चंडीगढ़ से तथा १९७९ ई. में बी. एड. मिंटगुमरी कॉलेज, जलंधर से उत्तीर्ण करके आप सरकारी स्कूल, बेगोवाल में गणित की अध्यापिका नियुक्त हुए। १९८० ई. में इनका अनंद कारज स. चरनजीत सिंघ सुपुत्र बावा हरनाम सिंघ (मुखिया डेरा संत बाबा प्रेम सिंघ मुराले वाले तथा भूतपूर्व मंत्री पंजाब) के साथ बेगोवाल में हुआ। इनके घर दो सुपुत्रियों ने जन्म लिया। १९८२ ई में स. चरनजीत सिंघ का देहांत हो गया। बीबी जी की एक लड़की हरप्रीत कौर की मृत्यु हो गई है तथा दूसरी लड़की रजनीत कौर का अनंद कारज स. युवराज भुपिंदर सिंघ के साथ हुआ है।

१९८७ ई. में इन्होंने सरकारी नौकरी से त्याग-पत्र दे दिया तथा संत बाबा प्रेम सिंघ मुराले वाले के मुख्य स्थान बेगोवाल के मुख्य सेवादार के रूप में सेवा आरंभ करके नया कीर्तिमान स्थापित किया। यह प्रथम स्त्री थी जिन्हें किसी निरमले संप्रदाय के मुख्य स्थान का मुखिया होने का गौरव प्राप्त हुआ। धार्मिक स्थान के मुखिया के रूप में बीबी जी ने गुरुद्वारा साहिब की इमारत, लंगरहाल व स्कूल की इमारत का नव निर्माण करवाया। धार्मिक, सामाजिक तथा शैक्षणिक आदर्शों को पूरा करने के लिए बीबी जी ने अमेरिका, जर्मन, हॉलैंड, इटली, नार्वे आदि देशों में प्रचार-दौरा किया। १९८८ ई. में आई भयानक बाढ़ के समय कश्तियों में सवार होकर बाढ़ पीड़ितों के लिए लंगर-पानी, दवाइयां, कपड़े आदि नित्यप्रति की ज़रूरतों की पूर्ति कर लोक-कल्याणार्थ कार्यों में नाम कमाया। बीबी जी ने धार्मिक स्थान के मुखिया के रूप में विचरण करते हुए कथा-कीर्तन द्वारा धर्म प्रचार, विद्या-प्रसार तथा समाज-सुधार के कार्य आरंभ किए। आपने अपना राजनीतिक जीवन मान दल के सक्रिय वर्कर के रूप में शुरू किया परंतु कुछ समय के बाद ही आप शिरोमणि अकाली दल बादल की वर्किंग कमेटी के सदस्य बन गए। जनवरी, १९९६ ई. में शिरोमणि गु. प्र. कमेटी के जनरल चुनाव में आप जी भुलत्थ चुनाव-क्षेत्र से चुनाव जीतकर शिरोमणि गु. प्र. कमेटी के सदस्य बने। विशेष बात यह थी कि भुलत्थ क्षेत्र स्त्रियों के लिए आरक्षित नहीं था।

१९९७ ई में हुए पंजाब विधान सभा के चुनाव में आप भुलत्थ क्षेत्र से ही एम. एल. ए. चुने गए। अगस्त, १९९७ ई. में आपको पंजाब

**सचिव, शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी, श्री अमृतसर-१४३००१; मो. ९८१४६-३७९७९*

सरकार में पर्यटन सभ्याचार, सामाजिक सुरक्षा विभाग के कैबिनेट मंत्री होने का गौरव प्राप्त हुआ। फरवरी, २००२ में दोबारा भुलत्थ क्षेत्र से एम. एल. ए तथा ११ जुलाई २००४ ई के शिरोमणि गु. प्र. कमेटी के आम चुनाव में दोबारा भुलत्थ क्षेत्र से सदस्य शिरोमणि गु. प्र. कमेटी चुने गए।

शिरोमणि गु. प्र. कमेटी का विशेष जनरल इजलास १६ मार्च १९९९ ई को हुआ। यह दिन शिरोमणि गु. प्र, कमेटी तथा इनके जीवन-काल का ऐतिहासिक दिन साबित हुआ जब बीबी जी को शिरोमणि गु. प्र. कमेटी की प्रथम स्त्री अध्यक्ष होने का अवसर प्राप्त हुआ। शिरोमणि गु. प्र. कमेटी के रिकार्ड के अनुसार बीबी जी १६ मार्च, १९९९ ई से ३० नवंबर, २००० ई तथा २३ सितंबर, २००४ ई से २३ नवंबर २००५ ई. तक तीन बार शिरोमणि गु. प्र. कमेटी के अध्यक्ष बने। बेशक बीबी जगीर कौर अकाल पुरख के दर से बख़्शी विलक्षण खुशकिस्मत शख़्सियत है, जिनको तीन बार शिरोमणि गु. प्र. कमेटी के अध्यक्ष पद का ओहदा संभालने का सौभाग्य प्राप्त हो चुका है। श्री गुरु ग्रंथ साहिब का ४०० वर्षीय प्रथम प्रकाश पर्व मनाने के समय आप जी ने विशेष योगदान डाला तथा विश्व सिक्ख यूनीवर्सिटी स्थापित करने का संकलप लिया। बीबी जी ने पहली बार बारसीलोना में विश्व धर्म सम्मेलन के समय सिक्खों का प्रतिनिधित्व करके नया कीर्तिमान स्थापित किया।

बीबी जगीर कौर को खालसा पंथ का ३०० वर्षीय सृजना दिवस-तख़्त श्री केसगढ़ साहिब में, साहिबज़ादों तथा माता गुजरी जी का ३०० वर्षीय शहीदी पर्व-चमकौर साहिब व फ़तहिगढ़ साहिब में तथा ४० मुक्तों का ३०० वर्षीय शहीदी दिवस- श्री मुक्तसर साहिब में शताब्दियों के रूप में मनाने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। खालसा पंथ के ३०० वर्षीय सृजना दिवस पर श्री गुरु गोबिंद सिंघ त्रै-शताब्दी कॉलिज, श्री अमृतसर में आरंभ किया गया जो सफलतापूर्वक चल रहा है। फ़तहिगढ़ साहिब में पहली बार शहीदी दिवस की अरदास विश्वभर में १:०० बजे दोपहर को करने का संकल्प लिया और अमली रूप भी दिया।

२००४ ई में शिरोमणि गु प्र कमेटी के आम चुनाव के बाद पहला जनरल इजलास २३ सितंबर, २००४ ई को स. तेजा सिंघ समुंदरी हॉल में हुआ, जिसमें स. सुखदेव सिंघ भौर, सदस्य शिरोमणि गु प्र कमेटी ने अध्यक्ष पद के लिए बीबी जगीर कौर का नाम पेश किया जो सर्व-सम्मति से प्रवान कर लिया गया नये चुने गए जनरल हाऊस में धर्म प्रचार कमेटी के सदस्यों का चुनाव किया गया तथा सिक्ख इतिहास रीसर्च बोर्ड का गठन भी किया गया। चुनाव के उपरांत पहला प्रस्ताव पंथ रत्न जत्थेदार गुरचरन सिंघ टौहड़ा के अकाल चलाना कर जाने के संबंध में किया गया। इसके अलावा साहिबज़ादों के ३०० वर्षीय शहीदी पर्व को समर्पित पांच पब्लिक स्कूल खोलने तथा बड़े घल्लूघारे की यादगार निर्मित करने के प्रस्ताव भी पारित किए गए। पाकिस्तान की जेलों के संबंध में सिक्खों का मामला केंद्र सरकार तथा पाकिस्तान सरकार के पास ज़ोरदार ढंग से उठाया। विश्व प्रसिद्ध पंथक शख़्सियतों भाई हरभजन सिंघ योगी, ज्ञानी संत सिंघ मसकीन, ज्ञानी अमोलक सिंघ यू के आदि के अकाल चलाना कर जाने पर शोक प्रस्ताव पारित किए गए।

२१ मार्च, २००५ ई को श्री अकाल तख़्त साहिब पर विशेष समारोह के समय जत्थेदार गुरचरन सिंघ टौहड़ा तथा ज्ञानी संत सिंघ मसकीन को अकाल चलाना कर जाने के

उपरांत उनके परिवारों को पंथ-रत्न तथा गुरमति विद्या मारतंड की उपाधि से विभूषित किया गया। २९ मार्च, २००५ ई को बजट इजलास की अध्यक्षता बीबी जगीर कौर ने की। फ्रांस में सिक्ख दसतार के मामले को हल करवाने के लिए केंद्र सरकार के पास ज़ोरदार ढंग से मामला उठाया। गुरुद्वारा शहीद गंज साहिब (बाबा दीप सिंघ जी शहीद) श्री अमृतसर में कार पार्किंग तथा श्री दरबार साहिब में कड़ाह प्रशादि की पर्चियों का कंप्यूट्रीकरन एवं एन. आर. आई सराय का उद्घाटन भी बीबी जी ने ही किया।

४० मुकतों का ३०० वर्षीय शहीद दिवस श्री मुकतसर साहिब में बीबी जी के दिशा-निर्देशों के अनुसार मनाया गया। भाई महां सिंघ जी तथा माता भागो जी यादगारी गेटों का उद्घाटन भी इसी समय हुआ। श्री गुरु ग्रंथ साहिब की छपाई का अधिकार शिरोमणि गु. प्र. कमेटी के पास होना चाहिए, का ऐतिहासिक प्रस्ताव भी इसी समय पारित किया गया। सिक्ख शैक्षणिक संस्थाओं को अल्प-संख्यक का दर्जा भी इनके सार्थक प्रयत्नों का सदका ही प्राप्त हुआ। बीबी जगीर कौर द्वारा ही नानावती कमीशन की रिपोर्ट को विचार करने के बाद रद्द करने का प्रस्ताव पारित किया गया। हिमाचल प्रदेश में सिक्ख मिशन स्थापित करने तथा बनजारा मिशन की समस्याओं का हल करने के लिए विशेष सार्थक प्रयत्न किए गए। ७ नवंबर, २००५ ई को शहीद सिक्ख मिशनरी कॉलेज, श्री अमृतसर की नवनिर्मित इमारत का उद्घाटन करने का सौभाग्य भी बीबी जी को प्राप्त हुआ। ई. टी. सी. चैनल के साथ समझौता करके श्री हरिमंदर साहिब से कीर्तन का सीधा प्रसारण करने का ऐतिहासिक कार्य किया गया, जिससे देश-विदेश की संगत को कीर्तन हुकमनामे तथा अरदास सुनने-देखने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। इंटरनेट विभाग शुरू किया गया जिसके फलस्वरूप विश्वभर में बसते गुरबाणी-प्रेमी श्री हरिमंदर साहिब से कीर्तन श्रवण कर सकते हैं तथा रोज़ाना हुकमनामा पढ़-सुन सकते हैं। तख़्त श्री दमदमा साहिब को पांचवें तख़्त के रूप में मान्यता दिलायी गई।

नये चुने जनरल हाऊस में धर्म प्रचार कमेटी के सदस्यों का चुनाव किया गया तथा सिक्ख इतिहास रीसर्च बोर्ड का गठन भी किया गया। अफ्रीका में हुई 'पार्लियामेंट ऑफ वर्ल्ड रिलीज़न' की एकत्रता के समय सिक्खों की प्रतिनिधता प्रथम सिक्ख अगुआ के रूप में बीबी जी ने की। तीसरी बार अध्यक्ष बनने पर बीबी जी ने 'जीवन वृत्तांत : सदस्य साहिबान' (शिरोमणि गु. प्र. कमेटी) पहली बार तैयार करवाकर तसवीरों सहित प्रकाशित करवाया जो एक दस्तावेज़ी कार्य है। खालसाई खेलों की आरंभता भी इनके समय ही हुई।

शिरोमणि अकाली दल के इतिहास में प्रथम महिला वरिष्ठ उपाध्यक्ष होने का गौरव भी बीबी जगीर कौर को प्राप्त हुआ। शिरोमणि अकाली दल के स्त्री विंग की प्रथम स्त्री कान्फ्रेंस जलंधर में सफलता से सम्पूर्ण की।

इनके द्वारा पहली बार शिरोमणि गु. प्र. कमेटी के अध्यक्ष की शक्तियों का विकेंद्रीकरण करते हुए प्रत्येक सदस्य को ५०-५० हज़ार रुपए की वार्षिक ग्रांट अपने क्षेत्र में धर्म तथा समाज की भलाई के कार्यों में खर्च करने के अधिकार दिए गए। शिरोमणि गु. प्र. कमेटी के कर्मचारियों की कार्यविधि को सुधारने के लिए मास्टर ग्रेड लागू किए। इनके अध्यक्ष काल के समय

(शेष पृष्ठ ६२ पर)

कहीं हम भी ऐसे तो नहीं ?

-श्री प्रशांत अग्रवाल*

१. हम भगवान को बहुत मानते हैं लेकिन उसे केवल किसी एक विशेष जगह पर ही पहचानते हैं।
२. भगवान के घर देर है अंधेर नहीं यह खूब जानते हैं, लेकिन थोड़े से इंतजार के बाद छटपटाकर 'सयानों' के पीछे भागते हैं।
३. हम ईमानदार लोगों को बहुत पसंद करते हैं, लेकिन तभी तक जब तक वे हमारे स्वार्थ में बाधा नहीं बनते हैं।
४. हमें बेईमानी से सख़्त नफ़रत है, लेकिन अपने वारे-न्यारे होते हों तो उसी से और सिर्फ उसी से मुहब्बत है।
५. हमें दुष्टों का साथ देना और उनके पाप-कर्मों में साझीदार होना बहुत अखरता है, लेकिन बदले में हमें भी कुछ मिले तो 'इतना तो चलता है।'
६. हमें तब बड़ा अफसोस होता है जब सिफारिश की वजह से योग्य लोगों का हक मरता है, लेकिन काम अगर अपना हो तो 'करना पड़ता है।'
७. हमें घमंडी लोग फूटी आंख नहीं सुहाते, लेकिन 'कुछ बन जाने' पर हमारे पैर भी ज़मीन पर नहीं टिक पाते।
८. हमें अपने अधिकारों के प्रति सजग रहना बाखूबी आता है, लेकिन बात कर्त्तव्यों की हो तो कोई न कोई बहाना मिल ही जाता है।
९. समय के पाबंद लोग हमें बड़े पसंद हैं, लेकिन समय-अनुशासन के लिए हमारे दरवाजे बंद हैं।
१०. हम दूसरों की गलतियों पर उन्हें लंबा लेक्चर पिला देते हैं, लेकिन अपने हर सही-गलत काम को जैसे-तैसे न्यायोचित ठहरा लेते हैं।
११. हम कानून की बहुत इज्ज़त करते हैं, लेकिन तभी तक जब तक हम उसे तोड़ने की कुव्वत नहीं रखते हैं।
१२. घूस लेते समय हम 'सामाजिकता' और 'व्यवहारिकता' की 'यह रस्म' पूरी निष्ठा से निभाते हैं, लेकिन सार्वजनिक मंच पर चर्चा के वक्त इसे ही 'व्यवस्था का कैंसर' बताते हुए बिल्कुल नहीं शरमाते हैं।
१३. हम गरीबों का दुख-दर्द खूब समझते हैं, लेकिन अगर आगे निकलना पड़े तो उन्हीं पर पैर रखकर आगे निकलते हैं।
१४. हमें समाज-सेवा करना बहुत अच्छा लगता है, लेकिन 'कैमरा' सामने हो तभी कुछ उत्साह जगता है।
१५. हम श्रम का बहुत सम्मान करते हैं, लेकिन मज़दूर की इज्ज़त को दो कौड़ी का नहीं समझते हैं।
१६. अपनी तारीफ अपने ही मुंह से करने में हम लज्जाते हैं, इसलिए ठकुरसुहाती कहने वाले चाटुकारों से अपनी महफिलें सजाते हैं।
१७. किसी की शानोशौकत भरी महफिलों में हम तालियां बजाते हैं, लेकिन पीठ पीछे उन्हीं की सौ-सौ कमियां गिनाते हैं।
१८. हमें प्राकृतिक दृश्य जैसे जंगल, नदी, तलाब, पहाड़, हरियाली आदि बहुत अच्छे लगते हैं, लेकिन अपने लालच के लिए उनके अंधाधुंध दोहन में हम बिल्कुल नहीं हिचकते हैं।
१९. हम संतोष को परमधन मानते हैं, लेकिन फिर भी मृगमरीचिका के पीछे दौड़ते हुए ही सारी उम्र गुज़ारते हैं।
२०. हमें अपनी संस्कृति, अपनी भाषा, अपने

*४०, बजरिया मोतीलाल, बरेली-२४३००३ (उ. प्र.) मो : ०९४११६०७६७२

महान अतीत से बेहद प्यार है, लेकिन आजकल हमारा इनसे थोड़ी दूर का ही व्यवहार है, क्योंकि जमाने के साथ चलने की दरकार है।

२१. हमें अपने वतन से बेहद मुहब्बत है, लेकिन 'पैकेज' अच्छा हो तो विदेश में बसने में नहीं कोई दिक्कत है।

२२. हमें अपने भारतीय होने पर नाज़ है, लेकिन विदेश के आकर्षण में जरूर कोई राज़ है।

२३. हम अपने बड़े-बुजुर्गों का बहुत सम्मान करते हैं, ये और बात है कि लोक-लाज के चलते ही ये स्वांग धरते हैं।

२४. त्योहारों पर हम एक-दूसरे के गले लग जाते हैं लेकिन हमारे दिल आपस में नहीं मिल पाते हैं।

२५. दीवाली पर हम पचासियों दीये जलाकर अंधेरा भगाते हैं, लेकिन उनकी रोशनी से अपने दिलों को रोशन नहीं कर पाते हैं।

२६. समाज-सुधार के लिए हमारे पास सुझावों का विशाल भंडार है, लेकिन खुद को सुधारने की धुन हम पर नहीं सवार है।

२७. हम खुद को बड़ा सुलझा और समझदार मानते हैं लेकिन मुखौटों के ऊपर मुखौटे और लबादों के ऊपर लबादे लादते हैं। ऐसा करते-करते हम कितने वीभत्स हो चुके हैं! सत्य जानने को क्या कभी हमने अपने अंदर झांक कर देखा है ?



बीबी जगीर कौर बेगोवाल

(पृष्ठ ६० का शेष)

मानवता को सुनामी जैसी आपदा का सामना करना पड़ा। सुनामी के समय बीबी जी ने स. रजिंदर सिंघ महिता, स. जसविंदर सिंघ एडवोकेट तथा स. रूप सिंघ पर आधारित तीन सदस्यीय कमेटी की रिपोर्ट पर अमल करते हुए खुद अंडमान-निकोबार टापुओं पर जाकर लगभग सवा करोड़ रुपए की सहायता राशि सुनामी पीड़ित सिक्ख परिवारों में बांटी।

२५ जनवरी, २००० ई को नानकशाही कैलंडर के मामले में ज्ञानी पूरन सिंघ, जत्थेदार श्री अकाल तख़्त साहिब ने गुना (मध्य प्रदेश) से हुकमनामा जारी करके बीबी जगीर कौर अध्यक्ष शिरोमणि गु. प्र. कमेटी को पंथ से बहिष्कृत कर दिया। २८ मार्च, २००० ई को कार्यकारिणी ने ज्ञानी पूरन सिंघ को सेवा-मुक्त कर दिया। जत्थेदार जोगिंदर सिंघ ने जत्थेदारी का कार्यभार संभालते हुए पहले हुकमनामे द्वारा ज्ञानी पूरन सिंघ के उस हुकमनामे को रद्द कर दिया।

सिक्खों के लीडर के रूप में विचरना कभी भी आसान नहीं रहा। शिरोमणि गु. प्र. कमेटी हर समय धार्मिक, सामाजिक शैक्षणिक तथा लोक-कल्याणार्थ कार्यों की अगुवाई करती है, किंतु नुकताचीनी का भी ज्यादा से ज्यादा सामना इसको ही करना पड़ता है।

गुरमति विचारधारा के धारक होने गुरबाणी तथा सिक्ख इतिहास की समझ रखने एवं कीर्तन करने की लगन सदका बीबी जगीर कौर के बोलचाल में गुरमति की भावना प्रकट होती है। श्री हरिमंदर साहिब को विश्व विरासत का दर्जा दिलाने वाला विवादित डोज़ियर भी रद्द इनके समय ही हुआ। इनमें फैसले लेकर दृढ़ता से अमल करने-करवाने की अथाह शक्ति तथा सामर्थ्य है। इनको अध्यक्ष कार्यकाल के समय कई तरह की समस्याओं से जूझना एवं विवादों से संघर्ष करना पड़ा परंतु इनकी दिलेरी व दृढ़ता की दाद देनी बनती है। आजकल बीबी जगीर कौर एम. एल. ए. एवं शिरोमणि गु. प्र. कमेटी की सदस्य होने के अलावा ज़िला योजना बोर्ड कपूरथला की मुखिया के रूप में कार्यशील हैं।



ख़बरनामा

श्री अनंदपुर साहिब के ३५०वें स्थापना दिवस पर विभिन्न स्थानों से नगर कीर्तन आयोजित होंगे

श्री अनंदपुर साहिब : १९ जून : शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के अध्यक्ष जत्थेदार अवतार सिंघ ने कहा कि श्री अनंदपुर साहिब के १९ जून, २०१५ को मनाए जाने वाले ३५०वें स्थापना दिवस को समर्पित देश के विभिन्न हिस्सों– – श्री अकाल तख़्त साहिब, श्री अमृतसर, तख़्त श्री दमदमा साहिब, तलवंडी साबो (बठिंडा), गुरुद्वारा पातशाही दसवीं, पाउंटा साहिब (हिमाचल प्रदेश), गुरुद्वारा पातशाही छठी कुरुक्षेत्र (हरियाणा) के अलावा जम्मू एवं दिल्ली से श्री अनंदपुर साहिब तक अलग-अलग समय पर नगर कीर्तन शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी द्वारा संगत के सहयोग से आयोजित किए जाएंगे।

जत्थेदार अवतार सिंघ ने बताया कि नवम पातशाह श्री गुरु तेग बहादर साहिब द्वारा बसाए गए नगर श्री अनंदपुर साहिब के ३५०वें स्थापना दिवस को समर्पित समारोह आरंभ किए गए हैं जो समूह संगत के सहयोग से लगातार साल भर चलेंगे। उन्होंने कहा कि १९ जून, २०१५ तक प्रत्येक परिवार कम से कम एक बार अवश्य श्री अनंदपुर साहिब के दर्शन करें। उन्होंने कहा कि इस दिवस को समर्पित पूरे पंजाब को हरा-भरा रखने के लिए शिरोमणि गु. प्र. कमेटी ३ लाख ५० हज़ार वृक्ष लगाएगी। उन्होंने कहा कि प्रत्येक सिक्ख को सिक्खी पर गर्व करते हुए अमृत छकना चाहिए। सभी लोग देहधारी गुरुओं, डेरेदारों का दामन छोड़कर श्री गुरु ग्रंथ साहिब के लड़ लगें। उन्होंने भारत सरकार से अपील की कि पटना साहिब में श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के नाम पर एक अंतराष्ट्रीय स्तर की विश्व विद्यालय स्थापित किया जाए। उन्होंने कहा कि १९९९ ई में सरकार द्वारा श्री अनंदपुर साहिब की धरती पर डिफेंस अकादमी बनाने का एलान किया गया था, वो अभी तक नहीं बनी। इस पर जल्दी अमल होना चाहिए।

इस अवसर पर जत्थेदार अवतार सिंघ ने तख़्त श्री केसगढ़ साहिब की वेबसाईट www.takhatsrikesgarhsahib.com जारी की। इस अवसर पर सिंघ साहिब ज्ञानी गुरबचन सिंघ जत्थेदार श्री अकाल तख़्त साहिब; सिंघ साहिब ज्ञानी मल्ल सिंघ जत्थेदार तख़्त श्री केसगढ़ साहिब, स. सुखदेव सिंघ भौर महासचिव शिरोमणि गु. प्र. कमेटी, स. दलमेघ सिंघ सचिव, स. सतबीर सिंघ सचिव तथा स. सुखविंदर सिंघ मैनेजर तख़्त श्री केसगढ़ साहिब उपस्थित थे।

पंथ-विरोधी शक्तियां शिरोमणि गु. प्र. कमेटी को कमज़ोर करने की ताक में : ज्ञानी गुरबचन सिंघ

श्री अनंदपुर साहिब : १९ जून : तख़्त श्री केसगढ़ साहिब, श्री अनंदपुर साहिब में पहुंचे श्री अकाल तख़्त साहिब के जत्थेदार सिंघ साहिब ज्ञानी गुरबचन सिंघ ने पत्रकारों से रूबरू होते हुए कहा कि गुरु-घरों में से महंत-प्रथा को खत्म करने तथा वहां सिक्ख संगत का प्रबंध लाने के लिए सिक्खों ने अंग्रेजों के पास अपनी जायदादें कुर्क करवाई, जुर्माने भरे, भट्ठियों में ज़िंदा जलकर एवं वृक्षों के साथ बंधकर दी गई कुर्बानियों तथा बाबा खड़क सिंघ द्वारा अंग्रेजों से चाबियों का मोर्चा जीतने से शिरोमणि गु. प्र. कमेटी की स्थापना हुई है। इसको भारत की

आज़ादी की प्राप्ति के लिए पहली विजय के रूप में भी देखा गया।

सिंघ साहिब ज्ञानी गुरबचन सिंघ ने कहा कि शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी गुरु पंथ की एकमात्र धरोहर संस्था है। देश-विदेश में बैठे सिक्ख पर जब भी कोई मुश्किल बनती है तो वो शिरोमणि गु. प्र. कमेटी से सहायता की चाह रखता है। उन्होंने कहा कि शिरोमणि गु. प्र. कमेटी सिक्खों की भावनाओं की तर्ज़मानी करती है और प्रत्येक सिक्ख इसमें आस्था रखता है मगर कुछ पंथ-विरोधी शक्तियां सिक्खों की दुश्मन जमात कांग्रेस के साथ मिलकर इसे कमज़ोर करने की ताक में हैं। उन्होंने कहा कि शिरोमणि गु. प्र. कमेटी को तोड़ने एवं कमज़ोर करने के लिए इससे पहले भी कई बार हमले हुए जिनका सिक्ख पंथ ने मुंहतोड़ जवाब दिया। समूह संसार में बसते सिक्ख भाईचारे को समय-समय पर दरपेश मुश्किलों के स्थाई हल के लिए शिरोमणि गु. प्र. कमेटी ही हमेशा आगे आई है। उन्होंने कहा कि चाहे सुनामी का कहर हो, गुजरात में आए भुकंप से मची तबाही हो या उत्तराखंड में प्राकृतिक आपदा के कारण हुए जानी-माली नुकसान का समय हो, शिरोमणि गु. प्र. कमेटी ने हर मुश्किल घड़ी में मानवता की बढ़-चढ़कर सेवा की है। इसी प्रकार विदेशी हवाई अड्डों पर सुरक्षा के नाम पर सिक्खों को दसतार उतारने के लिए विवश करना या कृपाण पहने जाने पर किए गए एतराज़ का मामला हो, शिरोमणि गु. प्र. कमेटी ने हमेशा ही सिक्खों की प्रतिनिधि जत्थेबंदी होने का सबूत देते हुए संबंधित देशों के राजदूतों, सरकारों, अंतर्राष्ट्रीय संस्थाओं के साथ समय-समय पर मुलाकात करके इन मामलों को हल करवाने की भरपूर कोशिश की है।

सिंघ साहिब ज्ञानी गुरबचन सिंघ ने कहा कि हरियाणा राज्य में कुछ पंथ-विरोधी लोग झूठी शोहरत की खातिर कांग्रेसी मुख्यमंत्री श्री भुपिंदर सिंघ हुड्डा के साथ मिलकर शिरोमणि गु. प्र. कमेटी की शक्ति को बांटना एवं कमज़ोर करना चाहते हैं। यह बर्दाश्त करने योग्य नहीं है। उन्होंने पंथ-विरोधी शक्तियों को ताड़ना की कि वे वोटों की खातिर बांटो और राज्य करो की नीति को बंद करें। उन्होंने देश-विदेश तथा विशेषत: हरियाणा राज्य के सिक्खों को ज़ोर देकर कहा कि वे कांग्रेस की सिक्ख विरोधी चाल की पहचान कर अपनी एकता को कमज़ोर न होने दें।

इराक में फंसे लोगों के परिवारों को आर्थिक सहायता दी

श्री अमृतसर : १ जुलाई : शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के अध्यक्ष जत्थेदार अवतार सिंघ ने इराक में फंसे लोगों के परिवारों को आर्थिक सहायता प्रदान करते हुए प्रति परिवार ५० हज़ार रुपए के चेक भेंट किए। इस अवसर पर दिल्ली सिक्ख गुरुद्वारा मैनेजमेंट कमेटी की तरफ से स. भगवंत सिंघ सिआलका सदस्य शिरोमणि गु. प्र. कमेटी तथा प्रो. सरचांद सिंघ ने पीड़ित परिवारों को प्रति परिवार १० हज़ार रुपए नकद प्रदान किए।

प्रेस-वार्ता में जत्थेदार अवतार सिंघ ने कहा कि शिरोमणि गु. प्र. कमेटी इराक में फंसे लोगों के परिवारों के साथ हर मुश्किल में खड़ी है। इराक में फंसे लोगों में वो चाहे किसी भी धर्म या राज्य से संबंधित हो, उनकी बिना किसी भेदभाव के मदद की जाएगी। 

प्रिंटर व पब्लिशर स. दलमेघ सिंघ ने गोल्डन आफसेट प्रेस, गुरुद्वारा रामसर साहिब, श्री अमृतसर से छपवा कर मालिक शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के लिए कार्यालय, शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी, श्री अमृतसर से प्रकाशित किया। प्रकाशित करने की तिथि : १-८-२०१४